ॐ नमः शिवाय

शिवार्चन पद्धति

[गणेशपूजन, कलशपूजन, शिवपूजन, पार्थिवेश्वरपूजन,
शिवसहस्रनामावली, सस्वर-रुद्राष्टाध्यायी, रुद्रयागहवनविधि
एवं
शिवस्तोत्रों का अनुपम समावेश]

लेखक/संपादक

आचार्य धीरेन्द्र

(भागवत् प्रवक्ता, ज्योतिष, वास्तु,
भूमिशुद्धि एवं कर्मकाण्ड विशेषज्ञ)

प्रकाशक

कान्हादर्शन धार्मिक प्रकाशन

117, गोविन्द खण्ड, विश्वकर्मा नगर, नियर विवेक विहार फैस-2,
शाहदरा दिल्ली-110095

email: kanhadarshan@gmail.com web : www.acharyadhirendra.com

प्रधान कार्यालयः

कान्हादर्शन धार्मिक प्रकाशन

117-गोविन्द खण्ड, विश्वकर्मा नगर,
झिलमिल कालोनी, शाहदरा दिल्ली-110095
संपर्क सूत्रः 9210067801, 9871662417

प्रबन्धक वर्गः

आचार्य सुरेन्द्र जी (फैस रीडर), मो. 9213629513
पं. शीवेन्द्र मणि पाण्डेय, मो. 9971770118
पं. अजेश भार्गव, मो. 9818747603

प्रथम संस्करण-संवत् : २०६८, ईसवी : 2011

©

लेखक एवं प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना इस ग्रंथ के किसी भी भाग को छापना, इलेक्ट्रॉनिक मशीन, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।

यह एक संशोधित एवं शास्त्रोक्त पद्धति से लिखा गया संस्करण है, इस ग्रन्थ से छेड़खानी करना धर्म को आघात पहुँचाने के बराबर है।

कुल प्रतियाँः 5100

मूल्य : रुपये 40.00

पुस्तक प्राप्ति स्थानः

भारत में सभी धार्मिक पुस्तक विक्रेताओं के पास उपलब्ध।

लेज़र टाइपसैटिंगः

भार्गव लेज़र प्रिन्टर्स, दिल्ली।

दो शब्द

माँ श्रीत्रिपुरसुन्दरी की असीम अनुकम्पा से यह छठा प्रकाशन होने जा रहा है–सनातन धर्म का प्राचीन धर्मग्रन्थ वेद है। वेदों में कर्मकाण्ड, उपासनाकाण्ड और ज्ञानकाण्ड इन तीनों विषयों का मुख्यत: वर्णन प्राप्त होता है। किन्तु इन तीनों मे प्रधान स्थान कर्मकाण्ड को ही प्राप्त है। इसका कारण यह है कि वेदो में ही यज्ञ-यागादिक कर्मकाण्ड की क्रियाकलापों की पद्धति प्राप्त होती है एवं मन्त्र भी प्राप्त होते हैं। क्योंकि बिना वेदमन्त्रों के प्रयोग के यज्ञ विधान या पूजन विधान अधूरा है; इसलिये वेद के बिना मन्त्र नहीं और मन्त्र के बिना यज्ञ नहीं किये जा सकते। 'शुक्लयजुर्वेद माध्यन्दिनीयशाखा' में विशेषरूप से "शिवार्चन" का विशेष महत्त्व मिलता है,

'वेद: शिव: शिवो वेद:' वेद शिव हैं अर्थात् शिव वेदस्वरूप हैं। यह भी कहा है कि वेद नारायण का साक्षात् स्वरूप है–'वेदो नारायण: साक्षात् स्वयम्भूरिति शुश्रुम'। इसके साथ ही वेद को परमात्म प्रभु का नि:श्वास कहा गया है। इसीलिये भारतीय संस्कृति में वेद की अद्वितीय महिमा है। जैसे ईश्वर अनादि-अपौरुषेय हैं, उसी प्रकार वेद भी सनातन जगत् में अनादि-अपौरुषेय माने जाते हैं। इसीलिये वेद- मन्त्रों के द्वारा शिवजी का पूजन, अभिषेक, यज्ञ और जप आदि किया जाता है।

शिव और रुद्र ब्रह्म के पर्यायवाची शब्द हैं। शिव को रुद्र इसलिये कहा जाता है–कि ये 'रुत्' अर्थात् दु:ख को विनष्ट कर देते हैं–'रुतम्–दु:खम्, द्रावयति– नाशयतीति रुद्र:।'

अत: साम्ब-सदाशिव की उपासना के निमित्त वेदोक्त पद्धति से शिवार्चन पद्धति तैयार की गयी है। मानव-कल्याणार्थ शुक्लयजुर्वेद से सस्वर रुद्राष्टाध्यायी का भी संग्रह किया गया है।

"शिवार्चन पद्धति" में गणेशपूजन, कलशपूजन, शिवपूजन पार्थिवेश्वर-पूजन, शिव-सहस्रनामावली, रुद्राष्टाध्यायी एवं रुद्रयाग-हवनपद्धति, तथा शिव स्तोत्रों के साथ भगवान् शिव संबन्धी अन्य विषयों का भी समावेश किया गया है।

मैं सर्व प्रथम भगवती को कोटिश:प्रणाम करने के पश्चात् सभी विद्वानों का इस प्रकाशन के माध्यम से अभिनन्दन करता हूँ। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह "शिवार्चन पद्धति" विद्वानों के लिये कर्मकाण्डिक विषय में विशेषरूप से शिवपूजन में सहायक सिद्ध होगी।

"शिवार्चनपद्धति" की विशेषता है–क्रमवद्ध पूजन एवं पदच्छेद कर सस्वर-रुद्राष्टाध्यायी एवं पूजन के मन्त्र पढ़ने में अति सरल प्रतीत होते हैं जिन्हें सरलता से पढ़ा जा सकता है।

पूजन के विषय में विचार करें–भगवान की षोडशोपचार से या फिर राजोपचार से पूजन का क्रम पूर्ण किया जाता है। इन सबसे क्या प्राप्त होता है?

- आवाहन करने से = यज्ञ का फल प्राप्त होता है।
- आसन चढ़ाने से = इन्द्रपद प्राप्त होता है।
- चरण प्रक्षालन से = पातक नष्ट होते हैं।
- आचमन कराने से = अगाध शान्ति प्राप्त होती है।
- स्नान कराने से = रोग शान्त होते हैं।
- वस्त्र चढ़ाने से = आयु बढ़ती है।
- जनेऊ चढ़ाने से = ब्रह्मतेज की प्राप्ति होती है।
- आभूषण चढ़ाने से = वाहन की प्राप्ति होती है।
- गन्ध चढ़ाने से = काम की प्राप्ति होती है।
- अक्षत चढ़ाने से = सुरक्षा प्राप्त होती है।
- पुष्प चढ़ाने से = स्वर्ग राज्य प्राप्त होता है।
- धूप चढ़ाने से = पापों का नाश होता है।
- दीप दिखाने से = मृत्यु का नाश होता है।
- नैवेद्य चढ़ाने से = व्यक्ति माननीय हो जाता है।
- फल चढ़ाने से = पुत्र की प्राप्ति होती है।
- ताम्बूल चढ़ाने से = कीर्ति एवं स्वर्ग की प्राप्ति होती है।
- आरती करने से = व्यक्ति शुद्धात्मा हो जाता है।
- प्रदक्षिणा करने से = एक-एक पग में पापों का नाश होताहै।
- प्रणाम करने से = अनगिनत वर्षों तक स्वर्ग में वास प्राप्त होता है।
- स्तोत्र पाठ से = दिव्य देह एवं वाक् सिद्धि की प्राप्ति होती है।
- पुराणों के पाठ से = सभी पापों का क्षय होता है।

अत: भगवत् अर्चना श्रेयस्कर है हमारे जीवन को लाभान्वित करने वाली है।

इस पुस्तक के निर्माण में, मैंने जिन-जिन ग्रन्थों से सहायता ली है, तदर्थ मैं उन सभी विद्वान् एवं ग्रन्थ सम्पादकों का सदैव ऋणी रहूँगा। इस **"शिवार्चन पद्धति"** (शिवपूजा एवं सविधि रुद्राभिषेक पद्धति) में जो त्रुटियाँ, अभाव, विच्युतियाँ एवं विसङ्गतियाँ दृष्टिगोचर हों वे मेरे अबोधता का परिणाम है। अत: क्षमा प्रार्थी हूँ। यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो लेखक या प्रकाशक को सूचित करें।

– आचार्य धीरेन्द्र

रुद्रपाठ की महिमा

भगवान् सदाशिव की उपासना में रुद्राष्टाध्यायी का विशेष महत्त्व है। शिवमहापुराण में सनकादिक ऋषियों के प्रश्न करने पर स्वयं शिवजी ने रुद्राष्टाध्यायी के मन्त्रों द्वारा अभिषेक का माहात्म्य बतलाते हुए कहा है कि मन, कर्म तथा वचन से एवं परम पवित्र भावना से भगवान् आसुतोष की प्रसन्नता के लिये रुद्राभिषेक करना चाहिये। वायु पुराण में आया है कि रुद्राष्टाध्यायी के नमक (पञ्चम अध्याय) और चमक (अष्टम अध्याय) तथा पुरुषसूक्त का प्रतिदिन तीन बार पाठ करने से मनुष्य ब्रह्मलोक में सम्मान प्राप्त करता है। जो नमक, चमक, होतृमन्त्रों और पुरुषसूक्त का सर्वदा पाठ करता है, वह उसी प्रकार महादेवजी में प्रवेश करता है, जिस प्रकार घर का स्वामी अपने घर में प्रवेश करता है। जो मनुष्य अपने शरीर में भस्म लगाकर, भस्म में शयनकर और जितेन्द्रिय होकर निरन्तर रुद्राष्टाध्यायी का पाठ करता है, वह मनुष्य परा मुक्ति को प्राप्त करता है। जो रोगी और पापी जितेन्द्रिय होकर रुद्राध्याय का पाठ करता है, वह रोग और पाप से मुक्त होकर अद्वितीय सुख प्राप्त करता है।

यथा–नमकं चमकं चैव पौरुषं सूक्तमेव च। नित्यं त्रयं प्रयुञ्जानो ब्रह्मलोके महीयते।।

शतरुद्रियपाठ

शतरुद्रिय रुद्राष्टाध्यायी का मुख्यभाग है। शतरुद्रिय का माहात्म्य रुद्राष्टाध्यायी का ही माहात्म्य है। मुख्यरूप से रुद्राष्टाध्यायी का पञ्चम अध्याय शतरुद्रिय कहलाता है। इसमें भगवान् रुद्र के शताधिक नामों द्वारा उन्हे नमस्कार किया गया है। 'शतं रुद्रा देवता अस्येति शतरुद्रीयमुच्यते'। शतरुद्रिय का पाठ अथवा जप समस्त वेदों के परायण के तुल्य माना गया है। शतरुद्रिय को रुद्राध्याय कहा गया है। भगवान् वेदव्यासजी ने अर्जुन को इसकी महिमा बताते हुए कहा है–

धन्यं यशस्यमायुष्यं पुण्यं वेदैश्च सम्मितम्।
सर्वार्थसाधनं पुण्यं सर्वकिल्बिषनाशनम्। सर्वपापप्रशमनं सर्वदुःखभयापहम्।।

पार्थ! वेद सम्मित यह शतरुद्रिय परम पवित्र तथा धन, यश और आयु की वृद्धि करने

वाला है इसके पाठ से सम्पूर्ण मनोरथों की सिद्धि होती है। यह पवित्र, सम्पूर्ण किल्बिसों का नाशक तथा सभी प्रकार के दु:ख और भय को दूर करने वाला है।

पठन् वै शतरुद्रीयं शृण्वंश्च सततोत्थित:।।
भक्तो विश्वेश्वरं देवं मानुषेषु च य: सदा। वरान् कामान् स लभते प्रसन्ने त्र्यम्बके नर:।।

जो निरन्तर उद्यत रहकर शतरुद्रिय को पढ़ता है और सुनता है तथा विश्वेश्वर का भक्तिभाव से भजन करता है, वह उन विश्वेश्वर के प्रसन्न होने पर समस्त कामनाओं को प्राप्त कर लेता है। महर्षि याज्ञवल्क्यजी ने शतरुद्रिय को अमृतत्व का साधन कहा है। पितामह ब्रह्माजी ने महर्षि आश्वलायन से शतरुद्रिय की महिमा के विषय में बताते हुए कहा है कि–जो शतरुद्रिय का पाठ करता है, वह अग्निपूत होता है, वायुपूत होता है, आत्मपूत होता है, सुरापान के दोष से मुक्त हो जाता है, ब्रह्महत्या के दोष से मुक्त हो जाता है, स्वर्ण की चोरी के पाप से छूट जाता है, शुभाशुभ कर्मों से उद्धार पाता है, भगवान् शिव के आश्रित हो जाता है तथा वह भक्त अविमुक्तस्वरूप हो जाता है। अतएव जो सांसारिक कार्यों से मुक्त हो गये हैं उन परंहंसों को सदा सर्वदा अथवा कम से कम एक बार इसका पाठ अवश्य करना चाहिये। इससे उस ज्ञान की प्राप्ति होती है, जो भवसागर से पार लगा देता है। इसलिये इसको इस प्रकार जानकर मनुष्य कैवल्यरूप मुक्ति को प्राप्त करता है।

शतरुद्रियपाठ विधि

शतरुद्रिय नाम से एक सौ मन्त्रों के पाठ की परम्परा भी कहीं-कहीं है–

यथा–षट्षष्टिर्नीलसूक्तं च पुन: षोडशमेव च। एष ते द्वे नमस्ते न तं विद्द्वयमेव च।। मीढुष्टमेति चत्वारि वयः सोमाष्टमेव च। वेदवादिभिराख्यातमेतद्वै शतरुद्रियम्।।

अर्थात्–रुद्राष्टाध्यायी के पाँचवें अध्याय के 'नमस्ते०' इत्यादि ६६ मन्त्र, पुन: उसी पञ्चम अध्याय के प्रारम्भिक १६ मन्त्र, छठे अध्याय के 'एषते०' और 'अवरुद्र०' ये दो मन्त्र, पञ्चम अध्याय के 'नमस्ते०' और 'याते०' ये दो मन्त्र, फिर शुक्ल यजुर्वेदसंहिता के १७वें अध्याय के ३१वें तथा ३२वें मन्त्र ('न तं विद्०' तथा 'विश्वकर्मा०') उपरान्त रुद्राष्टाध्यायी के पञ्चमअध्याय के ५१वें मन्त्र से ५४वें मन्त्र ('मीढुष्ट०' से 'असंख्याता०') तक और पुन: रुद्राष्टाध्यायी के सम्पूर्ण छठे अध्याय के आठ मन्त्रों का यथोक्त रूप से क्रम-पूर्वक पाठ करने पर सौ मन्त्र हो जाते हैं। सौ मन्त्र होने से इसे शतरुद्रिय कहा जाता है। सामान्यत: सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी द्वारा रुद्राभिषेक आदि कार्य अधिक प्रचलित है।

रुद्रपाठ के भेद

रुद्र पाठ पाँच प्रकार के बताये जाते हैं (रुद्रा: पञ्चविधा: प्रोक्ता)–१-रूपक या षडङ्ग-पाठ, २-रुद्री या एकादशिनी, ३-लघुरुद्र, ४-महारुद्र, तथा ५-अतिरुद्र।

१. रूपक या षडङ्गपाठ

सम्पूर्ण रुद्राष्टाध्यायी में १० अध्याय हैं, प्रथम आठ अध्यायों में भगवान् रुद्र की विशेष महिमा तथा उनकी कृपाशक्ति का वर्णन होने से ये आठ अध्याय रुद्राष्टाध्यायी के नाम से प्रसिद्ध हैं। ९वें अध्याय में 'ऋचं वाचं प्रपद्ये' इत्यादि २४ मन्त्र हैं। यह अध्याय शान्त्यध्याय के नाम से जाना जाता है। अन्तिम १०वें अध्याय में 'स्वस्ति न इन्द्रो०' इत्यादि बारह मन्त्र हैं, जो स्वस्तिप्रार्थनाध्याय के नाम से जाना जाता है। ये दस अध्याय होने पर भी नाम रुद्राष्टाध्यायी ही है।

इस प्रकार पूरे दस अध्यायों की एक सामान्य आवृत्ति रूपक या षडङ्गपाठ कहलाता है।

२. रुद्री या एकादशिनी

षडङ्गपाठ में नमकाध्याय (पञ्चम) तथा चमकाध्याय (अष्टम) का संयोजन कर रुद्राध्याय की-की गयी ग्यारह आवृत्ति को रुद्री या एकादशिनी कहते हैं। आठवें अध्याय के साथ पाँचवें अध्याय की जो आवृत्ति होती है, उसके लिये शास्त्र सम्मत एक निश्चित विधान है—आठवें अध्याय के क्रमशः चार-चार तथा फिर चार मन्त्रों, तीन-तीन तथा पुनः तीन मन्त्रों; तदनन्तर दो मन्त्र, फिर एक-एक मन्त्र और पुनः दो मन्त्रों के अनन्तर पूरे पाँचवें अध्याय (नमक) की एक-एक आवृत्ति होती है। अन्त में शेष दो मन्त्रों का पाठ होता है। इस प्रकार आठवें अध्याय के कुल उन्तीस मन्त्रों को रुद्रों की संख्या गयारह होने के कारण ग्यारह आवृत्ति में विभक्त किया गया है—ऐसा रुद्रकल्पद्रुम में बताया गया है। इसके बाद नवें और दसवें अध्याय का पाठ होता है। इस प्रकार की गयी एक आवृत्ति को रुद्री या एकादशिनी कहते हैं।

३. लघुरुद्र

एकादशिनी रुद्री की ग्यारह आवृत्तियों के पाठ को लघुरुद्र पाठ कहा जाता है। यह लघुरुद्र-अनुष्ठान एक दिन में ग्यारह ब्राह्मणों का वरण करके एक साथ सम्पन्न कराया जा सकता है तथा एक ब्राह्मण द्वारा अथवा स्वयं ग्यारह दिनों तक एक एकादशिनी-पाठ नित्य करने पर भी लघुरुद्र की सम्पन्नता होती है।

४. महारुद्र

लघुरुद्र की ग्यारह आवृत्ति अर्थात् एकादशिनी रुद्री की १२१ अवृत्ति (पाठ) होने पर महारुद्र अनुष्ठान होता है। यह पाठ ११ ब्राह्मणों द्वारा ग्यारह दिनों तक कराया जा सकता है

तथा एक दिन में भी ब्राह्मणों की संख्या बढ़ाकर १२१ पाठ होने पर महारुद्र अनुष्ठान सम्पन्न हो जाता है।

५. अतिरुद्र

महारुद्र की ग्यारह आवृत्ति अर्थात् एकादशिनी रुद्री की १३३१ आवृत्ति होने से अतिरुद्र-अनुष्ठान सम्पन्न होता है।

ये अनुष्ठान पाठात्मक, अभिषेकात्मक तथा हवनात्मक तीनों प्रकार से किये जा सकते हैं। शास्त्रों में इन अनुष्ठानों के महिमा का अत्यधिक वर्णन प्राप्त होता है।

भट्टभास्कराचार्यकृत रुद्रनमक के भाष्य के अन्त में रुद्र मन्त्रों के अनेक प्रयोग निर्दिष्ट हैं। सब प्रकार की सिद्धि के लिये वहाँ बताया गया है कि रुद्राध्याय के मात्र पाठ अथवा जप से ही समस्त कामनाओं की पूर्ति हो जाती है—'अस्य रुद्राध्यायस्य जप मात्रेणैव सर्वसिद्धिः।' सूत संहिता का कहना है कि रुद्रजापी महापातकरूपी पञ्जर से मुक्त होकर सम्यक्-ज्ञान प्राप्त करता है और अन्त में विशुद्ध मुक्ति प्राप्त करता है। रुद्राध्याय के समान जपने योग्य, स्वाध्याय करने योग्य वेदों और स्मृतियों आदि में अन्य कोई मन्त्र नहीं है—

रुद्रजापी विमुच्येत महापातकपञ्जरात्। सम्यग्ज्ञानं च लभते तेन मुच्येत बन्धनात्।।
अनेन सदृशं जप्यं नास्ति सत्यं श्रुतौ स्मृतौ।

भगवान् रुद्र की प्रसन्नता के लिये निष्काम भाव से रुद्रपाठ का अनन्त फल है। वायुपुराण के अनुसार वह जीव उसी देह से निश्चितरूप से रुद्रस्वरूप हो जाता है अर्थात् सायुज्य मुक्ति प्राप्त करता है—

मम भावं समुत्सृज्य यस्तु रुद्राञ्जपेत् सदा।
स तेनैव च देहेन रुद्रः सञ्जायते ध्रुवम्।।

श्रीगणेशाय नमः

अथमङ्गलाचरणम्

ॐ वक्रतुण्डमहाकाय कोटिसूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।१।।
ॐ सर्वरूप मयीदेवी सर्वं देवीमयं जगत्।
अतोऽहं विश्वरूपां तां नमामि परमेश्वरीम्।।२।।
कदम्बवनचारिणीं मुनिकदम्बकादम्बिनीं
नितम्बजितभूधरां सुरनितम्बिनीसेविताम् ।
नवाम्बुरुहलोचनामभिनवांबुदश्यामलां
त्रिलोचनकुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये।।३।।
अशेषसंसारविहारहीन-
मादित्यगं पूर्णसुखाभिरामम्।
समस्तसाक्षिं तमसः परस्ता-
न्नारायणं विष्णुमहं भजामि।।४।।
यं शैवाः समुपासते शिव इति ब्रह्मेति वेदान्तिनो
बौद्धा बुद्ध इति प्रमाणपटवः कर्तेति नैयायिकाः।
अर्हन्नित्यथ जैनशासनरताः कर्तेति मीमांसकाः
सोऽयंवोविदधातुवाञ्छितफलंत्रैलोक्यनाथो हरिः।।५।।
मृत्युञ्जयाय रुद्राय नीलकण्ठाय शम्भवे।
अमृतेशाय शर्वाय महादेवाय ते नमः।।६।।
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ।।७।।

✡✡✡

देवपूजन में विचारणीय

१. देव पूजन में पुष्प अधोमुख न चढ़ायें। पुष्प जैसे उत्पन्न होते हैं उसी प्रकार से चढ़ाये जाते हैं।
२. विल्वपत्र उल्टा करके चढ़ायें।
३. कुशा के अग्रभाग से देवताओं के ऊपर जल न छिड़कें।
४. धोती में रखा हुआ और जल में डुबोया हुआ पुष्प चढ़ाने के योग्य नहीं रह जाता।
५. भगवान् शङ्कर को कुन्द, श्रीविष्णु को धतूरा, देवी को आक और मदार, सूर्य भगवान् को तगर का पुष्प नहीं चढ़ाना चाहिये।
६. श्रीविष्णु को चावल, गणेश को तुलसी, दुर्गा को दूर्वा, और सूर्य भगवान् को विल्वपत्र नहीं चढ़ाना चाहिए।
७. देवताओं के लिये प्रज्ज्वलित किया गया दीपक कभी भी नहीं बुझाना चाहिये।
८. हाथ में धारण किये गये पुष्प, ताम्रपात्र में रखा गया चन्दन और चर्मपात्र में रखा गया गङ्गाजल अशुद्ध हो जाता है।
९. दीपक को दीपक से जलाने वाला मनुष्य दरिद्री हो जाता है।
१०. एक हाथ से प्रणाम करने पर मनुष्य अपना पुण्य नष्ट कर लेता है।
११. माङ्गलिक कार्यों में दूसरे की अँगूठी धारण नहीं करनी चाहिये।
१२. सभी पूजाक्रम में पत्नी को दाहिने भाग में बैठने का विधान प्राप्त होता है। अभिषेक और ब्राह्मणों के पैर धुलने, सिन्दूर दान के समय, एवं शयन करते समय पत्नी को वाम-भाग में रहने का विधान है।
१३. स्त्री आचमन के स्थान पर जल से नेत्रों को पोछ ले।
१४. स्त्रियों के बायें हाथ में ही रक्षासूत्र बाँधने का विधान है।
१५. वैवाहिक एवं घर के भीतर नित्य होम में पूर्णाहुति का विधान नहीं है।
१६. शनिवार, मङ्गलवार, बुधवार एवं शुक्रवार को लक्ष्मीपूजन प्रारम्भ न करें।
१७. जो मनुष्यआलस्य वश देवताओं के पूजन किये बिना ही भोजन करता है, वह नरक को प्राप्त कर सूकर की योनि को प्राप्त करता है।

✡✡✡

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

पूजन क्रम प्रारम्भ

मङ्गलं भगवान् शम्भुः मङ्गलं वृषभध्वजः।
मङ्गलं पार्वतीनाथ मङ्गलाय तनो शिवः।।

सर्वप्रथम पूजनकर्ता स्नान आदि नित्यक्रिया से निवृत्त होकर, नवीन या घर में धोये हुए शुद्ध वस्त्र एवं उपवस्त्र धारण कर, सपत्नीक शुद्ध आसन पर पूर्व की ओर मुख करके बैठ जाएँ एवं पवित्र हो, पवित्रीकरण, आचमन आदि करें। यजमान-पत्नी को यजमान के दक्षिण भाग में बैठने का विधान है॥ यथा–

सर्वेषु शुभकार्येषु पत्नी दक्षिणतः शुभाः।
अभिषेके विप्रपादक्षालने चैव वामतः।।
वामे पत्नी त्रिषु स्थाने पितृणां पाद शौचने।
रथारोहणकाले च ऋतुकाले सदा भवेत्।।

– अथ पवित्रीकरणम् –

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थाङ्गतोऽपिवा।
यः स्मरेत्पुण्डरी काक्षं सबाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।
ॐपुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐपुण्डरीकाक्षः पुनातु, ॐपुण्डरीकाक्षः पुनातु,
(तज्जले दक्षिण हस्तेन आत्मानं पूजासामग्रीं च सम्प्रोक्ष्य)

– त्रिराचमनम् –

ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः। ॐ हृषीकेशाय नमः, इति करौ प्रक्षाल्य। तीन बार आचमन करें एवं हाथ धो लें।

– आसनशुद्धिः –

हाथ में जल लेकर निम्न लिखित विनियोग पढें और जल किसी एक पात्र में या पृथिवी पर छोड़ दें।

विनियोगः–**ॐ पृथिवीतिमन्त्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन शोधने विनियोगः।**

ॐ पृथ्वी त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

आसन में जल छिड़कें।

– पवित्रीधारणम् –

निम्नलिखित मन्त्र से दाहिने हाथकी अनामिका के मूलभाग में पवित्रीधारण करें।

ॐपवित्रेस्थो व्वैष्णव्यौ सवितुर्व्वः प्रसवऽउत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभिः। तस्यतेपवित्रपतेपवित्रपूतस्ययत्तकामःपुने तच्छकेयम्।

यथा वज्रं सुरेन्द्रस्य यथा चक्रं हरेस्तथा।
त्रिशूलं च त्रिनेत्रस्य तथा मम पवित्रकम्।।

(इस मन्त्र से आनामिका के मूल में पवित्री धारण करें)

– शिखाबन्धनम् –

हाथ में जल लेकर निम्न लिखित विनियोग पढें और जल किसी एक पात्र में या पृथिवी पर छोड़ दें।

विनियोगः– ॐ मानस्तोकिति मन्त्रस्य कुत्सऋषिः जगती छन्दः एकोरुद्रोदेवता शिखाबन्धने विनियोगः। (निम्न लिखित मन्त्र से शिखा बाँधें)

ॐचित् रूपिणी महामाये दिव्यतेजः समन्विते।
तिष्ठ देवि शिखा बन्धे तेजो वृद्धिं कुरुश्च मे।।
ब्रह्मवाक्य सहस्रेण शिववाक्य शतेन च।
विष्णोर्नाम सहस्रेण शिखाग्रन्थिं करोम्यहम्।।

– प्राणायामः –

पूरक, कुम्भक एवं रेचक निम्नलिखित मन्त्र से तीन बार प्राणायाम करें:–

ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐमहः ॐजनः ॐतपः ॐसत्यम् तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात्। आपो ज्योति रसोमृतं ब्रह्म भूर्भुवः स्वरोम्।। (हस्तौ प्रक्षाल्य)

– आधारशक्ति पृथिवीपूजनम् –

यजमान के सामने सिन्दूर से त्रिकोण रेखा खींच कर गन्ध, अक्षत व पुष्प लेकर माता पृथ्वी की पूजा करें।

ॐस्योनापृथिवि नोभवा नृक्षरानिवेशनी।। यच्छानः शर्म्मसप्रथाः।।

ॐभूर्भुवः स्वः आधारशक्त्यै नमः विष्णुपत्न्यै नमः वसुन्धरायै नमः सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। **(भूमि को स्पर्श कर प्रणाम करें)**

प्रर्थनाम्–**ॐ पृथ्वी त्वया धृतालोका देवि त्वं विष्णुना धृता।**
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।
ॐभूर्भुवः स्वः पृथिव्यै नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि प्रणमामि।

– यजमानभाले-स्वस्ति तिलकम् –

निम्नलिखित मन्त्र से अपने संप्रदायानुसार चन्दन लगायें।

– पुरुषस्य तिलककरण मन्त्रः –

ॐभद्रमस्तु शिवञ्चास्तु महालक्ष्मीः प्रसीदतु।
रक्षन्तु त्वां सदा देवाः सम्पदः सन्तु सर्वदा।।

– महापुरुषस्य तिलक करण मन्त्रः –

ॐस्वस्तिनऽइन्द्रोव्वृद्धश्श्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्श्ववेदाः।। स्वस्ति नस्ताक्ष्र्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्प्पतिर्द्दधातु।

– अक्षतारोपणम् (अक्षत लगायें) **–**

ॐयुञ्जन्ति ब्रध्नमरुषं चरन्तं परितस्थुषः। रोचन्तेरोचना दिवि।(ऋग्वे.)

– बाकस्य तिलक मन्त्रः –

ॐयावद् गङ्गा कुरुक्षेत्रे यावत्तिष्ठति मेदिनी।
यावद् रामकथा लोके तावज्जीवतु बालकः।।

– कन्यायाः तिलक मन्त्रः –

ॐअम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन। स सस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

– सौभाग्यवत्याः स्त्रियः तिलक मन्त्रः –

ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्च पत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।।

(आयुष्मती सौभाग्वतीपुत्रवती जीववत्सा भव)

– विधवायाः तिलक मन्त्रः –

ॐतद्विष्णोः परमंपदǃ सदापश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्।। त्रीणिपदा व्विचक्रमे विष्णुर्गोपाऽअदाब्भ्यः। अतो धर्म्माणि धारयन्।।

(आयुष्मती धर्मवती विष्णुव्रतवती भव)

– रक्षासूत्र बन्धनम् –

निम्नलिखित मन्त्र से यजमान के दक्षिण हाथ में रक्षासूत्र बाँधें। कन्याओं के दक्षिण हाथ में ही मौली बाँधें एवं विवाहित स्त्रियों के बायें हाथ में रक्षासूत्र बाधें।

ॐ येन बद्धो बलीराजा दानवेन्द्रो महाबलः।
ते न त्वां मनु बध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

– यजमान हस्ते कङ्कण बन्धनम् –

ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणाहिरण्यǃ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्मऽ आबध्नामि शतशारदाया युष्माञ्जरदष्टिर्यथासम्।।

– यजमानपत्नी वाम हस्ते कङ्कण बन्धनम्ः –

ॐ तम्पत्नीभिरनु गच्छेमदेवाः पुत्रैर्भ्रातृभिरुतवाहिरण्यैः। नाकङ् गृभ्णानाः सुकृतस्य लोके तृतीये पृष्ठेऽअधिरोचने दिवः।।

– ग्रन्थिबन्धनम् –

ॐ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्रेपार्श्वे नक्षत्राणिरूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।।

इस मन्त्र से ग्रन्थि बन्धन करें।

– कर्मपात्रपूजनम् –

यजमान के बायीं ओर त्रिकोण-मण्डल बनाकर गन्धाक्षत से पूजन कर कर्मपात्र स्थापित करें एवं हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से वरुण का आवाहन करें।

ॐ भगवन् वरुणागच्छ त्वमस्मिन् कलशे प्रभो।
कुर्वेऽत्रैव प्रतिष्ठां ते जलानां शुद्धि हेतवे।।

ॐ भूर्भुवः स्वः अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं स शक्तिकं आवाहयामि-स्थापयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि-नमस्करोमि।

अङ्कुश मुद्रा दिखाकर तीर्थों का आवाहन करें एवं मत्स्य मुद्रा से ढँक लें, व निम्नलिखित मन्त्र को आठ बार पढ़ें।

ॐ वं वरुणाय नमः।

कर्मपात्र का थोड़ा सा जल लेकर पूजन सामग्री, भूमि एवं यजमान के ऊपर निम्नलिखित मन्त्र से संप्रोक्षण करें।

ॐ पुनन्तुमादेवजनाः पुनन्तुमनसाधियः।
पुनन्तुव्विश्श्वा भूतानिजातवेदः पुनीहि मा।।

– भूतापसारणम् –

बाएँ हाथ में पीली सरसो या अक्षत लेकर दाहिने हाथ से कर्म भूमि के चारों तरफ व दसों दिशाओं में निम्नमन्त्र पढ़ते हुए बिखेरकर भूतापसारण करें।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः।
ये भूता विघ्नकर्तारः ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्।
सर्वेषामविरोधेन पूजा कर्म समारभे।।
यदत्र संस्थितं भूतं स्थानमाश्रित्य सर्वदा।
स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु।।
भूत प्रेत पिशाचाद्या अपक्रामन्तु राक्षसाः।
स्थानदस्माद् ब्रजन्त्यन्यत् स्वीकरोमि भुवं त्विमाम्।।
भूतानि राक्षसा वापि येऽत्र तिष्ठन्ति के चन।
ते सर्वेऽप्यपगच्छन्तु देवपूजां करोम्यहम्।।

तीन बार ताली बजाकर सभी विघ्नों का अपसारण करें।

–: स्वस्तिवाचनम् :–

हाथ में अक्षत पुष्प लेकर सुन्दर धारणाओं की कल्पना करें एवं मंगल मन्त्रों का श्रवण करें।

हस्ते अक्षत् पुष्पाणि गृहीत्वा स्वस्तिवाचनं पठेत्–

ॐ आनोभद्राः क्रतवोयन्तु व्विश्वतोदब्धासोऽअपरीतासऽ उद्भिदः। देवानोयथासद मिद्वृधेऽअसन्नप्रायुवोरक्षितारोदिवे दिवे॥१॥

देवानांभद्रासुमतिर्ऋजू यतान्देवानांᳬ रातिरभिनो निवर्त्तताम्।।
देवानांᳬसख्यमुपसे दिमाव्वयन्देवा नऽआयुः प्रतिरन्तु जीवसे।।२।।

तान्पूर्व्वया निविदा हूमहेव्वयम्भगंम्मित्रमदितिन्दक्षंमस्रिधम्।
अर्य्यमणं व्वरुणꣳसोमंमश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्।।३।।

तन्नोव्वातो मयो भुव्वातुभेषजन्तन्माता पृथिवीतत्पिताद्यौः।
तद्ग्रावाणः सोमसुतोमयोभुवस्तदश्विना शृणुतन्धिष्ण्या युवम्।।४।।

तमीशानञ्जगतस्तस्थुषस्पतिन्धियन्जिन्वमवसे हूमहे व्वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद्वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तयै।।५।।

ॐस्वस्तिनऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूषाव्विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु।।६।।

पृषदश्वामरुतः पृश्निमातरः शुभँय्यावानो व्विदथेषुजग्मयः। अग्निजिह्वामनवः सूरचक्षसो व्विश्वेनोदेवाऽअवसागमन्निह।।७।।

भद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवा भद्रम्पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरै रङ्गैस्तुष्टुवाᳬ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितँय्यदायुः।।८।।

शतमिन्नुशरदोऽअन्तिदेवा यत्रानश्चक्राजरसन्तनूनाम्। पुत्रासोयत्र पितरो भवन्तिमानोमद्ध्यारीरिषतायुर्गन्तोः।।९।।

अदितिद्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्म्माता स पितासपुत्रः। व्विश्वे देवाऽ अदितिः पञ्चजनाऽअदितिर्जातमदितिर्जनित्त्वम्।।१०।।

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामाशान्तिरेधि।।११।।

यतोयतः समीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु।। शन्नः कुरुप्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः।।१२।। ॐशान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

शान्तिर्भवतु सुशान्तिर्भवतु।

निम्नलिखित मन्त्रों से हाथ में अक्षत–पुष्प लेकर महागणपति आदि का स्मरण करें–

ॐ श्रीमन्महागणाधिपतये नमः। ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐउमा महेश्वराभ्यां नमः। ॐवाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शची–पुरन्दराभ्यां नमः। ॐ माता–पितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ गुरुभ्यो नमः। ॐ परमगुरुभ्यो नमः। ॐ परमेष्ठीगुरुभ्यो नमः। ॐ परात्परगुरुभ्यो नमः ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ एतत् कर्मप्रधान देवताभ्यो नमः।

–: गणपतिं ध्यायेत् :–

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलोगज कर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोपशान्तये।।
अभीप्सितार्थ सिद्धचर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्।
येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलाय तनो हरिः।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्रपार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयोर्भूति र्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।।
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहांगङ्गां भवानीं मणि कर्णिकाम्।।
वक्रतुण्डमहाकाय कोटि सूर्य समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।
विनायकं गुरुं भानु ब्रह्मविष्णु महेश्वरान्।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकार्येषु सिद्धये।।

✡ संकल्पः ✡

यजमान अपने हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, सुपाड़ी, पैसा और कुश रखे एवं पवित्र भावना से पूजन करने के निमित्त प्रतिज्ञा संकल्प करेः–

हस्ते जलाऽक्षत द्रव्यं पुष्पं कुशञ्चादाय सङ्कल्पं कुर्यात्ः–

ॐ विष्णुः, विष्णुः, विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्राह्मणोह्नि द्वितीयेपरार्द्धे विष्णुपदे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवश्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे युगे कलियुगे कलिप्रथमचरणे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भारतवर्षे भरतखण्डे आर्यावर्तान्तर्गत-ब्रह्मावर्त्तैक देशे.....स्थाने, विक्रमशके बौद्धावतारे .....नामसंवत्सरे.....अयने.....ऋतौ.....मासे.....पक्षे.... तिथौ.....वारे.....नक्षत्रे.....योगे....करणे.....राशि स्थितेचन्द्रे. .....राशिस्थितेभास्करे.....रास्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थान स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुण विशेषण विशिष्टायां शुभ वेलायां शुभ पुण्य तिथौ.....गोत्रोत्पन्नोऽहं .....नामोऽहं (वर्मोऽहं, गुप्तोऽहं) शर्मोऽहं ममात्मनः श्रुतिस्मृति पुराण इतिहासोक्त फलावाप्तये, ऐश्वर्य अभिवृद्धचर्थं, अप्राप्त लक्ष्मी प्राप्त्यर्थं, प्राप्त लक्ष्म्याः चिरकाल संरक्षणार्थं, सकल मन ईप्सित कामना संसिद्धि अर्थं, लोके सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यश-विजय-लाभादि प्राप्ति अर्थं, इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकल दुरित उपशमनार्थं, जन्मकुण्डल्यां, वर्षकुण्डल्यां, मास कुण्डल्यां, गोचरे च अरिष्ट स्थान स्थितानां सूर्यादिनवग्रह कृत सर्वविध पीडोपशान्त्यर्थं, सर्वापच्छान्ति पूर्वकं क्षेमस्थैर्य दीर्घायुः आरोग्य विपुल धन धान्य पुत्र-पौत्रादि प्राप्त्यर्थं सूर्यादि नवग्रहानुकूलता प्राप्त्यर्थं, तथा इन्द्रादिदश दिक्पाल प्रसन्नता सिद्धचर्थं, धर्मार्थ-काम-मोक्ष-चतुर्विध पुरुषार्थ सिद्धिद्वारा श्रीसाम्ब सदाशिवप्रीति कामनया ॐभूर्भुवःस्वः श्रीभवानीशङ्कर महारुद्र देवता प्रीत्यर्थं (नर्मदेश्वर, टंकेश्वर, पार्थिवेश्वर) शिवलिङ्गोपरि यथाज्ञानेन, षडङ्गन्यास पूर्वकं, ध्यानावाहनादि यथा मिलितोपचारैःपूजन पूर्वकं, जलधारया (दुग्धधारया).....संख्याकब्राह्मण द्वारा सकृद् रुद्रावर्तनेन

(नमक-चमकेन, महारुद्रेण, अतिरुद्रेण) अभिषेकं कर्म करिष्ये।

अथाङ्ग संकल्पः (पुनर्जलादिकमादाय)

संकल्पिते कर्मणि तत्रादौ निर्विघ्नता सिद्ध्यर्थं श्रीगणेशाम्बिकयोः पूजनं, आचार्यादिवरणं, कलश पूजनं, आवाहन प्रतिष्ठापन पूर्वकं तत्रादौ दीप-घण्टा-शङ्खाद्यर्चन पूर्वक, यथामिलितोपचार द्रव्यैः सर्वे सांकल्पित देवानां पूजनं च करिष्ये।

– कर्मज्योति पूजनम् –

कलश के दक्षिण भाग (ईशान भाग) में दीपक के लिये अक्षत आदि से आसन बनाकर उसपर दीपक रखकर हाथ में गन्ध, अक्षत व पुष्प लेकर आवाहन करें।

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिषा ज्ज्योतिष्मान्रुक्मो वर्च्चसाव्वर्च्चस्वान्। सहस्रदाऽअसि सहस्रायत्वा।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः कर्मज्योत्यै नमः आवाहयामि स्थापयामि सकलपूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

प्रार्थना– ॐ भो दीपदेव रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत्।
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव।।

ॐ भूर्भुवः स्वः दीपस्थदेवतायै नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

– भैरव प्रणामः –

ॐ तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।
भैरवाय नमस्तुभ्यं अनुज्ञां दातुमर्हसि।।

इस मन्त्र से महाभैरव का ध्यान करते हुए पुष्पाक्षत आदि समर्पित कर नमस्कार करें।

– घण्टापूजनम् – (घण्टा दीपक के दक्षिण भाग में स्थापित करें)

हाथ में गंध, अक्षत एवं पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से पूजन करें।

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा घण्टा पूजनं करिष्ये।

ॐसुपर्ण्णोसिगरुत्माँस्त्रिवृत्ते शिरोगायत्रञ्चक्षुर्बृहद्रथन्तरेपक्षौ। स्तोमऽआत्माच्छन्दाꣳस्यङ्गानियजूꣳषिनाम॥ सामतेतनूर्व्वामदेव्यँय्यज्ञायज्ञियम्पुच्छन्धिष्ण्याः शफाः॥ सुपर्ण्णोसिगरुत्मान्दिवङ्गच्छ स्वः पत।।

ॐ भूर्भुवः स्वः घण्टस्थगरुणाय नमः, सर्ववाद्यमयीघण्टाय नमः गरुडं आवहयामि स्थापयामि सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

हाथ में पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से प्रार्थना करें–

प्रार्थनाः– ॐआगमर्थन्तु देवानां गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
कुरु घण्टे वरं नादं देवतास्थान सन्निधौ ॥

ॐ भूर्भुवःस्वः घण्टस्थ गरुणाय नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

शङ्ख पूजनम्– शंख देवताओं के वायें भाग में स्थापित करें–

हाथ में गंध, अक्षत एवं पुष्प लेकर निम्नलिखित मन्त्र से शंख पूजन करें एवं एक आचमनी जल डालें।

ॐअग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः। तमीमहे महागयम्॥ उपयामगृहीतो स्यग्नयेत्त्वा व्वर्च्चसऽएषतेयोनिरग्नयेत्त्वाव्वर्च्चसे।।

पुण्यस्त्वं शङ्ख पुण्यानां मङ्गलानां च मङ्गलम्।
विष्णुना विधृतो नित्यं अतः शान्तिप्रदो भव।।
शङ्खं चन्द्रार्क दैवत्यं वरुणं चाधिदैवतम्।
पृष्ठे प्रजापतिं विद्यात् अग्रे गङ्गा सरस्वती।।
त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शङ्खे तिष्ठन्ति वै नित्यं तस्मात् शङ्खं प्रपूजयेत्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शङ्खस्थदेवतायै नमः शङ्खस्थदेवताम् आवहयामि स्थापयामि सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि नमस्करोमि। (शङ्खमुद्रां प्रदर्श्य)

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर निम्न-लिखित मन्त्र से प्रार्थना करें–

प्रार्थना**–त्वं पुरा सागरोत्पन्नो विष्णुना विधृतः करे।**
निर्मितः सर्वदेवैश्च पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते।।

ॐ भूर्भुव :स्वः शङ्खाधिपतये नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

गणेशाऽम्बिकापूजनम्

ध्यानम्

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर गणेश और अम्बिका जी का ध्यान करें एवं ध्यान कर अक्षत पुष्प गणेश और अम्बिकाजी के श्रीचरणों में छोड़ दें।

गजाननं भूतगणादि सेवितं कपित्थ जम्बूफल चारुभक्षणम्।
उमासुतं शोकविनाश कारकं नमामिविघ्नेश्वर पादपङ्कजम्।।
या श्रीस्वयं सुकृतिनां भवनेष्व लक्ष्मीः पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः।
श्रद्धासतां कुलजनप्रभवस्य लज्जा तां त्वां नताःस्म परिपालयदेवि विश्वम्॥

ॐ भूर्भुवःस्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः ध्यायामि ध्यानं समर्पयामि।

–: आवाहनम् :–

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर निम्न-लिखित मन्त्र से गणेश एवं अम्बिका जी का आवाहन करें।

ॐगणानान्त्वागणपतिꣳहवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳहवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहेव्वसोमम। आहमजानिगर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्॥

ॐअम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयतिकश्चन। स सस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

–: प्राणप्रतिष्ठापनम् :–

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञꣳ समिमन्दधातु।। व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्ता मोंइ।। प्रतिष्ठ।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

हाथ से स्पर्श कर प्रतिष्ठा करें।

–: आसनम् :–

ॐपुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वंय्यद्भूतँय्यच्च भाव्यम्। उतामृतत्त्वस्ये शानो यदन्ने नातिरोहति।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः आसनार्थे पुष्पं समर्पयामि।

गणेशाम्बिका के समीप आसन के निमित्त पुष्प छोड़ें।

–: पाद्यम् :– (चरण-प्रक्षालन)

ॐएतावानस्य महिमा तोज्यायाँश्श्चपूरुषः।। पादोस्य व्विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः पाद्योःपाद्यम् समर्पयामि।

गणेशाम्बिका के चरणों का प्रक्षालन करें।

–: हस्तयोः अर्घ्यम् :–

ॐत्रिपादूर्द्ध्वऽउदैत्पुरुषःपादोस्येहाभवत्पुनः।। ततोव्विष्व्वङ् व्यक्क्रामत्सा शनानशनेऽअभि।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को अर्घ्य दें।

–: मुखे-आचमनीयम् :– (एक आचमनी जल से मुख धुलायें)

ॐततोव्विराड जायतव्विराजोऽअधिपूरुषः।। सजातोऽअत्त्यरिच्च्य तपश्च्चाद्भूमि मथोपुरः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखे-आचमनीयम् समर्पयामि।

–: सर्वाङ्गेस्नानम् :–

ॐतस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥ पशूँताँश्श्चक्क्रे व्वायव्व्या नारण्याग्राम्याश्श्चजे ।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सर्वाङ्गेस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल से सर्वाङ्ग स्नान करायें।

–: पयः स्नानम् :–

ॐपयःपृथिव्याम्पयऽओषधी षुपयो दिव्यन्तरिक्षेपयोधाः।। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्य्यम्।।२।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः पयः स्नानं समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को दूध से स्नान करायें।

–: शुद्धोदकस्नानम् :–

ॐ देवस्यत्त्वा सवितुः प्रसवेश्श्विनोर्व्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

स्नान के उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

–: दधिस्नानम् :–

ॐदधिक्राब्णोऽअकारिषं जिष्णणो रश्श्वस्य व्वाजिनः। सुरभिनो मुखा करत्प्रणऽआयूꣳषि तारिषत्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को दधिस्नान करायें। स्नान के उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

–: घृतस्नानम् :–

ॐघृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्व्वस्य धाम। अनुष्व धमावह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभव्वक्षिहव्व्यम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि।

घी से स्नान करायें। स्नान के उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

–: मधुस्नानम् :–

ॐमधुव्वाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः।

मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्त्पार्थिवꣳ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२॥ऽ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्ग्गावो भवन्तु नः॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि।

शहद से स्नान करायें। स्नान के उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

–: शर्कारास्नानम् :–

ॐअपाꣳ रसमुद्व्यसꣳ सूर्य्येसन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳरसस्ययो रसस्तम्वो गृह्णाम्युत्त ममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्त्वा जुष्टङ्गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः शर्कारास्नानं समर्पयामि।

शर्करा से स्नान करायें, स्नान के उपरान्त शुद्धजल से स्नान कराएँ।

–: मिलित-पञ्चामृत स्नानम् :–

ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशे भवत्सरित्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

पञ्चामृत से स्नान करायें। पुनः जल चढ़ायें।

–: गन्धोदकस्नानम् :–

ॐगन्धर्व्वस्त्वा व्विश्वावसुः परिदधातु व्विश्वस्यारिष्टचै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि।

चन्दन मिश्रित जल से स्नान करायें।

–: शुद्धोदकस्नानम् :–

ॐशुद्धवालःसर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः। श्येतः श्येताक्षो रुणस्तेरुद्द्राय पशुपतये कण्र्णायामाऽ अवलिप्तारौद्द्रानभो रूपाः पार्ज्जन्याः।।

ॐभूर्भुवःस्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

–: अधोवस्त्रम् :–

ॐयुवासुवासाःपरिवीतऽआगात् स उश्रेयान् भवति जायमानः। तन्धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः अधोवस्त्रं समर्पयामि, आचमनं समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को अधोवस्त्र चढ़ायें, पुनः जल छोड़ें।

–: यज्ञोपवीतम् :–

ॐयज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रचं प्रतिमुञ्च शुभ्रं, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशायनमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनंसमर्पयामि, करौ प्रक्षाल्य।

जनेऊ अर्पण करें। पुनः जल छोड़ें एवं हाथ धो लें।

–: उपवस्त्रम् :–

ॐसुजातोज्ज्योतिषा सह शर्म्म व्वरूथ मास दत्स्वः। व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः उपवस्त्रं समर्पयामि। वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि, करौ प्रक्षाल्य।

गणेशाम्बिका को उपवस्त्र चढ़ायें। पुनः जल छोड़ें, एवं हाथ धो लें।

–: गन्धम् (चन्दनम्) :–

ॐ त्वाङ्गधर्व्वाऽअखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वाम्बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा व्विद्वान्न्यक्ष्मा दमुच्च्यत्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः चन्दनं समर्पयामि। (चन्दन लगाायें।)

–: अक्षतान् (चावल) :–

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत्। अस्तोषत स्वभानवो व्विप्रा नविष्ठया मतीयोजान्विन्द्रते हरी।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि। (अक्षत चढ़ायें)

–: पुष्पाणि-पुष्पमाल्याम् :–

ॐओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजित्त्वरीर्व्वी रुधः पारयिष्णवः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि पुष्पमाल्यां च समर्पयामि।

पुष्प एवं पुष्प माला चढ़ायें।

–: विल्वपत्रम् :–

ॐ नमोबिल्म्मिने च कवचिने च नमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिनेचनमः श्रुताय च श्रुतसेनाय च नमो दुन्दुभ्या य चा हनन्याय च।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः विल्वपत्रं समर्पयामि। (वेलपत्र चढ़ायें।)

–: दूर्वाङ्कुरान् :–

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवानो दूर्व्वे

प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।

दूर्वाङ्कुरान्सुहरितान् अमृतान् मङ्गलप्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि। (दूर्वाङ्कुर चढ़ायें)

–: नानापरिमलद्रव्याणि :–

ॐ अहिरिवभोगैः पर्य्येति बाहुञ्ज्याया हेतिम्परि बाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमाꣳ सम्परिपातुव्विश्श्वतः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को अबीर, गुलाल हल्दी आदि चढ़ायें।

–: सुगन्धित द्रव्याणि :–

ॐ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम्।। उर्व्वारुकमिव बन्ध नान्मृत्योर्म्मुक्षीय मा मृतात्।। त्र्यम्बकं यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम्।। उर्व्वा रुकमिव बन्धनादितोमुक्षीय मा मुतः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

इत्र आदि चढ़ायें।

–: सिन्दूरम् :–

सिन्धोरिवप्प्राध्वनेशूघनासोव्वातप्प्रमियः पतयन्ति यह्वाः घृतस्य धाराऽ अरुषोनव्वाजीकाष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्श्वमानः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः सिन्दूरं समर्पयामि। (सिन्दूर चढ़ायें)

–: धूपम् :–

ॐ धूरसिधूर्व्वधूर्व्वन्तंधूर्व्वतंय्योस्मान् धूर्व्वतितंधूर्व्वयं व्वयन्धू र्व्वामः। देवानामसिव्वह्नितमꣳसस्नितमं पप्रितमञ्जुष्ट तमन्देवहूतमम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः धूपं आघ्रापयामि। (धूप अर्पण करें)

–: दीपम् :–

ॐचन्द्रमामनसोजा तश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत। श्श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्च मुखादग्नि रजायत।।

ॐअग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहासूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः

स्वाहा। अग्निर्व्वर्च्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा सूर्योव्वर्चोज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्योज्ज्योतिः स्वाहा।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रत्यक्ष दीपंदर्शयामि, आचमनं समर्पयामि।

दीपक के समीप चावल छोड़कर हस्त प्रक्षालन करें।

–: अथ गणेशाङ्ग पूजनम् :–

वामहस्ते गन्धाक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा गणेशाङ्ग पूजनम् कुर्यात्–

गन्ध, अक्षत एवं पुष्प आदि से भगवान् गणेशजी के अङ्गों का पूजन करें।

ह्रीं गणेश्वराय नमः पादौ पूजयामि। ह्रीं विघ्नराजाय नमः जानुनीं पूजयामि। ह्रीं आखुवाहनाय नमः ऊरुं पूजयामि। ह्रीं हेरम्बाय नमः कटिं पूजयामि। ह्रीं कामारिसूनवे नमः नाभिं पूजयामि। ह्रीं लम्बोदराय नमः उदरं पूजयामि। ह्रीं गौरीसुताय नमः स्तनौ पूजयामि। ह्रीं गणनायकाय नमः हृदयं पूजयामि। ह्रीं स्थूल कण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। ह्रीं स्कन्दाग्रजाय नमः स्कन्धौ पूजयामि। ह्रीं पाशहस्ताय नमः हस्तौ पूजयामि। ह्रीं गजवक्त्राय नमः वक्त्रं पूजयामि। ह्रीं विघ्नहर्त्रे नमः ललाटं पूजयामि। ह्रीं सर्वेश्वराय नमः शिरः पूजयामि। ह्रीं गणाधिपाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।

–: आवरण पूजनम् (अक्षतैः पूजयेत्) :–

वायें हाथ में अक्षत लेकर आवरण पूजन करें।

ह्रीं सुमुखाय नमः। ह्रीं एकदन्ताय नमः। ह्रीं कपिलाय नमः। ह्रीं गजकर्णाय नमः। ह्रीं लम्बोदराय नमः। ह्रीं विकटाय नमः। ह्रीं विघ्ननाशाय नमः। ह्रीं विनायकाय नमः। ह्रीं धूम्रकेतवे नमः। ह्रीं गणाध्यक्षाय नमः। ह्रीं भालचन्द्राय नमः। ह्रीं गजाननाय नमः।

–: गन्धाक्षत पुष्पाण्यादाय :–

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं समस्तावरणार्चनम्।।

ॐभूर्भुवः स्वःसुमुखादि समस्तवरण देवताभ्यो नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

हस्ते जलमादाय-अनेन गणपत्याङ्गवरण देवताः पूजनेन सिद्धिबुद्धिसहिताय महागणपतिः प्रीयताम्।

–: नैवेद्यम् :–

ॐनाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत । पद्भ्यां भूमि र्द्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकाँ २।। अकल्प्पयन्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि, नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। **धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्।**

भोग लगाएँ तदनन्तर धेनु-मुद्रा से अमृती करण करें एवं योनिमुद्रा दिखायें तथा घण्टी बजायें। पश्चात् पञ्चग्रास मुद्रा दिखाकर प्रत्येक मुद्रा में जल छोड़ते जायँ।

ॐप्राणाय स्वाहा। ॐअपानाय स्वाहा। ॐव्यानाय स्वाहा। ॐउदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। मध्ये-मध्ये पानीयं उत्तरा-पोशनार्थे जलं समर्पयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य।

–: ऋतुफलम् :–

ॐयाः फलिनीर्य्याऽअफलाऽ अपुष्पायाश्चपुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चत्वꣳ हसः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमःऋतुफलं समर्पयामि। (ऋतुफल चढ़ायें)

–: मुखवासार्थे ताम्बूलम् :–

ॐ यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञमतन्वत। व्वसन्तोऽस्यासीदा ज्ज्यङ्ग्रीष्मऽ इध्मः शरद्धविः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखवासार्थे ताम्बूलं समर्पयामि।

गणेशाम्बिका को पान, सुपाड़ी, लौंग और इलायची चढ़ायें।

–: श्रीफलम् (नारिकेल फलम्) :–

ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्या वहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः श्रीफलं समर्पयामि। (नारियल चढ़ायें)

–: दक्षिणा द्रव्यम् :–

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेकऽआसीत्। सदाधार पृथिवीन्द्यामुतेमाङ्कस्मै देवायहविषा व्विधेम।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः कृतायाः पूजायाः सादगुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि। (गणेशाम्बिका को दक्षिणा (रुपये) चढ़ायें)

–: विशेषार्घ्यम् :–

जल, गन्धाक्षत, फल-पुष्प, दूर्वा, दक्षिणा, एकस्मिन्पात्रे-प्रक्षिप्य

अवनिकृत जानुमण्डलंकृत्वा, अर्घ्यपात्रं अञ्जलिना गृहीत्वा मन्त्रान् पठेत्:-

ॐरक्षरक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्यरक्षक।
भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।।
द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।।
अनेन सफलार्घ्येण सफलोऽस्तु सदा मम।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

जल-गन्ध-अक्षत-फल-पुष्प-दूर्वा-दक्षिणा एक पात्र में एकत्रित कर गणेशजी एवं गौरीजी को विशेषार्घ्य चढ़ायें।

–: प्रार्थना :–

(हस्ते अक्षत-पुष्पाणि गृहीत्वा प्रार्थनां कुर्यात्)

ॐविघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय श्रुतियज्ञ विभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।
भक्तार्ति नाशन पराय गणेश्वराय, सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय, भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते।।

नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते ब्रह्मरूपाय करिरूपाय ते नमः।।
विश्वरूपस्व रूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक।।
लम्बोदर नमस्तुभ्यं सततं मोदकप्रिय।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

त्वां विघ्न शत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तप्रियेति सुखदेति फल प्रदेति।
विद्या प्रदेत्यघहरेति च येस्तु वन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव।।

गणेश पूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्।
तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

समर्पणम्:-अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेतां न मम।।

हाथ में जल लेकर गणेशाम्बिकाजी के श्रीचरणों में छोड़े दें।

✡✡✡

—: कलश पूजनम् :—

सर्व प्रथमकलश में रोली से स्वास्तिक बनाकर व कलश के गले में मौली (कच्चा-सूत्र) लपेटकर पूजन कर्ता को अपनी बायीं ओर अबीर आदि से अष्टदल कमल बनाकर उसपर सप्तधान्य (सतनजा) या चावल अथवा गेहूँ रखकर उसके ऊपर कलश को स्थापित कर नीचे लिखे हुए विधान के अनुसार पूजन करना चाहिये।

— भूमिं स्पर्शेत् —

ॐमहीद्यौः पृथिवी च नऽइमंय्यज्ञम्मिमिक्षताम्। पिपृतान्नो भरीमभिः।। (भूमि का स्पर्श करें)

— सप्तधान्यं विकरेत् —

ॐओषधयः समवदन्तसोमेनसह राज्ञा। यस्मै कृणोति ब्राह्मणस्तꣳ राजन्पारयामसि।। (पृथिवी पर सतनजा (सप्तधान्य) रखें)

— कलशं स्थापयेत् —

ॐआजिघ्र कलशंमह्य्यात्त्वा विशन्त्विन्दवः। पुनरूर्ज्जा निवर्त्तस्व सा नः। सहस्रं धुक्क्ष्वोरुधारा पयस्वती पुनर्म्मा विशताद्द्रयिः।।

सप्तधान्य के ऊपर कलश स्थापित करें।

— कलशे जलपूरणम् —

ॐव्वरुणस्योत्तम्भनमसि व्वरुणस्यस्क्कम्भ सर्ज्जनीस्थो व्वरुणस्यऽऋतसदन्य सिव्वरुणस्यऽ ऋतसदन मसिव्वरुणस्यऽऋत सदनमासीद।। (कलश को जल से पूरित कर दें)

— गन्ध प्रक्षेपः —

ॐत्वाङ्गन्धर्व्वाऽ अखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः। त्वामोषधे सोमो राजा विद्वान्यक्ष्मा दमुच्यत्।। (कलश में रोली छोड़ें।)

— धान्य प्रक्षेपः —

ॐधान्यमसि धिनुहि देवान्प्राणायत्त्वो दानायत्त्वा व्यानायत्त्वा। दीर्ग्घा मनुप्प्रसितिमायुषे धान्देवोवः सविताहिरण्यपाणिः प्प्रति गृब्भ्णा त्त्वच्छिद्रेण पाणिनाचक्षुषेत्त्वा महीनाम्पयोसि।।

कलश केअन्दर सप्तधान्य छोड़ें।

— सर्वौषधी प्रक्षेपः —

ॐयाऽओषधीः पूर्व्वाजातादेवेब्भ्यस्त्रियुगम्पुरा। मनैनु बब्भ्रूणामहꣳ शतं धामानि सप्त च।। (कलश में सर्वौषधी डालें।)

— दूर्वा प्रक्षेपः —

ॐकाण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्व्वे प्प्रतनु सहस्रेण शतेन च।। (कलश में दूर्वा छोडें।)

— पञ्चपल्लव प्रक्षेपः —

ॐअश्वत्थेवो निषदनं पर्ण्णेवो व्वसतिष्कृता। गोभाजऽइत्किला सथ यत्स नवथ पूरुषम्।। (कलश में पञ्चपल्लव अथवा आम के पत्ते रखें)

— सप्तमृदां प्रक्षेपः —

ॐस्योनापृथिवि नोभवा नृक्षरानिवेशनी ।। यच्छानःशर्म्मसप्रथाः।

कलश में सात स्थानों की मिट्टी (सप्तमृत्तिका) छोड़ें।

— फल प्रक्षेपः —

ॐ याः फलिनीर्य्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणीः। बृहस्पतिप्प्रसू तास्तानो मुञ्चत्वꣳ हसः।। (कलश में सुपारी रखें)

— पञ्चरत्न प्रक्षेपः —

ॐपरिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत्। दधद्रत्ना निदाशुषे।।

कलश में पांच प्रकार के रत्न डालें।

— हिरण्यप्रक्षेपः —

ॐहिरण्यगर्ब्भः समवर्त्तताग्रेभूतस्यजातः पतिरेकऽआसीत्। सदा धारपृथिवीन्द्या मुतेमाङ्कस्मैदेवाय हविषाविधेम॥ (कलश में दक्षिणा डालें)

- वस्त्रेण कलशं वेष्टयेत् -

ॐसुजातोज्ज्योतिषा सहशर्म्म व्वरूथ मासदत्त्स्वः। व्वासोऽअग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो।। (कलश को वस्त्र से लपेट दें)

— कलशोपरि पूर्णपात्रं न्यसेत् —

ॐपूर्ण्णादर्व्वि परापतसुपूर्ण्णापुनरापत। व्वस्नेवव्विक्क्रीणावहा ऽइषमूर्जꣳ शतक्क्रतो।। (कलश पर पूर्णपात्र रखें।)

- पूर्णपात्रोपरि नारिकेलं न्यसेत् -

ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्। इष्णन्निषाणा मुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण।।

पूर्णपात्र पर नारियल रखें।

— वरुणं आवाहयेत् —

अक्षत पुष्प लेकर वरुण भगवान् का आवाहन करें।

ॐ तत्त्वायामिब्ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्तेयजमानोहविर्ब्भिः।

अहेड मानो वरुणेह बोध्युरुशꣳ समानऽआयुः प्रमोषीः।

अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं सायुधं स शक्तिकं आवाहयामि स्थापयामि। ॐअपांपतये वरुणाय नमः। इति पञ्चोपचारैर्वरुणं सम्पूज्य।

चावल फूल छोड़कर, वरुणदेव की पञ्चोपचार से पूजा करें।।

–: कलशस्थित देवानां नदीनां तीर्थानां च आवाहनम् :–

निम्नलिखित मन्त्र पढ़ते हुए कलश में अक्षत छोड़ें।

ॐकलाकला हि देवानां दानवानां कला कलाः।
संगृह्य निर्मितो यस्मात् कलशस्तेन कथ्यते।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठेरुद्रः समाश्रितः।
मूले त्वस्यस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।।
कुक्षौ तु सागराः सप्त सप्तद्वीपा च मेदिनी।
अर्जुनी गोमती चैव चन्द्रभागा सरस्वती।।
कावेरी कृष्ण वेणा च गङ्गा चैव महानदी।
तापी गोदावरी चैव माहेन्द्री नर्मदा तथा।।
नदाश्च विविधा जाता नद्यः सर्वास्तथा पराः।
पृथिव्यां यानि तीर्थानि कलशस्थानि तानि वै।।
सर्वे समुद्राः सरितः तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशं तु समाश्रिताः।।
अत्र गायत्री सवित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा।
आयान्तु मम शान्त्यर्थं दुरितक्षय कारकाः।।

प्रतिष्ठापनम्–ॐमनोजूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टंय्यज्ञꣳसमिमन्दधातु।। व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्तामोंऽ३॥ प्रतिष्ठ।।

कलशे वरुणाद्यावाहित देवताः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु।

कलशे वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः। विष्णवाद्यावाहित देवताभ्यो नमः इति वा। षोडशोपचारैःपूजनम् कुर्यात्। आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि। सर्वाङ्गेस्नानं समर्पयामि। पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि। हस्तौप्रक्षाल्य। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि।

उपवस्त्रं समर्पयामि। गन्धं समर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं च समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

–: कलश प्रार्थना :–

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ।
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।।
शिवः स्वयं त्वमेवाऽसि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवाः सपैतृकाः।।
त्वयितिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।।
सान्निध्यं कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
नमो नमस्ते स्फटिक प्रभाय, सुश्वेत हाराय सुमङ्गलाय।
सुपाश हस्ताय झषासनाय, जलाधिनाथाय नमो नमस्ते।।
पाशपाणे नमस्तुभ्यं पद्मिनी जीवनायक।
यावत्कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव।।

ॐभूर्भुवः स्वः कलशोपरिसर्वेआवाहित देवताभ्यो नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्करोमि।

समर्पणम्–अनया पूजया वरुणाद्यावाहित देवताः प्रीयन्तां न मम।

✡✡✡

– आचार्य वरण संकल्प –

ॐपूर्वोच्चारित संकल्पानुसारेण....गोत्रोत्पन्नोऽहं....नामोऽहं (वर्मोऽहं, गुप्तोऽहं) शर्मा यजमानोऽहं (सपत्नीकोऽहं)...गोत्र...प्रवरं यजुर्वेदाध्यायिन. ..शर्माणं ब्रह्माणं अस्मिन् शिवार्चन (रुद्र, महारुद्र, अतिरुद्र-याग) कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः आचार्यत्वेन त्वामहं वृणे।

ॐबृहस्पतेऽअतियदर्य्योऽअर्हा द्युमद्विभातिक्रक्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छ वसऽऋतप्प्रजाततदस्मा सुद्द्रविणं धेहिचित्रम्।।

आचार्य कहें-**वृतोऽस्मि।**

निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारणकर यजमान पाद्य, अर्घ्य, गन्ध, अक्षत, पुष्पमाला आदि से आचार्य की पूजा करें और उनके दाहिने हाथ में लालसूत्र रूपी कंकण बाँध दें। उपरान्त यजमान अपने दोनो हाथों को जोड़कर इस श्लोक द्वारा आचार्य की प्रार्थना करें–

आचार्यस्तु यथा स्वर्गे शक्रादीनां बृहस्पतिः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् आचार्यो भव सुव्रतः।।

– ब्राह्मणवरणसंकल्प –

ॐपूर्वोच्चारित संकल्पानुसारेण....गोत्रोत्पन्नोऽहं.......नामोऽहं (वर्मोऽहं/गुप्तोऽहं) शर्मा यजमानोऽहं (सपत्नीकोऽहं)....गोत्र...प्रवरं यजुर्वेदा ध्यायिन...शर्माणं ब्रह्माणं अस्मिन् शिवार्चन (रुद्र, महारुद्र, अतिरुद्र-याग) कर्मणि एभिर्वरणद्रव्यैः ऋत्विक्त्वेन त्वामहं वृणे।

ब्राह्मण कहें–**वृतोऽस्मि,** (अर्थात् मुझे स्वीकार है) अधिक हों तो **व्रताऽस्मः** कहें।

भगवन् सर्वधर्मज्ञ सर्वधर्म परायण।
वितते मम यज्ञेऽस्मिन् ऋत्विक् त्वं मे मखे भव।।

ब्राह्मणों के हाथ में मौली बाँधें–

ॐव्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

✡✡✡

शिवलिङ्ग पूजन का प्रारम्भ एवं महत्त्व

शिवलिङ्ग के पूजन प्रारम्भ होने के सम्बन्ध में एक पौराणिकी कथा प्राप्त होती है कि–दक्ष प्रजापति ने अपने यज्ञ में शिवजी का भाग नहीं रखा, जिससे कुपित होकर सती पार्वती ने दक्ष के यज्ञमण्डप में योगाग्नि द्वारा अपना शरीर जलाकर प्राण त्याग कर दिया। सती के शरीर के त्यागे जाने का समाचार सुनकर शिवजी अत्यन्त कुपित हो गये और वे नग्नावस्था में पृथ्वी पर भ्रमण करने लगे। एक दिन वह नग्नावस्था में ही ब्राह्मणों की बस्ती में पहुँच गये। शिवजी के नग्न स्वरूप को देखकर ब्राह्मणों की स्त्रियाँ भगवान् शिवजी पर मोहित हो गयीं। स्त्रियों की मोहावस्था को देखकर ब्राह्मणों ने शिवजी को शाप दिया कि 'इनका लिङ्ग इनके शरीर से तत्काल गिर जाय।' ब्राह्मणों के शाप के प्रभाव से लिङ्ग उनके शरीर से अलग होकर गिर गया, जिससे तीनों लोकों में घोर उत्पात होने लग गया।

समस्त देव, ऋषि, मुनि व्याकुल होकर ब्रह्माजी की शरण में गये। ब्रह्माजी ने योगबल से शिव-लिङ्ग के अलग होने का कारण जान लिया और वह समस्त

देवताओं, ऋषियों और मुनियों को अपने साथ लेकर शिवजी के समीप पहुँचे। ब्रह्माजी ने शिवजी से प्रार्थना की कि–'आप अपने लिङ्ग को पुनः धारण कीजिये, अन्यथा तीनों लोक नष्ट हो जायेंगे।' ब्रह्माजी की प्रार्थना सुनकर शिवजी बोले कि–आज से सभी लोग मेरे लिङ्ग की पूजा प्रारम्भ करदें, तो मैं पुनः अपने लिङ्ग को धारण कर लूँगा।' शिवजी की बात सुनकर ब्रह्माजी ने सर्वप्रथम सुवर्ण का शिवलिङ्ग बनाकर उसका विधिवत् पूजन किया। पश्चात् देवताओं, ऋषियों और मुनियों ने अनेक द्रव्यों के शिव-लिङ्ग बनाकर पूजन किया। तभी से शिव-लिङ्ग के पूजन का क्रम प्रारम्भ हुआ।

जो मनुष्य किसी तीर्थ में तीर्थ की मिट्टी से शिवलिङ्ग बनाकर उनका हजार बार अथवा लाख बार अथवा करोड़ बार सविधि पूजन करता है, तो वह साधक शिवस्वरूप हो जाता है। जो मनुष्य तीर्थ में मिट्टी, भस्म, गोबर अथवा बालू का शिवलिङ्ग बनाकर एक बार भी उसका सविधि पूजन करता है, वह साधक दस हजार कल्प तक स्वर्ग में निवास करता है।

शिव-लिङ्ग का विधिपूर्वक पूजन करने से मनुष्य सन्तान, धन, धान्य, विद्या, ज्ञान, सद्बुद्धि, दीर्घायु और मोक्ष को प्राप्त करता है।

जिस स्थान पर शिवलिङ्ग का पूजन होता है, वह तीर्थ न होने पर भी तीर्थ बन जाता है।

जिस स्थान पर सर्वदा ही शिव पूजन होता है, उस स्थान पर जिस मनुष्य की मृत्यु होती है, वह शिवलोक को प्राप्त करता है। जो मनुष्य शिव, शिव, शिव, इस प्रकार सर्वदा कहता रहता है, वह परम पवित्र और परम श्रेष्ठ हो जाता है और वह धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष को भी प्राप्त करता है।

'शिव' शब्द के उच्चारण मात्र से मनुष्य के समस्त प्रकार के पापों का विनाश हो जाता है। अतः जो मनुष्य 'शिव-शिव' का उच्चारण करते हुए प्राणत्याग करता है, वह अपने करोड़ों जन्म के पापों से मुक्त होकर 'शिवलोक' को प्राप्त करता है।

'शिव' शब्द का अर्थ–कल्याण है। अतः जिसकी जिह्वा पर अहर्निश कल्याणकारी 'शिव' का नाम रहता है, उसका बाह्य और आभ्यन्तर दोनो ही शुद्ध हो जाते हैं और वह शिवजी की समीपता का अधिकारी बन जाता है। 'शिव' यह दो अक्षरों वाला नाम ही परब्रह्मस्वरूप एवं तारक है, इससे भिन्न और कोई दूसरा तारक ब्रह्म नहीं है–

तारकं ब्रह्म परमं शिव इत्यक्षरद्वयम्।
नैतस्मादपरं किंचित् तारकं ब्रह्म सर्वदा।। (शिव रहस्य)

✡✡✡

–: शिवपूजन के लिये विशेष तथ्य :–

कामना भेद से रुद्राभिषेक द्रव्य

१. जल से अभिषेक करने पर शीघ्र ही वृष्टि होती है, एवं ज्वर भी शान्त होता है।
२. कुशोदक से अभिषेक करने पर व्याधियों का शमन होता है।
३. दधि से अभिषेक करने पर पशु आदि की प्राप्ति होती है।
४. गन्ने के रस से अभिषेक करने पर लक्ष्मी की सिद्धि प्राप्त होती है।
५. मधु से अभिषेक करने पर धन की प्राप्ति होती है।
६. तीर्थ के जल से अभिषेक करने पर मोक्ष की प्राप्ति होती है।
७. दूध से अभिषेक करने पर शीघ्र ही पुत्रकी प्राप्ति होती है, और प्रमेहरोग भी नष्ट होता है।
८. घी की धारा से सहस्र नामों से अभिषेक करने पर वंश का विस्तार होता है।
९. शर्करा मिश्रितदूध से अभिषेक करने पर जडबुद्धि भी श्रेष्ठबुद्धि में परिवर्तित हो जाती है।
१०. सर्षों के तेल से अभिषेक करने पर शत्रुओं का शमन होता है।
११. शिवजी का अभिषेक गो शृङ्ग से करना चाहिये (शिवं गवयशृङ्गेण)।
१२. शिवजी के अभिषेक के लिये यजुर्वेदोक्त रुद्री प्रशस्त मानी गयी है।
१३. पवित्र मनुष्य सदा ही उत्तराभिमुख होकर शिवार्चन करें।
१४. मृत्तिका, भस्म, गोबर, आटा, ताँबा और कांस का शिवलिङ्ग बानाकर जो मनुष्य एकबार भी पूजन करता है वह अयुतकल्प तक स्वर्ग में वास करता है।
१५. नौ, आठ, और सात अँगुल का शिवलिङ्ग उत्तम होता है। तीन, छः, पाँच अथवा चार अँगुल का शिवलिङ्ग मध्यम होता है। तीन, दो, और एक अँगुल का शिवलिङ्ग कनिष्ठ होता है। इस प्रकार यथा क्रम से चर प्रतिष्ठित शिवलिङ्ग नौ प्रकार का कहा गया है।
१६. शूद्र, जिसका उपनयन सँस्कार नहीं हुआ है, स्त्री और पतित ये लोग केशव या शिव का स्पर्श करते हैं तो नरक प्राप्त करते हैं। **(स्कन्द पुराण)**
१७. स्वयं प्रदुर्भूत बाणलिंग में, रत्नलिंग में, रसनिर्मित लिंग में और प्रतिष्ठित लिंग में चण्ड का अधिकार नहीं होता।
१८. जहाँ पर चण्डाधिकार होता है वहाँ पर मनुष्यों को उसका भोजन नहीं करना चाहिये। जहाँ चण्डाधिकार नहीं होता है वहाँ भक्ति से भोजन करें। **(नि.सि.पृ.सं.७२०)**
१९. पृथिवी, सुवर्ण, गौ, रत्न, ताँबा, चाँदी, वस्त्रादि को छोड़कर चण्डेश के लिये निवेदन करें। अन्य अन्न आदि, जल, ताम्बूल, गन्ध और पुष्प, भगवान् शङ्कर को निवेदित किया हुआ सब चण्डेश को दे देना चाहिये। **(नि.सि.पृ.सं.७१९)**
२०. विल्वपत्र तीनदिन और कमल पाँच दिन वासी नहीं होता और तुलसी वासी नहीं होती। **(नि.सि.पृ.सं.७१८)**
२१. अँगुष्ठ, मध्यमा और अनामिका से पुष्प चढ़ाना चाहिये एवं अँगुष्ठ–तर्जनी से निर्माल्य को हटाना चाहिये।

अथ शिवपूजनम्

पार्थिव शिवलिङ्ग विनियोगः- **ॐअस्य श्रीशिवपञ्चाक्षर मन्त्रस्य वामदेव ऋषिः अनुष्टुप्छन्दः, श्रीसदाशिवो देवता, ओंकारो बीजम्, नमः शक्तिः, शिवाय इति कीलकम्, मम साम्बसदाशिव प्रीत्यर्थं न्यासे पार्थिव लिङ्ग पूजने जपे च विनियोगः।**

(थोड़ा सा जल लेकर किसी पात्र में छोड़ दें)

– प्राणप्रतिष्ठा विनियोगः –

हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़कर पात्र में छोड़ दें।

ॐअस्य श्रीप्राणप्रतिष्ठा मन्त्रस्य ब्रह्म-विष्णु-महेश्वरा ऋषयः, ऋग्यजुः सामानिच्छन्दांसि, क्रियामय वपुः प्राणाख्या देवता, आँ बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्रौं कीलकम्, पार्थिवेश्वर (यहाँ जिसके शिवलिङ्ग बने हों उन शिव लिङ्ग का नाम लें....) **प्राणप्रतिष्ठापने विनियोगः।**

– प्राणप्रतिष्ठा –

हाथ में पुष्प लेकर शिवलिङ्ग पर स्पर्श करते हुए निम्नलिखित मन्त्रों का उच्चारण करें–

ॐ ब्रह्म-विष्णु-रुद्र ऋषिभ्यो नमः शिरसि। ॐ ऋग्यजुः सामानि च्छन्दोभ्यो नमः मुखे। ॐ प्राणाख्या देवतायै नमः हृदि। ॐ आँ बीजाय नमः गुह्ये। (पुष्पं परित्यज्य हस्तौ प्रक्षालनम्) ॐ ह्रीं शक्तये नमः पादयोः। ॐक्रौं कीलकाय नमः सर्वाङ्गेषु।

इस प्रकार मूर्ति न्यास करके पार्थिवलिङ्ग का अँगुष्ठ से स्पर्श कर मन्त्रों का उच्चारण करें।

ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य प्राणा इह प्राणाः। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य जीव इह स्थितः। ॐ आँ ह्रीं क्रौं यँ रँ लँ वँ शँ षँ सँ हँ सः सोऽहं शिवस्य सर्वेन्द्रियाणि वाङ् मनः त्वक् चक्षुः श्रोत्र-घ्राण-जिह्वा-पाणि-पाद-पायूपस्थानि इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

अञ्जलिं बध्वा ध्यायेत्– (हाथ में पुष्प लेकर भगवान् शङ्करजी का ध्यान करें)

दक्षोत्सङ्ग निषण्ण कुञ्जरमुखं, प्रेम्णा करेणस्पृशन्,
वामोरुस्थित वल्लभाङ्कनिलयं, स्कन्दं परेणामृशन्।

इष्टाभीतिमनोहरं करयुगं, बिभ्रत् प्रसन्नाननो,
भूयान्नः शरदिन्दु सुन्दरतनुः श्रेयस्करः शङ्करः।।
तेजोमयंसगुण-निर्गुणमद्वितीयं आनन्दकन्द-मपराजित-मप्रमेयम्,
नागात्मकं सकलनिष्कलमात्मरूपं वाराणसीपुरपतिं भजविश्वनाथम्।।
नमोस्तु स्थाणुरूपाय ज्योतिर्लिङ्गामृतात्मने।
चतुर्मूर्तेश्च पुं शक्त्या भासिताङ्गाय शम्भवे।।
सर्वज्ञ ज्ञान-विज्ञान प्रदानैक महात्मने।
नमस्ते देव देवेश सर्वभूत हितेरत।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय (पार्थिवेश्वराय नमः) ध्यायामि ध्यानं समर्पयामि। (ध्यान कर पुष्प छोड़ दें।)

इस प्रकार नमन कर स्थापित शिवलिङ्गका स्पर्श करें, एवं निम्न लिखित मन्त्रों से शिवजी का आवाहन करें-

आवाहनम्– ॐभूः पुरुषं साम्बसदाशिवम् आवाहयामि। ॐभुवः पुरुषं साम्बसदाशिवम् आवाहयामि। ॐस्वः पुरुषं साम्बसदाशिवम् आवाहयामि।

ॐनमस्तेरुद्र मन्यवऽउतोतऽइषवेनमः।। बाहुब्भ्या मुतते नमः।।
त्रिपुरान्तकरं देवं चूड़ाचन्द्र महाद्युतिम्।
गजचर्म परीधानं शिवं आवहयाम्यहम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। **(थोड़ा सा चावल फूल छोड़ दें।)**

हाथ में अक्षत-पुष्प लेकर भगवान् शिव से प्रार्थना करें कि हे प्रभु! आप कैलाश पर्वत से इस पार्थिवलिङ्ग पर स्थापित हों, और हमारी सेवा पूजा को स्वीकार करें।

ॐस्वामिन् सर्व जगन्नाथ यावत् पूजावसानकम्।
तावत्त्वं प्रीति भावेन लिङ्गेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
अनया तव देवेश मूर्तिं शक्तिरियं प्रभो।
सन्निध्यं कुरु तस्यात्वं भक्तानुग्रह तत्पर।।
यस्यदर्शन मिच्छन्ति देवाः स्वाभीष्ट सिद्धये।
तस्मै ते मरमेशायः स्वागतं स्वागतं वदे।।

मन्त्र पढ़कर अक्षत-पुष्प पार्थिव लिङ्ग के सम्मुख छोड़ दें

–: शिवपरिवारस्य आवाहनम् :–

अब बायें हाथ में चावल लेकर दाहिने हाथ से निम्नलिखित मन्त्रों को पढ़ते हुए शिव परिवार का ध्यान करते हुए चावल छोड़ते जायँ।

गणपति आवाहनम्– **ॐगणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम। आह मजानिगब्भं धमात्त्वमजासि गब्भंधम्।।**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीगणेशाय नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि (थोड़ा सा चावल छोड़ दें।)

अम्बिका आवाहनम्– **ॐअम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिकेनमानयति कश्चन। स सस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्।।**

ॐभूर्भुवः स्वः गौर्यै नमः गौरीं आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (थोड़ा सा चावल छोड़ दें।)

नन्दीश्वरआवाहनम्– **ॐआशुः शिशानोव्वृषभोनभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्। सङ्क्रदनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः।**

ॐभूर्भुवः स्वः नन्दीश्वराय नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (थोड़ा सा चावल छोड़ दें।)

वीरभद्र आवाहनम्- **ॐभद्रङ्कर्णेभिः शृणुयामदेवाः भद्रम्पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाꣳ सस्तनूभिर्व्व्यशेमहि देवहितँय्यदायुः।।**

ॐभूर्भुवः स्वः वीरभद्राय नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (थोड़ा सा चावल छोड़ दें।)

स्वामि कार्तिक आवाहनम्– **ॐयदक्रन्दः प्प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्स मुद्द्रादुतवापुरीषात्। श्येनस्यपक्षाहरिणस्यबाहूऽ उपस्तुत्यंमहि जातन्तेऽ अर्व्वन्।।**

ॐभूर्भुवः स्वः स्कन्दाय नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (थोड़ा सा चावल छोड़ दें।)

कुबेर आवाहनम्– **ॐकुविदङ्ग यवमन्तो यवञ्चिद्यथा दान्त्यनुपूर्व्वं व्वियूय। इहेहैषाङ्कृणुहि भोजनानिये वर्हिषोनमऽउक्तिं यजन्ति।।**

ॐभूर्भुवः स्वः कुबेराय नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (थोड़ा सा चावल छोड़ दें।)

कीर्तिमुख आवाहनम्– **ॐअसवेस्वाहा व्वसवेस्वाहा व्विभुवेस्वाहा व्विवस्वतेस्वाहा गणश्रियेस्वाहा गणपतयेस्वाहा स्वाहाभिभुवेस्वाहा धिपतयेस्वाहा शूषायस्वाहा सद॰सर्प्पायस्वाहा चन्द्रायस्वाहा ज्ज्योतिषेस्वाहा मलिम्लुचायस्वाहा दिवापतयेस्वाहा।।**

ॐभूर्भुवः स्वः कीर्तिमुखाय नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (थोड़ा सा चावल छोड़ दें।)

नागराज पूजनम्– **ॐनमोस्तुसर्पेभ्यो ये के च पृथिवी मनु। येऽअन्त रिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।।**

ॐभूर्भुवः स्वः नागराजाय नमः आवाहयामि स्थापयामि आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। (थोड़ा सा चावल छोड़ दें।)

आवाहित देवानां पूजनम्–(आवाहित देवताओं की पूजा करें)

आसनम्– **ॐयातेरुद्रशिवातनूरघोरापाप काशिनी। तयानस्तन्वा शन्तमयागिरि शन्ताभिचाकशीहि।।**

शुचि प्रदेशे शुचि कौशमासनं मृगत्व वाच्छन्नमथापिवास्रितम्।
मन्त्रेण दत्तंविधिवद् गृहीत्वा योगासनारूढ सुखं समास्यताम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

आसन के निमित्त अक्षत् छोड़ें।

पाद्यम्– **ॐयामिषुङ्गिरिशन्तस्तेबिभर्ष्यस्तवे। शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरुमाहि॰ सीः पुरुषञ्जगत्।।**

यत्पादयुग्मं विरजः पवित्रं ध्यातं सदा यत् परतत्त्वदर्शिभिः।
तत्क्षालनायामरवन्द्यमन्त्रतो दत्तं मया पापमिदं गृहाण।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पाद्योः पाद्यं समर्पयामि।

हस्तयोः अर्घ्यम्– **ॐशिवे नव्वचसात्त्वागिरिशाच्छाव्वदामसि।। यथानः सर्व्व मिज्जगदयक्ष्म॰ सुमनाऽअसत्।।**

धवल चन्दन पुष्पकुशैर्युतं कदली पुष्पदलेनिहितं शुभम्।
तवपुरः शिवमन्त्र समर्पितं तदिदं अर्घ्यपयः प्रतिगृह्यताम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि।

मुखे आचमनीयम्– **ॐअद्धचवोचदधि वक्ताप्प्रथमोदैव्योभिषक्।।**

अहींश्चसर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्चया तुधान्यो धराचीः परासुव।।

सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मुखेआचमनीयं जलं समर्पयामि।

मुख प्रक्षालन के निमित्त एक आचमनी जल छोड़ें।

सर्वाङ्गेस्नानम्– **ॐअसौयस्ताम्प्रोऽ अरुणऽउतबब्भ्रुःसुमङ्गलः।। येचैनः रुद्राऽअभितोदिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाᳬहेडऽईमहे।।**

परमानन्द वोधाब्धि निमग्न निजमूर्तये।
साङ्गोपाङ्गमिदं स्नानं कल्पयामि प्रसीद मे।।
गङ्गा-सरस्वती-रेवा पयोष्णी नर्मदाजलैः।
स्नापितोसि महादेव ह्यतः शान्तिं कुरुष्व मे।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः सर्वाङ्गेस्नानं समर्पयामि।

शङ्करजी को सम्पूर्ण स्नान करायें।

पयः स्नानम्– **ॐपयः पृथिव्याम्पयऽओषधीषुपयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः।। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्य्यम्।।**

गोक्षीर स्नानं देवेश गोक्षीरेण मया कृतम्।
स्नपनं देव देवेश गृहाण परमेश्वर।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पयः स्नानं समर्पयामि, पयः स्नानान्तेशुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। दूध से स्नान करायें, उपरान्त जल से स्नान कराएँ।

दधिस्नानम्– **ॐ दधिक्राब्ब्णोऽअकारिषं जिष्णोरश्वस्य व्वाजिनः। सुरभिनोमुखा करत्प्रणऽआयूᳬषितारिषत्।।**

दध्ना चैव महादेव स्नपनं क्रियते धुना।
गृहाण श्रद्धया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दधि स्नानं समर्पयामि, दधि स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शङ्करजी को दधिस्नान करायें। स्नान के उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

घृतस्नानम्– **ॐघृतम्मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्व्वस्य धाम। अनुष्व धमा वह मादयस्व स्वाहाकृतं व्वृषभव्वक्षि हव्यम्।।**

सर्पिषा च मया देव स्नपनं क्रियते धुना।
गृहाण श्रद्धया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः घृत स्नानं समर्पयामि, घृतस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

घी से स्नान करायें। स्नान के उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

मधुस्नानम्– **ॐमधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्तिसिन्धवः माध्वीर्न्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नोव्वनस्पतिर्म्मधुमाँ२॥ऽअस्तुसूर्यः। माध्वीर्ग्गावोभवन्तु नः।।**

इदं मधु मया दत्तं तव प्रीत्यर्थमेव च।।
गृहाण त्वं हि देवेश मम शान्तिप्रदो भव।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि, मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शङ्कर जी को शहद से स्नान करायें। उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

शर्करास्नानम्– **ॐअपाꣳ रस मुद्वयसꣳ सूर्य्ये सन्तꣳ समाहितम्। अपाꣳ रसस्ययो रसस्तम्वो गृह्णाम्युत्त ममुपयामगृहीतो सीन्द्रायत्त्वा जुष्टङ् गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्रायत्त्वा जुष्टतमम्।।**

सितया देव देवेश स्नपनं क्रियते धुना।
गृहाण श्रद्धया दत्तां सुप्रसन्नो भव प्रभो।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शर्करा स्नानं समर्पयामि, शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।।

शङ्कर जी को शर्करा से स्नान करायें, उपरान्त शुद्ध जल से स्नान कराएँ।

मिलित-पञ्चामृत स्नानम्– **ॐपञ्चनद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः। सरस्वतीतु पञ्चधासो देशेभवत्सरित्।।**

दीने त्वया वा विहितानुकम्पा संख्यायतां क्रामति सा न संख्याम्।
विभो मयाङ्गी कुरुभव्यरूप पञ्चामृत स्नानमिदं विशुद्धम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि।

शङ्कर जी को पञ्चामृत से स्नान करायें।

शुद्धोदकस्नानम्– **ॐ देवस्यत्त्वासवितुः प्रसवेश्विनोर्व्बाहुब्भ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्।।**

आनन्दकन्दे सुरवृन्दवन्द्ये पादारविन्दे किमुकल्पयामि।
मन्दाकिनी भङ्गमरीचि मालं तोयं मुदा केवलमर्पयामि।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

महाभिषेक-स्नानम्

शिव लिङ्ग में दूध की धारा लगाकर महाभिषेक करें–

ॐभूर्भुवः स्वः ॥ नमस्तेरुद्रमन्यवऽउतोतऽइषवे नमः॥ बाहुब्भ्या मुततेनमः॥१॥ यातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तन्वा शन्तमयागिरि शन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते बिभर्ष्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरुमाहिꣳ सीः पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेनव्वचसात्त्वा गिरिशाच्छाव्वदामसि ॥ यथानः सर्व्वमिज्जगद यक्ष्मꣳ सुमनाऽअसत् ॥४॥ अद्धचवोच दधिवक्त्काप्प्रथमोदैव्योभिषक् ॥ अहींश्चसर्वाञ्जम्भ यन्त्सर्वाश्चया तुधान्योधराचीः परासुव ॥५॥ असौ यस्ताम्प्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशोवैषाꣳ हेडऽईमहे ॥६॥ असौयोवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्ट्टोमृडयातिनः॥७॥ नमोस्तुनीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानो हन्तेब्भ्यो करन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्चधन्वनस्त्वमुभयोरात्कर्न्योर्ज्ज्याम्॥ याश्चतेहस्तऽ इषवः पराताभगवोव्वप ॥९॥ व्विज्य्यन्धनुः कपर्द्दिनोव्विशल्ल्यो बाणवाँ२॥ऽउत॥ अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः॥१०॥ यातेहे तिर्म्मीढुष्टमहस्तेबभूवतेधनुः॥ तयास्म्मान्विश्वतस्त्व मयक्ष्मयापरि भुज॥११॥ परितेधन्व नोहेतिरस्मान्वृणक्तुव्विश्वतः॥ अथोयऽइषु धिस्त वारेऽअस्म्मन्निधेहितम् ॥१२॥ अवतत्यधनुष्ट्वꣳ सहस्राक्षशतेषुधे॥ निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखा शिवोनः सुमनाभव ॥१३॥ नमस्तऽआयुधायाना ततायधृष्णवे॥ उभाब्भ्यामुततेनमो बाहुब्भ्यान्तवधन्वने ॥१४॥ मानो महान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्त मुतमानऽउक्षितम्॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः ॥१५॥ मानस्तोकेतनये मानऽआयुषि मानोगोषुमानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानोव्वीरान्नुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे ॥१६॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः महाभिषेकस्नानं समर्पयामि।

॥ अमृताभिषेकोऽस्तु, ॐसदाशिवार्पणमस्तु ॥

गन्धोदकस्नानम्– **ॐगन्धर्व्वस्त्वा व्विश्वावसुः परिदधातुव्विश्वस्या रिष्टचैयजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः।।**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि गन्धोदक स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शङ्करजी को चन्दन मिश्रित जल से स्नान करायें।।

विजयास्नानम्– **व्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाण वाँ२।। ऽउत।। अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विजयास्नानं समर्पयामि विजया स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

मधुपर्क– **ॐयन्मधुनो मधव्यं परमꣳ रूपमन्नाद्यम्। तेनाहं मधुनो मधव्येन परमेण रूपेणान्नाद्येन परमो मधव्योन्नादोसानि।।**

आज्यं दधि मधु श्रेष्ठं पात्रयुग्म समन्वितम्।
मधुपर्कं गृहाणत्वं प्रसन्नोभव शङ्कर।।
सर्वकालुष्यहीनाय परिपूर्ण सुखात्मने।
मधुपर्कं सुदेवेश कल्पयामि प्रसीद मे।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मधुपर्कं समर्पयामि।

घी, दही एवं शहद तीनों को किसी स्वच्छ पात्र में एकत्रित कर अनामिका व अँगुष्ठ के माध्यम से शङ्करजी को अर्पित करें।

सुगन्धिततेलादिस्नानम्– **स्नेहं स्नेहेन मे गृह्ण लोकनाथ महायशः।**
सर्वलोकेश शुद्धात्मन् ददामि स्नेहमुत्तमम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धिततेलादिस्नानम् समर्पयामि।

सुगन्धित तेल (इत्र) आदि से स्नान कराएँ

ततः यवगोधूम-तिल-सर्षपबिल्वमज्जाचूर्णैः कृत्वा तप्तोदकेन देवं स्नापयेत्।

शुद्धोदकस्नानम्–**ॐशुद्धवालः सर्व्वशुद्धवालोमणिवालस्तऽआश्विनाः। श्श्येतः श्येताक्षोरुणस्ते रुद्द्रायपशुपतये कण्र्णायामाऽअवलिप्ता रौद्द्रा नभोरूपाः पार्ज्जन्याः।।**

गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि स्नानं च प्रतिगृह्यताम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि।

शुद्ध जल से स्नान करायें।

अधोवस्त्रम्– **ॐअसौयोवसर्प्पति नीलग्रीवोव्विलोहितः।।**

उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्रन्नु दहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः।।

ब्रह्माण्डमेतत् दययाप्यखण्डं सम्पन्नमेभिर्वसनैस्तनोषिः।
तस्मै प्रदेयः किमुवस्त्र खण्डः तथापि भावोऽस्तु परीक्षणाय।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अधोवस्त्रं समर्पयामि।

अधोवस्त्र चढ़ायें और थोड़ा सा जल छोड़ें।

यज्ञोपवीतम्– **ॐनमोस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।। अथोयेऽअस्य सत्त्वानो हन्तेब्भ्यो करन्नमः।।**

आलिङ्य ते यस्य शताग्रभागं पूता विमुक्ता वपुषोऽधमास्ते।
यज्ञोपवीतं किमुतस्य पूत्यै दीयेत भक्तेस्तु समर्थनाय।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः ब्रह्मसूत्रं समर्पयामि।

जनेऊ चढ़ायें और थोड़ा सा जल छोड़ें।

उपवस्त्रम्– **ॐसुजातो ज्ज्योतिषा सहशर्म्मव्वरूथ मासदत्स्वः। व्वासोऽ अग्ने व्विश्वरूपꣳ संव्ययस्व व्विभावसो।।**

श्रद्धातुरीर्यत्र मनस्तु सूत्रं भक्तिश्च वेमामति तानयुग्मम्।
हृल्कौलिको मे विमलोत्तरीयं तनोमि तत्ते तनु कल्पवल्याम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रोपवस्त्रान्ते आचमनीयं समर्पयामि, हस्तप्रक्षालनम्।

उपवस्त्र चढ़ायें और थोड़ा सा जल छोड़ें।

गन्धम् (चन्दनम्)– **ॐप्रमुञ्चधन्व नस्त्व मुभयो रात्कर्न्योज्ज्यार्म्।। याश्चते हस्त ऽइषवः पराता भगवोव्वप।।**

आनन्दगन्धं विकिरन्ति यत्र वृन्दारकाः पृच्छति तत्र को माम्।
मयापि हे नाथ हृदोपनीतं द्रव्यं सुगन्धं विमलं गृहाण।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः चन्दनम् समर्पयामि।

चन्दन लगायें

भस्मम्– **ॐप्रसद्यभस्मना योनि मपश्च पृथिवीमग्ने। सꣳ सृज्ज्य मातृ भिष्ट्वज्ज्योतिष्मान् पुनरा सदः।।**

यदङ्ग संसर्गकृतावरेण्यं मौलौ निजे सङ्गमयन्ति देवाः।
देहे सदैवाहित विश्वभारे सारे जगत्या वितनोति भस्म।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः भस्मं विलेपयामि।(भस्म लगायें)

अक्षतान् (चावल)– **ॐअक्षन्नमी मदन्तह्यवप्रियाऽअधूषत्। अस्तोषत स्वभावनो व्विप्रानविष्ठया मती यो जान्विन्द्रते हरी।।**

पुष्पाक्षतानक्षतपुण्यराशिः आदाय तुभ्यं समुपस्थितोऽस्मि।
एतर्हि लज्जा नतमस्तकोऽस्मि द्रुतं गृहीत्वा कुरु मां कृतार्थतम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः अक्षतान् समर्पयामि।

अक्षत (चावल) चढ़ायें।

पुष्पाणि पुष्पमाल्यां च– **ॐओषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः। अश्वाऽइव सजित्त्वरीर्व्वी रुधः पारयिष्णवः।।**

आसेचनं पेलवपादयुग्मं कृते कठोरः क्व सुमनोपहारः।
धाष्ट्र्योद्भवं मे त्वपराधमेनं क्षमस्व दीनस्य नु दीनबन्धो।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवतेसाम्बसदाशिवाय नमः पुष्पाणि पुष्पमाल्यां च समर्पयामि।

पुष्प एवं पुष्प माला चढ़ायें।

निम्नलिखित मन्त्रों से नाना प्रकार के पुष्प एवं पत्र आदि चढ़ायें–

ॐसर्वगाय नमः अर्कपुष्पं समर्पयामि। ॐसर्वदेवाय नमः शतपत्रं समर्पयामि। ॐभगवते नमः करवीरपुष्पं समर्पयामि। ॐगुह्यगुह्याय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐसोमाय नमः द्रोणपुष्पं समर्पयामि। ॐभूतनाथाय नमः अपामार्गं समर्पयामि। ॐभावाय नमः कुशपुष्पं समर्पयामि। ॐभवाय नमः शमीपत्रं समर्पयामि। ॐसर्वगुह्याय नमः नीलोत्पलं समर्पयामि। ॐवेदगुह्याय नमः पद्मपुष्पं समर्पयामि। ॐसर्वगुह्याय नमः धत्तूरं समर्पयामि। ॐसोमाय नमः शमीपुष्पं समर्पयामि। ॐकटङ्काय नमः नीलमुत्पलं समर्पयामि। ॐमहादेवाय नमः बकपुष्पं समर्पयामि। ॐसूक्ष्मिणे नमः कदम्बपुष्पं समर्पयामि। ॐरुद्राय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐहरये नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐभवाय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐशिवाय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐसर्व लोकेश्वराय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐमहेश्वराय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐईशानाय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐमखेशाय नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि। ॐपशूनां पतये नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि।

बिल्वपत्रम्- **ॐनमोबिल्म्मिनेचकवचिनेचनमो व्वर्म्मिणेचव्वरूथि नेचनमः श्श्रुतायचश्श्रुतसेनायचनमो दुन्दुब्भ्यायचाहनन्त्याय च॥**

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्म पापसंहारं एक बिल्वं शिवार्पणम्।।
तुलसी-बिल्व-निर्गुण्डी जम्बीरामलकं तथा।
पञ्चबिल्वमितिख्यातं एक बिल्वं शिवार्पणम्।।

बिल्वपत्रं सुवर्णस्य त्रिशूलाकारमेव च।
मयार्पितं तु तच्छम्भो गृहाण परमेश्वर।।

श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः बिल्वपत्राणि समर्पयामि। (बेलपत्र चढ़ायें।)

दूर्वाङ्कुरान्– **ॐकाण्डात् काण्डात् प्ररोहन्तीपरुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्व्वेप्रतनु सहस्रेणशतेन च।।**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः एकादश दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि।

दूर्वाङ्कुर चढ़ायें।

शमीपत्रम्– **ॐअग्नेस्तनू रसिव्वाचोव्विसर्जनन्देववीतयेत्त्वागृह्णामि बृहद्ग्रावासि व्वानस्प्पत्यः सऽइदन्देवेब्भ्यो हविः शमीष्व सुशमिशमीष्व। हविष्कृदेहि हविष्कृदेहि।।**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः शमीपत्राणि समर्पयामि।

शमीपत्र चढ़ायें।

तुलसीमञ्जरी– **ॐशिवो भव प्प्रजाब्भ्यो मानुषीब्भ्यस्त्वमङ्गिरः। माद्यावा पृथिवीऽ अभिशोचीर्म्मान्तरिक्षम्मा व्वनस्पतीन्।।**

मिलत् परिमलामोद भृङ्गसङ्गीत संस्तुतम्।
तुलसी मञ्जरीं मञ्जु अञ्जसां स्वीकुरु प्रभो।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः तुलसी मञ्जरीं समर्पयामि।

तुलसी मञ्जरी चढ़ायें।

अभूषणम्– **ॐयुवन्तमिन्द्रा पर्व्वता पुरोयुधायोनः पृतन्या दपतन्त मिद्धतं व्वज्ज्रेण तन्त मिद्धतम्। दूरे चत्ताय यच्छन्त्सद्गहनँय्यदि नक्षत्।। अस्म्मा कः शत्रून्परि शूरव्विश्श्वतो दर्म्मा दर्षीष्टृव्विश्श्वतः।। भूर्ब्भुवः स्वः सुप्प्रजाः प्रजाभिः स्यामसुवीराव्वीरैः सुपोषाः पोषैः।।**

वज्र माणिक्य वैदूर्य मुक्ता विद्रुम मण्डितम्।
पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।।
स्वभावसुन्दराङ्गाय नानाशक्त्याश्रयाय ते।
भूषणानि विचित्राणि कल्पयामि प्रसीद मे।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः आभूषणं समर्पयामि।

माता पार्वती को यथा साध्य हार पायजेब, बिछुए, कङ्कण आदि अभूषण चढ़ायें।

नानापरिमलद्रव्याणि– **ॐअहिरिवभोगैः पर्य्येतिबाहुञ्ज्याया हेतिम्परि बाधमानः। हस्तघ्नो व्विश्श्वा व्वयुनानि व्विद्वान्पुमान्पुमाꣳ सम्परिपातु व्विश्श्वतः।।**

श्वेतचूर्ण रक्तचूर्ण हरिद्राकुंकुमान्वितैः।
नानापरिमलं द्रव्यैः प्रीयतां परमेश्वर।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः नानापरिमलद्रव्याणि समर्पयामि।

अबीर, गुलाल हल्दी आदि चढ़ायें।

सुगन्धित द्रव्याणि– **ॐत्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम्।। उर्व्वा रुकमिव बन्धनान्मृत्यो र्म्मुक्षीयमामृतात्।। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम्पति वेदनम्।। उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीयमा मुतः।।**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः सुगन्धित द्रव्यं समर्पयामि।

इत्र आदि सुगन्धित द्रव्य चढ़ायें।

सिन्दूरम्– **सिन्धोरिवप्राद्ध्वने शूघनासो व्वातप्रमियः पतयन्ति जह्वाः। घृतस्यधाराऽअरुषो न व्वाजी काष्ठाभिन्दन्नूर्म्मिभिः पिन्वमानः।।**

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि।

जलहरी मे या माता पार्वती को सिन्दूर चढ़ायें।

–: पञ्चवक्त्र पूजन :–

गन्धाक्षत, पुष्प तथा बिल्वपत्र लेकर निम्नलिखित ध्यानमन्त्रों का पाठ करते हुए भगवान् सदाशिव के पाँचों मुखों का पूजन करें। सर्वप्रथम सद्योजात नामक पश्चिम मुख का पूजन करें–

(१) पश्चिमवक्त्र–पूजनम्

ॐसद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः।।

प्रालेयामलबिन्दुकुन्दधवलं गोक्षीरफेनप्रभं
भस्माभ्यङ्गमनङ्गदेहदहनज्वालावलीलोचनम्।
ब्रह्मेन्द्राग्निमरुद्गणैः स्तुतिपरैरभ्यर्चितं योगिभि–
र्वन्देऽहं सकलं कलङ्करहितं स्थाणोर्मुखं पश्चिमम्।।

शुभ्रं त्रिलोचनं नाम्ना सद्योजातं शिवप्रदम्।
शुद्धस्फटिक सङ्काशं वन्देऽहं पश्चिमं मुखम्।।

ॐ सद्योजाताय पश्चिमवक्त्राय नमः सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

(२) उत्तरवक्त्र–पूजनम्

ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणायनमो बलायनमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥

गौरं कुङ्कुमपिङ्गलं सुतिलकं व्यापाण्डुगण्डस्थलम्
भ्रूविक्षेपकटाक्षवीक्षणलसत्संसक्तगर्णोत्पलम्।
स्निग्धं बिम्बफलाधरं प्रहसितं नीलालकालङ्कृतं
वन्दे पूर्णशशाङ्कमण्डलनिभं वक्त्रं हरस्योत्तरम्।।
वामदेवं सुवर्णाभं दिव्यास्त्रगणसेवितम्।
अजन्मानमुमाकान्तं वन्देऽहं ह्युत्तरं मुखम्।।

ॐ वामदेवाय उत्तरवक्त्राय नमः सकलपूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

(३) दक्षिणवक्त्र–पूजनम्

ॐ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

कालाभ्रभ्रमराञ्जनाचलनिभं व्यावृत्तपिङ्गेक्षणं
खण्डेन्दुद्वयमिश्रितांशुदशन–प्रोद्भिन्नदंष्ट्राङ्कुरम्।
सर्पप्रोतकपालशक्तिसकलं व्याकीर्णसच्छेखरं
वन्दे दक्षिणमीश्वरस्य कुटिलं भ्रूभङ्गरौद्रं मुखम्।।
नीलाभ्रवरणमोङ्कारमघोरं घोरदंष्ट्रकम्।
दंष्ट्राकरालमत्युग्रं वन्देऽहं दक्षिणं मुखम्।।

ॐ अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

(४) पूर्ववक्त्र–पूजनम्

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नोरुद्रः प्रचोदयात्॥

संवर्ताग्नितडित्प्रतप्तकनक–प्रस्पर्धितेजोऽरुणं
गम्भीरस्मितनिः सृतोग्रदशनं प्रोद्भासिताम्राधरम्।

बालेन्दुद्युतिलोलपिङ्गलजटा-भारप्रबद्धोरगं
वन्दे सिद्धसुरासुरेन्द्रनमितं पूर्वं मुखं शूलिनः।।
बालार्कवर्णमारक्तं पुरुषं च तडित्प्रभम्।
दिव्यं पिङ्गजटाधारं वन्देऽहं पूर्वदिङ्मुखम्।।

ॐ तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

(५) ऊर्ध्वमुख-पूजनम्

ॐईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमेऽअस्तु सदाशिवोऽम् ॥

व्यक्ताव्यक्तगुणोत्तरं सुवदनं षट्त्रिंशतत्त्वाधिकं
तस्मादुत्तरतत्त्वमक्षयमिति ध्येयं सदा योगिभिः।
वन्दे तामसवर्जितेन मनसा सूक्ष्मातिसूक्ष्मं परं
शान्तं पञ्चममीश्वरस्य वदनं खव्यापि तेजोमयम्।।
ईशानं सूक्ष्ममव्यक्तं तेजः पुञ्जपरायणम्।
अमृतस्रावि चिद्रूपं वन्देऽहं पञ्चमं मुखम्।।

ॐ ईशानाय ऊर्ध्ववक्त्राय नमः सकल पूजनार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

-: अङ्गपूजनम् :-

यदि रुद्राभिषेक करना है तो अङ्ग पूजन से लेकर अष्टोत्तरशत नामावलि तक का पूजन क्रम अभिषेक के उपरान्त करना चाहिये।

गन्ध, अक्षत एवं पुष्प आदि से भगवान् शिव की इस प्रकार अङ्ग पूजा करें-

ॐईशानाय नमः पादौ पूजयामि। ॐशङ्कराय नमः जंघे पूजयामि। ॐशूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि।। ॐशम्भवे नमः कटी पूजयामि। ॐस्वयम्भुवे नमः गुह्यं पूजयामि। उदकोपस्पर्शः (हाथ धो लें)। **ॐमहादेवाय नमः नाभिं पूजयामि। ॐविश्वकर्त्रे नमः उदरं पूजयामि। ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि। ॐस्थाणवे नमः स्तनौ पूजयामि। ॐनीलकण्ठाय नमः कण्ठं पूजयामि। ॐशिवात्मने नमः मुखं पूजयामि। ॐरुद्राय नमः कर्णौ पूजयामि। ॐत्रिनेत्राय नमः नेत्रे पूजयामि। ॐशर्वाय नमः ललाटं पूजयामि। ॐनागभूषणाय नमः शिरः पूजयामि। ॐदेवाधिदेवाय नमः सर्वाङ्गं पूजयामि।**

-: आवरण पूजनम् :-

ॐअघोराय नमः अघोरं पूजयामि। ॐपशुपतये नमः पशुपतिं पूजयामि। ॐशिवाय नमः शिवं पूजयामि। ॐविरूपाय नमः विरूपं

पूजयामि। ॐविश्वरूपाय नमः विश्वरूपं पूजयामि। ॐभैरवाय नमः भैरवं पूजयामि। ॐत्र्यम्बकाय नमः त्र्यम्बकं पूजयामि। ॐशूलपाणये नमः शूलपाणिं पूजयामि। ॐकपर्दिने नमः कपर्दिनं पूजयामि। ॐईशानाय नमः ईशानं पूजयामि। ॐमहेशाय नमः महेशं पूजयामि। (इत्येकादश रुद्रान् सम्पूज्य।)

उपर्युक्त प्रकार से ही ग्यारह शक्तियों का भी पूजन करें-

-: एकादश शक्तिपूजनम् :-

ॐभगवत्यै नमः भगवतीं पूजयामि। ॐउमायै नमः उमां पूजयामि। ॐशङ्करप्रियायै नमः शङ्करप्रियां पूजयामि। ॐपार्वत्यै नमः पार्वतीं पूजयामि। ॐगौर्यै नमः गौरीं पूजयामि। ॐकालिन्द्यै नमः कालिन्दीं पूजयामि। ॐकाटिव्यै नमः काटिवीं पूजयामि। ॐविश्वधारिण्यै नमः विश्वधारिणीं पूजयामि। ॐविश्वेश्वर्यै नमः विश्वेश्वरीं पूजयामि। ॐविश्वमात्रे नमः विश्वमातृं पूजयामि। ॐशिवायै नमः शिवां पूजयामि।

(इतिशक्तीः पूजयेत्)

-: गण पूजनम् :-

ॐ गणपतये नमः गणपतिं पूजयामि। ॐकार्तिकाय नमः कार्तिकं पूजयामि। ॐपुष्पदन्ताय नमः पुष्पदन्तं पूजयामि। ॐकपर्दिने नमः कपर्दिनं पूजयामि। ॐभैरवाय नमः भैरवं पूजयामि। ॐशूलपाणये नमः शूलपाणिं पूजयामि। ॐईश्वराय नमः ईश्वरं पूजयामि। ॐदण्डपाणये नमः दण्डपाणिं पूजयामि। ॐनन्दिने नमः नन्दिनं पूजयामि। ॐमहाकालाय नमः महाकालं पूजयामि।

-: अष्टमूर्ति पूजनम् :-

प्रत्येक नाम से अष्टमूर्तियों का ध्यान कर शिवलिङ्ग के आठों दिशाओं मे अक्षत-पुष्प छोड़ें-

ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः (प्राच्याम्)। ॐ भवाय जलमूर्तये नमः (ईशान्याम्)। ॐरुद्राय अग्निमूर्तये नमः (उदीच्याम्)। ॐउग्राय वायुमूर्तये नमः (वायव्याम्)। ॐभीमाय आकाशमूर्तये नमः (प्रतीच्याम्)। ॐपशुपतये यजमानमूर्तये नमः (नैर्ऋत्याम्)। ॐमहादेवाय सोममूर्तये नमः (दक्षिणस्याम्)। ॐईशानाय सूर्यमूर्तये नमः (आग्नेयाम्)।

ह्रीं उमायै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि।

अष्टोत्तर शतनामभिः शिवार्चनम्

(१०८ नामों से शिवार्चन)

हाथ में जल लेकर विनियोग पढ़ें–

ॐअस्य श्रीशिव अष्टोत्तरशतनाम मन्त्रस्य नारायणऋषिः श्रीसदा शिवोदेवता अनुष्टुप् छन्दः गौरीशक्तिः श्रीशिवप्रीत्यर्थं अष्टोत्तरशत नामभिः शिवार्चने विनियोगः।

विनियोग पढ़कर जल किसी पात्र में छोड़ दें।

ध्यानम्

हाथ में अक्षत-पुष्प-बिल्वपत्र लेकर भगवान आशुतोष का ध्यान करें–

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरिनिभं चारुचन्द्रा वतंसं
रत्नाकल्पो ज्वलाङ्गं परशु मृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुत ममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

भगवान् शिव के १०८ नामों का उच्चारण करते हुए एक-एक विल्वपत्र चढ़ायें–

१. ॐशिवाय नमः। २. ॐमहेश्वराय नमः। ३. ॐशम्भवे नमः। ४. ॐपिनाकिने नमः। ५. ॐ शशिशेखराय नमः। ६. ॐ वामदेवाय नमः। ७. ॐ विरूपाक्षाय नमः। ८. ॐकपर्दिने नमः। ९. ॐनीललोहिताय नमः। १०. ॐशङ्कराय नमः। ११. ॐशूल पाणये नमः। १२. ॐखट्वाङ्गिने नमः। १३. ॐविष्णुवल्लभाय नमः। १४. ॐशिपि विष्टाय नमः। १५. ॐअम्बिकानाथाय नमः। १६. ॐश्रीकण्ठाय नमः। १७. ॐ भक्त वत्सलाय नमः। १८. ॐभवाय नमः। १९. ॐशर्वाय नमः। २०. ॐ त्रिलोकीनाथाय नमः। २१. ॐशितिकण्ठाय नमः। २२. ॐशिवाप्रियाय नमः। २३. ॐउग्राय नमः। २४. ॐ कपालिने नमः। २५. ॐ कामारये नमः। २६. ॐ अन्धकासुर सूदनाय नमः। २७. ॐ गङ्गाधराय नमः। २८. ॐ ललाटाक्षाय नमः। २९. ॐ कालकालाय नमः। ३०. ॐकृपानिधये नमः। ३१. ॐभीमाय नमः। ३२. ॐपरशुहस्ताय नमः। ३३. ॐ मृग पाणये नमः। ३४. ॐजटाधराय नमः। ३५. ॐ कैलाशवासिने नमः। ३६. ॐ कवचिने नमः। ३७. ॐ कठोराय नमः। ३८. ॐ त्रिपुरान्तकाय नमः। ३९.

ॐ वृषाङ्काय नमः। ४०. ॐवृषभारूढाय नमः। ४१. ॐभस्मोद्धूलित विग्रहाय नमः। ४२. ॐसामप्रियाय नमः। ४३. ॐस्वरमयाय नमः। ४४. ॐत्रिमूर्तये नमः। ४५. ॐअश्विनीश्वराय नमः। ४६. ॐसर्वज्ञाय नमः। ४७. ॐ परमात्मने नमः। ४८. ॐ सोमसूर्याग्निलोचनाय नमः। ४९. ॐ हविषे नमः। ५०. ॐयज्ञमयाय नमः। ५१. ॐपञ्चवक्त्राय नमः। ५२. ॐ सदाशिवाय नमः। ५३. ॐ विश्वेश्वराय नमः। ५४. ॐ गणनाथाय नमः। ५५. ॐ वीरभद्राय नमः। ५६. ॐ प्रजापतये नमः। ५७. ॐ हिरण्यरेतसे नमः। ५८. ॐ दुर्द्धर्षाय नमः। ५९. ॐ गिरीशाय नमः। ६०. ॐ गिरिशाय नमः। ६१. ॐ अनघाय नमः। ६२. ॐ भुजङ्गभूषणाय नमः। ६३. ॐ भर्गाय नमः। ६४. ॐ गिरिधन्वने नमः। ६५. ॐगिरिप्रियाय नमः। ६६. ॐअष्टमूर्तये नमः। ६७. ॐअनेकात्मने नमः। ६८. ॐ सात्त्विकाय नमः। ६९. ॐ शुभविग्रहाय नमः। ७०. ॐशाश्वताय नमः। ७१. ॐ खण्डपरशवे नमः। ७२. ॐअजाय नमः। ७३. ॐपाशविमोचकाय नमः। ७४. ॐकृत्ति वाससे नमः। ७५. ॐपुरारातये नमः। ७६. ॐभगवते नमः। ७७. ॐ प्रमथाधिपाय नमः। ७८.ॐमृत्युञ्जयाय नमः। ७९. ॐसूक्ष्मतनवे नमः। ८०.ॐ जगद्व्यापिने नमः। ८१. ॐ जगद्गुरवे नमः। ८२. ॐजनकाय नमः। ८३. ॐ चारु विक्रमाय नमः। ८४. ॐ रुद्राय नमः। ८५. ॐ भूतपतये नमः। ८६. ॐ स्थाणवे नमः। ८७. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः। ८८. ॐ दिगम्बराय नमः। ८९. ॐ मृडाय नमः। ९०. ॐपशुपतये नमः। ९१. ॐदेवाय नमः। ९२. ॐमहादेवाय नमः। ९३. ॐअव्य याय नमः। ९४. ॐ हरये नमः। ९५. ॐ पुष्पदन्तभिदे नमः। ९६. ॐ भगनेत्रभिदे नमः। ९७. ॐ अपवर्गप्रदाय नमः। ९८. ॐ अव्यग्राय नमः। ९९. ॐ अव्यक्ताय नमः। १००. ॐअनन्ताय नमः। १०१. ॐदक्षाध्वरहराय नमः। १०२. ॐसहस्राक्षाय नमः। १०३. ॐ तारकाय नमः। १०४. ॐ हराय नमः। १०५. ॐ सहस्रपदे नमः। १०६. ॐश्रीपरमेश्वराय नमः। १०७. ॐव्रताधिपाय नमः।

१०८. ॐजगते नमः।

यदि रुद्राभिषेक करना है तो अङ्ग पूजन से लेकर अष्टोत्तरशत नामावलि तक का पूजन क्रम अभिषेक के उपरान्त करना चाहिये।

श्रद्धावनत होकर भगवान् आशुतोष की १०८ नामों से अर्चना कर धूप-दीप आदि दिखाकर कपड़े से ढक कर भोग लगायें–

धूपम्– ॐयातेहे तिर्म्मीढुष्ट्टमहस्तेबभूवतेधनुः।। तयास्म्मान्विश्व तस्त्व मयक्ष्मया परिभुज।।

कालागुरोश्च घृतमिश्रित गुग्गुलस्य धूपो मया विरचितो भवतः पुरस्तात्।
आघ्राय तं शुचिमनोहर गन्धचूर्णं तूर्णं विनाशय महेश्वर मोह जालम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः धूपमाघ्रापयामि। (धूप दिखायें)

दीपम्– ॐपरितेधन्वनोहे तिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथोयऽइषु धिस्तवारेऽ अस्म्मन्निधे हितम्।।

अज्ञान गाढाञ्जन सङ्कुलायां विद्याप्रदीपं तनुषे जगत्याम्।
तस्मै प्रदेयः किमसौ तथापि भक्त्यार्पितं दीपमिमं गृहाण।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः दीपं दर्शयामि। धूप दीपान्ते आचमनीयं जलं सर्पयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

दीपक दिखायें और एक आचमनी जल छोड़कर हाथ धो लें।

नैवेद्यम्– ॐअवतत्यधनुष्ट्वꣳ सहस्राक्षशतेषुधे।। निशीर्य्यशल्ल्या नाम्मुखा शिवोनः सुमनाभव।।

आहत्य चाहत्य मनोभिरागैः इतस्तनोऽशान्तमना सुरेश।
नैवेद्यमेतत् भवते निवेद्य जातोऽस्मि सद्यो विशदान्तरात्मा।।
ॐभूर्भुवः स्वःश्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

शिवजी के सामने भोग में विल्वपत्र रख कर निवेदन करें एवं जल छोड़ें।

धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य ग्रासमुद्राः प्रदर्शयेत्।

धेनु–मुद्रा से अमृती करण करें एवं योनिमुद्रा दिखायें तथा घण्टी बजायें। पश्चात् पञ्चग्रास मुद्रा दिखाकर प्रत्येक मुद्रा में जल छोड़ते जायँ।

ॐप्राणाय स्वाहा। ॐअपानाय स्वाहा। ॐव्यानाय स्वाहा। ॐउदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। मध्ये-मध्ये पानीयं उत्तरा-पोशनार्थे जलं समर्पयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य।

(सम्मुख में पाँच बार जल छोड़ें और हाथ धो लें)

ऋतुफलम्– ॐयाः फलिनीर्य्याऽअफलाऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चत्वꣳ हसः।।

इदं फलं मयादेव स्थापितं पुरतस्तव।
तेन मे सफलावाप्तिः भवेज्जन्मनि जन्मनि।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः ऋतुफलम् समर्पयामि।

ऋतुफल (केला आदि) चढ़ायें।

धत्तूर फलम्– ॐकार्षिरसि समुद्रस्यत्वा क्षित्या उन्नयामि। समापोऽअद्भिरग्मत समोषधी भिरोषधीः।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः धत्तूर फलं समर्पयामि।

धत्तूरफल चढ़ायें।

मुखवासार्थे ताम्बूलम्– ॐनमस्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे।। उभाभ्ब्या मुतते नमो बाहुबभ्यान्तव धन्वने।।

एतावता कृत् करुणाप्रसारे तस्यैव तावत्क्रमशोऽवतारे।
ताम्बूलवल्ली फलितं तदेतत् ताम्बूलपत्रं दयया गृहाण।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः मुखवासार्थे सफल ताम्बूलम् समर्पयामि। (पान, सुपाड़ी, लौंग एवं इलायची चढ़ायें)

नारिकेलफलम्– ॐश्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणि रूपमश्श्विनौव्व्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽ इषाण।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः नारिकेलफलम् समर्पयामि।

नारियल चढ़ायें।

दक्षिणाद्रव्यम्– ॐमानोमहान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुत मानऽउक्षितम्।। मानोव्वधीः पितरम्मोतरम्मानः प्प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः

आतन्वसे त्वं करुणां जगत्यां इमां ददत्ते वत लज्जितोऽस्मि।
मप्येव तावत्करुणां वितन्यतां दक्षिणा मेकलयाशु नाथ।।
दक्षिणा स्वर्णसहिता यथाशक्ति समर्पिता।
अनन्त फलदामेन गृहाण परमेश्वर।।

ॐभूर्भुवःस्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे दक्षिणाद्रव्यं समर्पयामि। (दक्षिणा (रुपये) चढ़ायें)

विशेषार्घ्यम्

जल-गन्धाक्षत-फल-पुष्प-दूर्वा-दक्षिणा एकस्मिन्पात्रे प्रक्षिप्य अवनिकृत जानुमण्डलं कृत्वा, अर्घ्यपात्रं अञ्जलिना गृहीत्वा मन्त्रं पठेत्–

जल–गन्ध–अक्षत–फल–पुष्प–दूर्वा–दक्षिणा एक पात्र में एकत्रित कर विशेषार्घ्य चढ़ायें–

विशेषार्घ्यम्– ॐमानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्वे षुरीरिषः। मानोव्वीरान्नुद्रभामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे॥

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि।

तर्पणम्- (साक्षत् जलेन तर्पणं कार्य्यम्)

ॐ भवं देवं तर्पयामि। ॐ शर्वं देवं तर्पयामि। ॐ ईशानं देवं तर्पयामि। ॐ पशुपतिं देवं तर्पयामि। ॐ उग्रं देवं तर्पयामि। ॐ रुद्रं देवं तर्पयामि। ॐ भीमं देवं तर्पयामि। ॐ महान्तं देवं तर्पयामि। ॐ भवस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ शर्वस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ ईशानस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ पशुपतेर्देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ उग्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ रुद्रस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ भीमस्य देवस्य पत्नीं तर्पयामि। ॐ महान्तो देवस्य पत्नीं तर्पयामि।

–: आरार्तिक्यम् (आरार्तिकां प्रज्वाल्य) :–

ॐज्वालामालिन्यै नमः गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। इति गन्धादिना आरार्तिकं सम्पूज्य। (गन्ध-अक्षत आदि से आरती की पूजा करें।)

दीपं हि परमं शम्भो घृत प्रज्वलितं मया।
दत्तं गृहाण देवेश ममज्ञान प्रदोभव।।
दीपावलिं मया दत्तां गृहाण परमेश्वर।
आरार्तिक प्रदानेन मम तेज प्रदो भव।।

शिवजी की आरती

ॐजयशिव ओंकारा स्वामी जयशिव ओंकारा
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अर्द्धाङ्गी धारा।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजे२
हंसासन गरूड़ासन वृषवाहन साजे।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

दोय भुज चार चर्तुभुज दसभुज ते सोहे२
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

अक्षमाला वनमाला मुण्डमाला धारी२
चन्दन मृगमद चन्दा भाले शुभकारी।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघम्बर अंगे २
सनकादिक ब्रह्मादिक भूतादिक संगे।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

कर में दण्ड कमण्डलु, चक्र त्रिशूल धर्ता२
जग हर्ता जग भर्ता जग पलन कर्ता।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका२
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

काशी में विश्वनाथ विराजें नन्दो ब्रह्मचारी२
नित उठ भोग लगावें महिमा अति भारी।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

त्रिगुण शिवजी की आरती जो कोई नर गावे२
कहत शिवानन्द स्वामी मनवांछित फल पावे।।
।। ॐहर-हर-हर महादेव।।

जयशिव ॐकारा स्वामी जय शिव ॐकारा।

भोले पार्वती का प्यारा, भोले ऊपर जल धारा, भोले पीते भंगप्याला, भोले रहते मतवाला, भोले भूरि जटावाला, भोले भक्तन रखवाला, जटाओं में गंग विराजे भाल में चन्द्रमा विराजे, आसन मृग छाला, ॐहर-हर-हर महादेव।।

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदावसंतं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वे आवाहित देवताभ्यो नमः आरार्तिक्यं समर्पयामि।

जलेन शीतली करणं पुष्पैः देवाभिवन्दनं शरीरारोग्यार्थे स्वात्माभिवन्दनं करौ प्रक्षाल्य। (शीतली करण कर हस्त प्रक्षालन करें)

– मन्त्र-पुष्पाञ्जलिः –

ॐयज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्म्माणिप्प्रथमान्यासन्। तेहनाकम्महि मानः सचन्त यत्र पूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः।

ॐराजाधिराय प्रसह्यसाहिने नमोवयं वैश्रवणाय कुर्महे। समेकामान् कामकामायमह्यं कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।। कुबेरायवैश्रवणाया महाराजाय नमः। ॐस्वस्तिसाम्राज्यंभौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात्सार्वभौमः सार्वायुष आन्ता दापरार्धात्पृथिव्यैसमुद्रपर्यन्तायाऽएकराडिति। तदप्येषश्लोकोभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे आवीक्षितस्यकामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति।।

ॐव्विश्वतश्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखोव्विश्वतोबाहुरुत व्विश्वतस्पात्।। सम्बा हुब्भ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमीजनयन्देवऽएकः।।

ॐएकदन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्।
ॐगणाम्बिकायै च विद्महे कर्मसिद्धचै च धीमहि तन्नो गौरी प्रचोदयात्।
ॐहरिवक्त्राय विद्महे रुद्रवक्त्राय धीमहि तन्नो नन्दी प्रचोदयात्।
ॐतत् पुरुषाय विद्महे महासेनाय धीमहि तन्नः षण्मुखः प्रचोदयात्।
ॐतत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्।
आनन्द सौन्दर्यमयेत्वयेऽस्मिन् अमन्दगन्धे सुरवृन्द वन्द्ये।
दीनाश्रये श्रीचरणारविन्दे पुष्पाञ्जलिं ते परितः क्षिपामि।।
मन्दार-मालाङ्कुलि-तालकायै कपालमालाङ्कित-शेखराय।
दिव्याम्बरायै च दिगम्बराय नमः शिवायै च नमः शिवाय।।

नानासुगन्धि पुष्पाणि ऋतु कालोद्भवानि च।
पुष्पाञ्जलिर्मया दत्त गृहाण परमेश्वर।।
सुमन सुगन्धित सुमन ले सुमन सुभक्ति सुधार।
पुष्पाञ्जलि अर्पण करूँ शम्भु करो स्वीकार।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सर्वे आवाहित देवताभ्यो नमः मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि

–: प्रदक्षिणाम् :–

ॐये तीर्थानिप्प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः।। तेषाꣳ सहस्र योजने वधन्वा नितन्नमसि।।

प्रवर्तिता दक्षिणतोथ वामतो या दक्षिणैवास्ति सदा शिवस्य।
पदे-पदे तीर्थ फलप्रदाता प्रदक्षिणां ते परितः करोमि।।

–: प्रणाम :–

सुनविनती सर्वज्ञशिव देखि विप्र अनुराग।
पुनिमन्दिर नभवाणी भई द्विज वर-वर माँग।।
जो प्रसन्न प्रभु मोहुपर नाथ दीन पर नेह।
निजपद भक्ति देहुँ मोहि फिर दूसर वर देहुँ।।
तवमाया बस जीव-जड़ संतत फिरय भुलान।
तिन पर क्रोध न करिय प्रभु दीनबन्धु भगवान।।
शंकर दीन दयालप्रभु मो पर होहुँ कृपाल।
श्राप अनुग्रह होई जिमि नाथ थोरेहुँ काल।।

शिवसमान दाता नहीं विपदविदारण हार।
लज्जा सबकी राखियो नन्दी के असवार।।
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्कर पादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः।।
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।।
नमः सर्व हितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टाङ्गोऽयं प्रणामस्ते प्रयत्नेन मया कृतः।।

भगवते श्रीसाम्बसदाशिवाय नमः प्रार्थनापूर्वकं नमस्कारान् समर्पयामि।

(प्रणाम निवेदित करें)

–: क्षमा प्रार्थना :–

हस्ते अक्षत पुष्पाणि गृहीत्वा प्रार्थनां कुर्यात्
वन्दे देवमुमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत् कारणम्
वन्देपन्नग भूषणंमृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्यशशाङ्क वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियम्
वन्देभक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवंशङ्करम्।।
वन्दे महेशं सुरसिद्ध सेवितं, भक्तैः सदा पूजित पादपद्मम्।
ब्रह्मेन्द्र-विष्णु प्रमुखैश्च वन्दितं, ध्यायेत्सदा कामदुघं प्रसन्नम्।।
शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर, मुकुटं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्
शूलं वज्रं च खडगं परशुमभयदं, दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुक सहितं, साङ्कुशं वामभागे
नाना लङ्कारयुक्तं स्फटिकमणि निभं, पार्वतीशं नमामि।।

त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्ध धारिणे।
त्रिशूल धारिणे तुभ्यं भूतानां पतये नमः।।
गङ्गाधर नमस्तुभ्यं वृषध्वज नमोऽस्तुते।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो-भूयो नमो नमः।।
पापोऽहं पापकर्माऽहं पापात्मा पाप सम्भवः।
त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपाप हरो भव।।
निवासः कैलासे विधिशतमखाद्याःस्तुतिकराः
कुटुम्बं त्रैलोक्यं कृतकरपुटः सिद्धिनिकरः।

महेशः प्राणेशस्तदव निधराधीश तनये
न ते सौभाग्यस्य क्वचिदपि मनागस्ति तुलना।।
वृषो वृद्धोयानं विषम शनमाशा निवसनं
श्मशानं क्रीडाभूर्भुजग निवहो भूषणविधिः।
समग्रा सामग्री जगति विदितैवं स्मररिपोः
यदेतस्यैश्वर्यं तव जननि सौभाग्यमहिमा।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

– अर्घ्योदकमादाय –

यजमान हाथ में जल लेकर निम्न-लिखित वाक्य का उच्चारण कर शिवजी के समीप छोड़ दें।

ॐ इतः पूर्वप्राण-बुद्धि-देहधर्माधिकारतो जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्त्य-वस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्चामुदरेण शिश्ना यत्कृतं यदुक्तं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु।

पुनः हस्ते जलं गृहीत्वा-यजमान पुनः हाथ में किञ्चित् जल लेकर निम्नमन्त्र पढ़कर शिवजी के ऊपर छोड़ दें।

ॐसाधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपयादेव गृहाणाराधनं मम।।

पुष्पाञ्जलिमादाय-पुष्पाञ्जलि हाथ में लें-

ॐ रश्मिरूपा महादेवा अत्रपूजित देवताः।
सदा शिवाङ्गलीनास्ता सन्तिसर्वाः सुखावहाः।।

ॐभूर्भुवःस्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

– श्रेयोदान संकल्प –

आचार्य-एवं ब्राह्मण हाथ में जल-अक्षत और पुष्प लेकर इस प्रकार से संकल्प करें-

ॐअद्येत्यादिकृत्यस्य शिवार्चनाख्यस्यकर्मणो यजमानायश्रेयोदानं करिष्येः-

उपरोक्त कर्म के पश्चात् क्रमानुसार जल, पुष्प, अक्षत, सुपारी, नारियल आदि वस्तुएँ लेकर निम्न लिखित वाक्य का उच्चारण करते हुए सभी वस्तुएँ आचार्य यजमान को प्रसन्न मुद्रा से प्रदत्त करें-

– आचार्य एवं ब्राह्मण-श्रेयोदान संकल्प –

ॐभवन्नियोगेन मया अस्मिन् शिवार्चन (रुद्र, महारुद्र, अतिरुद्र याग) कर्मणि ऋत्विजैः सह कृतं यत् आचार्यत्वं उपद्रष्टृत्वं जप-होमादिकं च तदुत्पन्नं यत् अमुना साक्षत जलेन फलादिना च तुभ्यं अहं सम्प्रददे।

आचार्य कहें-**तेन श्रेयसा त्वं श्रेयोवान् भव।** यजमान कहे-**भवामि।**

आचार्य द्वारा दी गई वस्तुओं को यजमान किसी सुरक्षित स्थान पर रखें।

– आचार्य एवं ब्राह्मण दक्षिणादान संकल्प –

ॐपूर्वोच्चारित एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ वेलायां शुभ पुण्य तिथौ गोत्रः...शर्मा/वर्मा/गुप्तो/ऽहं, कृतस्य शिवार्चन (रुद्र, महारुद्र, अतिरुद्र-याग) कर्मणः साङ्गता सिद्धचर्थं तत्सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च आचार्यादिभ्यो महर्त्विग्भ्यः सूक्त पाठकेभ्यो मन्त्रजापकेभ्यो हवन-कर्तृभ्यो, अन्येभ्यश्च दक्षिणांविभज्य दातुमहमुत्सृजे।

यजमान इस प्रकार संकल्प कर आचार्य एवं ब्राह्मणों के हाथ में दक्षिणा रख दे।

– ब्राह्मण-भोजन संकल्प –

ॐपूर्वोच्चारित एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ वेलायां शुभ पुण्य तिथौ गोत्रः...शर्मा/वर्मा/गुप्तो/ऽहं, कृतस्य शिवार्चन (रुद्रयाग) कर्मणः साङ्गता सिद्धचर्थं तत् सम्पूर्ण फलप्राप्त्यर्थं च यथा संख्याकान् नानागोत्रान् नानाभिधान् ब्राह्मणान् (वा-कन्या बुटुकादीन्) भोजयिष्ये।

– गोदान संकल्प –

हाथ में जल अक्षत एवं पुष्प लेकर गोदान संकल्प करें-

ॐपूर्वोच्चारित एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ वेलायां शुभ पुण्य तिथौ गोत्रः...शर्मा/वर्मा/गुप्तो/ऽहं, कृतस्य शिवार्चन (रुद्र, महारुद्र, अतिरुद्र याग) कर्मणि साङ्गता सिद्धचर्थं तत् सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं....गोत्राय....शर्मणे आचार्याय यथा शक्ति अलंकृतां इमां सवत्सां गां रुद्र-दैवत्यां तुभ्यं अहं सम्प्रददे न मम।

गोपुच्छ, जल, अक्षत , पुष्प के सहित बाह्मण के हाथ में दे दें।

गौ के अभाव में गौ जितने की हो उतनी दक्षिणा या उससे आधी अथवा उससे भी आधी दक्षिणा दें अपनी शक्ति के अनुसार दान करें।

– पीठदान संकल्प (आचार्याय प्रधान पीठादि दद्यात्) –

ॐपूर्वोच्चारित एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ वेलायां शुभ पुण्य तिथौ कृतस्य शिवार्चन (रुद्र, महारुद्र, अतिरुद्र याग) कर्मणि साङ्गता सिद्ध्यर्थं तत् सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं इदं प्रधानपीठं ग्रहपीठं मातृकापीठं सोपस्करं दक्षिणासहितम् आचार्याय तुभ्यं अहं सम्प्रददे।

– भूयसी दक्षिणादान सङ्कल्प –

हाथ में जल, अक्षत, कुश तथा दक्षिणा लेकर भूयसी दक्षिणा का संकल्प करें–

ॐपूर्वोच्चारित एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ वेलायां शुभ पुण्य तिथौ....गोत्रः...शर्मा/वर्मा/गुप्तो/ऽहं, कृतस्य शिवार्चन (रुद्राभिषेक) कर्मणः साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं नानागोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो भूयसीदक्षिणां विभज्य दातुमुत्सृज्ये। कहकर उपस्थित सभी ब्राह्मणों को यथा शक्ति भूयसी दक्षिणा प्रदान करें।

– छायापात्र दानम् –

यजमान एक कांसे के चौड़े मुख के पात्र में घी भरकर उसमें दक्षिणा सहित सुवर्ण छोड़कर अपने मुख की छाया को देखकर ब्राह्मण को दान करे।

ब्राह्मण निम्नलिखित मन्त्र का उच्चारण करें–

ॐरूपेणवो रूपमब्भ्यागान्तु थोवोव्विश्श्ववेदा व्विभजतु। ऋतस्य पथाप्प्रेतचन्द्र दक्षिणाव्विस्वः पश्यव्व्यन्तरिक्षँय्यतस्व सदस्यैः॥

छायापात्र में मुख देखने के पश्चात् निम्नलिखित संकल्प का उच्चारण कर उस चौड़े मुख के पात्र को ब्राह्मण को दें–

ॐपूर्वोच्चारित एवं ग्रह गुण गण विशेषण विशिष्टायां शुभ वेलायां शुभ पुण्य तिथौ....गोत्रः...शर्मा/वर्मा/गुप्तो/ऽहं, ममैतच्छरीरावच्छिन्न समस्त पापक्षय-सर्वग्रहपीडा-शान्ति-शरीरोत्थार्तिनाशाय प्रासादवाञ्छाऽऽयु रारोग्यादि-सर्वसौभाग्यप्राप्तये, सर्वसौख्यप्राप्तये, च इदं स्वमुखछाया वीक्षिताज्यपूरित कांस्यपात्रं स सुवर्ण सदक्षिणाकं श्रीविष्णुदैवतं....गोत्राय... .शर्मणे सुपूजिताय ब्राह्मणाय तुभ्यं अहं सम्प्रददे।

– अभिषेक –

पूर्व स्थापित सभी कलशों का जल शुद्ध ताँबे के एक चौड़े पात्र में एकत्रित कर, दूर्वा, पञ्चपल्लव आदि लेकर आचार्य सहित सभी ब्राह्मण उत्तराभिमुख होकर, और यजमान को पूर्वाभिमुख एवं यजमान की धर्मपत्नी को उसके वामभाग मे बैठाकर उनका अभिषेक करें–

ॐदेवस्यत्वा सवितुः प्रसवेश्श्विनोर्बाहुब्भ्यां पूष्णोहस्ताब्भ्याम् ॥

ॐसरस्वत्यैव्वाचो यन्तुर्यन्त्रियेदधामि बृहस्प्पतेष्ट्वासाम्राज्येना भिषिञ्चाम्यसौ॥

ॐआपोहिष्ठ्ठामयो भुवस्तानऽऊर्ज्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥ योवः शिवतमो रसस्तस्याभाजयते हनः॥ उशतीरिव मातरः॥ तस्माऽ अरङ्गमामवो यस्यक्षयाय जिन्वथ ॥ आपोजनयथाचनः॥

ॐद्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳशान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥

ॐसुरास्त्वामभिसिञ्चन्तु ब्रह्म-विष्णु-महेश्वराः।
वासुदेवो जगन्नाथः तथा सङ्कर्षणो विभुः।।
प्रद्युम्नश्चानिरुद्धश्च भवन्तु विजयाय ते।
अखण्ड लोऽग्निर्भगवान् यमो वै निर्ऋतिस्तथा।।
वरुणः पवनश्चैव धनाध्यक्षस्तथा विभुः।
ब्रह्मणा सहिताः सर्वे दिक्पालाः पान्तु ते सदा।।
कीर्ति-र्लक्ष्मी-र्धृति-र्मेधा पुष्टिः श्रद्धा क्रिया मतिः।
बुद्धिर्लज्जावपुः शान्तिः तुष्टिः कान्तिश्च मातरः।।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु देवपत्न्यः समागताः।
आदित्यश्चन्द्रमा भौमो बुध जीव सितार्कजाः।।
ग्रहास्त्वामभिषिञ्चन्तु राहु-केतुश्च तर्पिताः।
देवदानव गन्धर्वा यक्षराक्षस पन्नगाः।।
ऋषयो मनवो गावो देव मातर एव च।
देव पत्न्यो द्रुमा नागा दैत्याश्चाप्सरसां गणाः।।

अस्त्राणि सर्व शस्त्राणि राजानो वाहनानि च।
औषधानि च रत्नानि कालस्याऽवयवाश्च ये।।
सरितः सागराः शैलाः तीर्थानि जलदा नदाः।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु धर्मकामार्थ सिद्धये।।
आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा मरुद्गणाः।
अभिषिञ्चन्तु ते सर्वे धर्मकामार्थ सिद्धये।।

॥ अमृताभिषेकोऽस्तु शान्तिः पुष्टिस्तुष्टिश्चाऽस्तु ॥

कर्ता-कृताभिषेक कर्मणः साङ्गताफल सिद्धये अभिषेक कर्तृभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दक्षिणां ददे।

– विसर्जनम् –

तेजरूप का ध्यान करते हुए पार्थिवेश्वर शिवलिङ्ग का विसर्जन करें-

यान्तुदेवगणाः सर्वे पूजामादाय मामिकीम्।
इष्टकाम समृद्धचर्थं पुनरागमनाय च ।।
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।
पूजाभ्यर्चनकाले च पुनरागमनाय च।।

'ॐनमो महादेवदेवाय' इति पठित्वा निर्वाणमुद्रया विसृजेत् ततो गणपति-स्कन्दौ विसृज्य।

ऐशान्यां जलेन मण्डलं कृत्वा **ॐव्यापक मण्डलाय नमः**। इति सम्पूज्य-**ॐचण्डेश्वराय नमः** इति निर्माल्य नैवेद्यादिकं संस्थाप्य-ध्यायेत्–

चण्डेश्वरं रक्ततनुं त्रिनेत्रं रक्तांशुकाढचं हृदि भावयामि।
टङ्कं त्रिशूलं स्फटिकाक्षमालां कमण्डलुं बिभ्रतमिन्दुचूडम्।।

इतिध्यात्वा-ॐचण्डेश्वराय नमः इति निर्माल्येन सम्पूज्य **'ॐ ध्वूं फट् चण्डेश्वर इमं बलिं गृह्ण स्वाहा'** इति तत्त्व मुद्रया चरणोदक धारादानेन समर्प्य,

ॐबलिदानेन सन्तुष्टः चण्डेशः सर्व सिद्धिदः।
शान्तिं करोतु मे नित्यं शिवभक्तिं ददातु च।।
लेह्यचोष्यान्नपानादि ताम्बूलं सग्विलेपनम्।
निर्माल्यं भोजनं तुभ्यं ददामि श्रीशिवाज्ञया।।

इति निर्माल्य पुष्पाञ्जलिं समर्प्य नाराचमुद्रांप्रदर्श्य

–निम्नमन्त्रसे विसर्जित करें–

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं परमेश्वर।
यत्र ब्रह्मादयो देवा न विदुः परमं पदम्।।
यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नाम-जपादपि।
न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्।।
इमां पूजां मया देव यथाशक्त्युपपादितम्।
रक्षार्थं च समागच्छ व्रजस्वस्थानमुत्तमम्।।

ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः त्वं कैलाशवासी भव, पुनः मृत्तिको भव।

– आशीर्वाद –

निम्नलिखित मन्त्रों से ब्राह्मण आशीर्वाद प्रदान करें–

पुनस्त्वाऽदित्यारुद्रा व्वसवः समिन्धतां पुनर्ब्रह्माणो व्वसुनीथ यज्ञैः।
घृतेनत्त्वं तन्वं व्वर्धयस्व सत्याः सन्तु यजमानस्य कामाः।।
दीर्घा युस्तऽओषधे खनिता यस्मै चत्त्वा खनाम्यहम्।
अथोत्वं दीर्घायुर्भूत्त्वा शतवल्शा व्विरोहतात्।।
श्रीवर्चस्व-मायुष्य-मारोग्य-माविधाच्छो-भमानं महीयते।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः।।
मन्त्रार्थाः सफलाः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः।
शत्रूणांबुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।

निम्नलिखित मन्त्रों से चरणोदक ग्रहण करें–

ॐबाणरावणचण्डीश नन्दि भृङ्गिरिटादयः।
शङ्करस्य प्रसादोऽयं सर्वेगृह्णन्तु शाम्भवाः।।
निर्माल्य सलिलं पीत्वा देव-देवस्य शूलिनः।
क्षयपस्मार कुष्ठाद्यैः सद्यो मुच्येत पातकैः।।
अकालमृत्यु हरणं ब्रह्महत्या विनाशनम्।
व्याधिघ्नं भक्तकायस्य शिवनिर्णेजनोदकम्।।

इति निर्माल्य जलं पीत्वा प्रणमेत्। पुनः निर्माल्य पुष्पादिकं लिङ्गञ्च नद्यादौ जलमध्ये क्षिपेत्।

॥ श्रीशिवार्चन कर्म सम्पूर्णम् ॥

अथ षडङ्गोऽङ्गन्यासः

ॐमनोजूतिर्ज्जुषता माज्ज्यस्यबृहस्प्पतिर्य्यज्ञमि मन्तंनोत्वरिष्टं य्यज्ञꣳ समिमन्दधातु ॥ व्विश्श्वेदेवासऽइहमादयन्ता मों३ प्रतिष्ठ ॥ ॐहृदयाय नमः॥१॥ ॐअबोध्द्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवा यतीमुखासम् ॥ य्यह्वाऽइव प्प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रतेना कमच्छ ॥ ॐशिरसे स्वाहा ॥२॥ ॐमूर्द्धानन्दिवोऽअरतिम्पृथिव्व्या व्वैश्श्वानरमृतऽ आजातमग्निम्।। कविꣳ सम्म्राजमतिथिञ्जनानामासन्ना पात्रञ्जनयन्तदेवाः॥ ॐशिखायै वषट्॥३॥ ॐमर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छा दयामिसो मस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्॥ उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्त्तेकृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ॥ ॐकवचाय हुम् ॥४॥ ॐव्विश्श्व तश्चक्षुरुत व्विश्वतोमुखोव्विश्श्वतोबाहुरुत व्विश्वतस्पात्॥ सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमीजनयन्देवऽएकः॥ ॐनेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥ ॐमान स्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः॥ मानोव्वीरा न्नुद्रभामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे॥ ॐअस्त्राय फट्॥६॥

॥ इति षडङ्गोऽङ्गन्यासः ॥

ध्यानम्

ध्यायेन्नित्यंमहेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रा वतंसं
रत्नाकल्पो ज्वलाङ्गं परशु मृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात्-स्तुतममरगणैर्व्याघ्रकृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिलभयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

कालहर, कष्टहर, दुःखहर, दारिद्रयहर-हर-हर-हर महादेव। नमः पार्वती पतये हर-हर महादेव शम्भो ॥

न्यास-ध्यान करके भगवान् रुद्र का अभिषेक करें। जो लोग अभिषेक के लिये धारापात्र टाँगते हों, वे अभिषेक से पूर्व **'ॐ धारापात्राधिष्ठातृदेवताभ्यो नमः'** इस मन्त्र से गन्धाक्ष पुष्प द्वारा धारापात्र का पूजन कर लें।

गणनाथ सरस्वती रविशुक्र बृहस्पतीन्।
पञ्चैतान् संस्मरेन्नित्यं वेदवाणीं प्रवर्तयेत्।।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसरस्वत्यै नमः ॥ श्रीवेदपुरुषाय नमः ॥

अथप्रथमोऽध्यायः

हरिःॐ गणानान्त्वागणपतिꣳहवामहे प्प्रियाणान्त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳहवामहे व्वसोमम ॥ आहमजानिगर्ब्भ धमात्त्वमजासि गर्ब्भधम् ॥१॥

गायत्री त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्या सह। बृहत्युष्णिहा ककुप्प् सूचीभिःशम्म्यन्तुत्त्वा ॥२॥ द्विपदायाश्श्चतुष्प्पदा स्त्रिपदा याश्श्चषट्पदाः॥ व्विच्छन्दा याश्श्चसच्छन्दाः सूचीभिःशम्म्यन्तुत्त्वा ॥३॥ सहस्तोमाः सहच्छन्दसऽआवृतःसहप्प्रमाऽऋषयःसप्तदैव्व्याः॥ पूर्व्वेषाम्पन्थामनु दृश्श्यधीराऽअन्वालेभिरेरत्थ्योनरश्मीन् ॥४॥

शिवशङ्कल्पसूक्तम्

ॐयज्जाग्ग्रतोदूरमुदै तिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति ॥ दूरङ्गमञ्ज्योति षाञ्ज्योति रेकन्तन्न्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥५॥ येनकर्म्माण्ण्यपसो मनीषिणो यज्ञेकृण्ण्वन्ति व्विदथेषुधीराः॥ यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्प्रजानान्तन्न्मेमनः शिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥६॥ यत्प्रज्ञानमुतचेतो धृतिश्श्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मक्क्रियते तन्न्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥७॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्ष्यत् परि गृहीतममृतेनसर्व्वम् ॥ येनयज्ञस्तायतेसप्त होतातन्न्मेमनःशिव सङ्कल्प्पमस्तु ॥८॥ यस्मिन्नृचःसामयजूꣳषि यस्म्मिन्प्रतिष्ठितारथना भाविवाराः॥ यस्मिँश्चित्तꣳ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्न्मे मनःशिव सङ्कल्प्पमस्तु ॥९॥ सुषारथिरश्श्वानिव यन्मनुष्ष्यान्नेनीयते भीशुभिर्व्वा जिनऽइव॥ हृत्प्रतिष्ठँय्यदजिरञ्जविष्ठन्तन्न्मेमनःशिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥१०॥

॥ इति रुद्रपाठे प्रथमोऽध्यायः ॥

अथद्वितीयोऽध्यायः (पुरुषसूक्तम्)

हरिःॐ सहस्रशीर्षापुरुषःसहस्राक्षःसहस्रपात्॥ सभूमिꣳसुर्व्व तस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥१॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वंय्यद्भूतंय्यच्च भाव्व्यम्।

उतामृतत्त्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति ॥२॥ एतावानस्य महिमातोज्ज्यायाँश्चपूरुषः॥ पादोस्यव्विश्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥३॥ त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः॥ ततोव्विष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥४॥ ततोव्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्त्यरिच्च्यतपश्चाद्भूमिमथोपुरः॥५॥ तस्माद्यज्ज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँस्ताँश्चक्क्रेव्वायव्यानारण्ण्याग्राम्म्याश्चये॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे। छन्दाᳪसिजज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥७॥ तस्मादश्वाऽअजायन्तयेकेचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरे तस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥८॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्ग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्त साद्ध्याऽऋषयश्चये॥९॥ यत्पुरुषम्व्यदधुः कतिधाव्व्यकल्प्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते॥१०॥ ब्ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः॥ ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याᳪशूद्रोऽअजायत ॥११॥ चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोःसूर्य्योऽअजायत॥ श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्चमुखादग्निरजायत॥१२॥ नाभ्याऽआसीदन्तरिक्क्षᳪ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ अकल्प्पयन् ॥१३॥ यत्पुरुषेणहविषा देवायज्ञमतन्न्वत। व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइद्ध्मः शरद्धविः॥१४॥ सप्तास्यासन्परिधयस्त्रिः सप्प्तसमिधः कृताः॥ देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽअबद्ध्नन्पुरुषम्पशुम् ॥१५॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन् ॥ तेहनाकम्महिमानःसचन्तयत्र पूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः॥१६॥ अद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्यैरसाच्च व्विश्श्वकर्म्मणः समवर्त्ततागग्रे॥ तस्यत्त्वष्टाव्विदधद्रूपमेति तन्मर्त्त्यस्यदेवत्त्वमाजानमग्ग्रे॥१७॥ व्वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमा दित्यवर्ण्णन्तमसः परस्तात् ॥ तमेवव्विदित्त्वातिमृत्युमेतिनान्न्यः पन्थाव्विद्यतेयनाय॥१८ प्रजापतिश्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमानो बहुधाव्विजायते। तस्ययोनिम्परि पश्श्यन्तिधीरास्तस्मिन्हतस्थुर्भुवनानिव्विश्श्वा ॥१९॥ योदेवेब्भ्यऽआतपति योदेवानाम्पुरोहितः॥ पूर्व्वोयोदेवेब्भ्यो जातोनमोरुचायब्राह्मये ॥२०॥

रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन्॥ यस्त्वैवम्ब्राह्मणोव्विद्यात्तस्यदेवाऽअसन्वशे ॥२१॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्त्रेपार्श्वेनक्षत्त्राणिरूपमश्श्विनौव्यात्तम्। इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥२२॥

॥ इति रुद्रपाठे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

अथतृतीयोऽध्यायः (अप्रतिरथसूक्तम्)

हरिः ॐ॥ आशुः शिशानोव्वृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥ सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः शतᳬसेनाऽअजयत्साकमिन्द्रः ॥१॥ सङ्क्रन्दनेना निमिषेणजिष्णुनायुत्कारेण दुश्च्यवनेनधृष्णुना ॥ तदिन्द्रेणजयततत्सहद्ध्वँय्युधोनरऽइषुहस्तेनव्वृष्णा ॥२॥ सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्व्वशीसᳪ स्रष्टासयुधऽइन्द्रो गणेन॥ सᳬसृष्टजित्सोमपाबाहु शर्द्ध्युग्रधन्न्वाप्प्रतिहिता भिरस्ता ॥३॥ बृहस्पतेपरिदीयारथे नरक्षोहामित्राँ २॥ ऽअपबाधमानः। प्रभञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणोयुधा जयन्नस्म्माकमेद्ध्यव्वितारथानाम् ॥४॥ बलविज्ञायस्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्ग्रः॥ अभिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥५॥ गोत्रभिदङ्गोविदंव्वज्ज्रबाहुञ्जयन्त मज्ज्मप्प्रमृणन्तमोजसा ॥ इमᳬसजाताऽअनुवीरयद्ध्वमिन्द्रᳬसखायोऽअनुसᳬ रभद्ध्वम् ॥६॥ अभिगोत्त्राणिसहसागाहमानोदयोव्वीरः शतमन्न्युरिन्द्रः॥ दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्योस्म्माकᳬसेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु ॥७॥ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम् ॥८॥ इन्द्रस्यव्वृष्णोव्वरुणस्य राज्ञऽआदित्त्या नाम्मरुताᳪ शर्द्धऽउग्ग्रम् ॥ महामनसाम्भुवनच्च्य वानाङ्घोषोदेवानाञ्जयता मुदस्थात् ॥९॥ उद्धर्षयमघवन्ना युधान्न्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाᳪसि ॥ उद्वृत्रहन्वाजिनाव्वाजिनान्न्युद्रथानाञ्जयताँय्यन्तुघोषाः॥१०॥ अस्म्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजे ष्ष्वस्म्माकँय्याऽइषवस्ताजयन्तु ॥ अस्म्माकंव्वीराऽउत्तरे भवन्त्वस्म्माँ२॥ ऽउदेवाऽअवताहवेषु ॥११॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रति

लोभयन्तीगृहाणाङ्गान्यप्वे परेहि॥ अभिप्रेहि निर्दहहृत्सुशोकैरन्धेनामित्रास्तमसासचन्ताम् ॥१२॥ अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्मसशिते॥ गच्छामित्रान्प्रपद्यस्व मामीषाङ्कञ्चनोच्छिषः॥१३॥ प्रेताजयतानरऽइन्द्रोवःशर्म्मयच्छतु ॥ उग्ग्राव÷सन्तुबाहवो नाधृष्याथासथ ॥१४॥ असौयासेनामरुतः परेषामभ्यैतिनऽओजसास्पर्द्धमाना ॥ ताङ्गूहत तमसापव्व्रते नयथामीऽअन्योऽअन्यन्नजानन् ॥१५॥ यत्रबाणाःसम्पतन्ति कुमारा व्विशिषाऽइव ॥ तन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतुव्विश्वाहाशर्म्मयच्छतु ॥१६॥ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम्॥ उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ॥१७॥

॥ इति रुद्रपाठे तृतीयोऽध्यायः ॥३॥

अथचतुर्थोऽध्यायः (मैत्रसूक्तम्)

ॐव्विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविहुतम् ॥ व्वातजूतो योऽअभिरक्षतित्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरुधाव्विराजति ॥१॥ उदुत्त्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्तिकेतवः॥ दृशेव्विश्वायसूर्य्यम् ॥२॥ येनापावकचक्षसा भुरण्यन्तञ्जनाँ२॥ ऽअनु ॥ त्वंव्वरुणपश्श्यसि ॥३॥ दैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽआगतङ् रथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञङ्समञ्जाथे ॥ तम्प्रत्क्नथाऽयंव्वेनश्चित्रन्देवानाम् ॥४॥ तम्प्रत्क्नथापूर्व्वथा व्विश्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदꣳस्वर्व्विदम्। प्रतीचीनंव्वृजनन्दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुव्वर्द्धसे ॥५॥ अयंव्वेनश्चोदयत्पृश्निगर्ब्भा ज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसोव्विमाने ॥ इममपाꣳसङ्गमेसूर्य्यस्य शिशुन्नव्विप्रामतिभी रिहन्ति ॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्म्मित्रस्यव्वरुणस्याग्ग्नेः॥ आप्प्राद्द्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्त्माजगतस्तस्थुषश्च ॥७॥ आनऽइडाभिर्व्विदथे सुशस्तिव्विश्वानरः सवितादेवऽएतु ॥ अपियथायुवानोमत्सथानोव्विश्वञ्जगदभिपित्त्वे मनीषा ॥८॥ यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽअभिसूर्य्य ॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥९॥ तरणिर्व्विश्वदर्शतोज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ व्विश्वमाभासिरोचनम् ॥१०॥

तत्सूर्य्यस्य देवत्त्वन्तन्महित्त्वम्मद्ध्याकर्त्तोर्व्विततꣳसञ्जभार ॥ यदेदयुक्तहरितः सधस्त्थादाद्द्रात्रीव्वासस्तनुते सिमस्मै ॥११॥ तन्मित्रस्यव्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्योरुपस्थे ॥ अनन्तमन्न्यद्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥१२॥ बण्णमहाँ२॥ऽअसिसूर्य्य बडादित्त्यमहाँ२॥ऽअसि ॥ महस्तेसतोमहिमा पनस्यतेद्धादेवमहाँ२॥ऽअसि ॥१३॥ बट्सूर्य्यश्श्रवसामहाँ२॥ऽअसिसत्रा देवमहाँ२॥ऽअसि॥ मह्नादेवानामसुर्य्यः पुरोहितो व्विभुज्ज्योतिरदाभ्भ्यम् ॥१४॥ श्रायन्तऽइव सूर्य्यं व्विश्वेदिन्द्रस्यभक्षत ॥ व्वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्प्रतिभागन्नदीधिम ॥१५॥ अद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्य निरꣳहसः पिपृतानिरवद्यात्॥ तन्नोमित्रोव्वरुणोमामहन्तामदितिः सिन्धुःपृथिवीऽउतद्यौः॥१६॥ आकृष्णेनरजसा व्वर्त्तमानो निवेशयन्नमृतम्मर्त्त्यञ्च॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानिपश्श्यन् ॥१७॥

॥ इति रुद्रपाठे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अथपञ्चमोऽध्यायः (नमकाध्यायः)

ॐभूर्भुवः स्वः॥ नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवे नमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः॥१॥ यातेरुद्रशिवा तनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरुमाहिꣳसीःपुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशाच्छाव्वदामसि ॥ यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳसुमनाऽअसत् ॥४॥ अद्ध्यवोचदधिवक्ता प्प्रथमोदैव्व्योभिषक्॥ अहीँश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चयातुधान्न्योधराचीः परासुव ॥५॥ असौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः॥ येचैनꣳ रुद्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताःसहस्रशोवैषाꣳहेडऽईमहे ॥६॥ असौयोवसर्प्पति नीलग्ग्रीवोव्विलोहितः॥ उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्श्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टोमृडयातिनः॥७॥ नमोस्तुनीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे ॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानो हन्तेब्भ्योकरन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयो

रात्न्यौज्ज्यम् ॥ याश्चं तेहस्तऽइषंवः पराताभंगवोव्वप ॥९॥ विज्ज्यन्धनुः÷कपर्द्दिनो विशंल्ल्योबाणवाँ२॥ऽउत॥ अनेशन्नस्युयाऽ इषंवऽआभुरंस्य निषङ्गधिः॥१०॥ यातेहेतिर्म्मीढुष्ट्टमहस्त्ते बुभूवंतेधनुं÷॥ तयास्म्मान्विवश्श्व तुस्त्त्वमंयुक्ष्मयापरिभुज ॥११॥ परितेधन्न्वंनो हेतिरुस्मान्वृणक्तुविश्श्वतं÷॥ अथोयऽइंषुधिस्त्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम् ॥१२॥ अवतत्त्यधनुष्ट्ट्वःसहंस्राक्क्षशतेषुधे ॥ निशीर्य्यंशुल्ल्यानाम्मुखां शिवोनं÷सुमनांभव ॥१३॥ नमंस्त्तऽआयुंधायानां ततायधृष्ण्णवे ॥ उभाब्भ्यांमुतते नमों बाहुब्भ्यान्तवधन्न्वंने ॥१४॥ मानोंमहान्तं मुतमानोंऽअब्भुंकम्मानुऽउक्क्षंन्त मुतमानंऽउक्क्षितम् ॥ मानोंव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानं÷प्प्रियास्त्तन्न्वो रुद्द्रीरिषः॥१५॥ मानंस्त्तोकेतनंये मानुऽआयुंषिमानोगोषु मानोऽअश्श्वेषुरीरिषः॥ मानोंव्वीरान्द्रुद्द्रभामिनों व्वधीर्हुविष्म्मंन्तःसदुमित्त्वांहवामहे ॥१६॥ नमोहिरंण्णयबाहवे सेनान्न्ये दिशाञ्चपतंये नमोनमों व्वृक्षेब्भ्यो हरिंकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतंये नमोनमं÷शुष्प्पिञ्जरायुत्त्विषीं मतेपथीनाम्पतंये नमोनमो हरिंकेशायो पवीतिनेंपुष्ट्टानाम्पतंये नमोनमों बब्भ्लुशायं ॥१७॥ नमोंबब्भ्लुशायं व्याधिनेन्नांनाम्पतंये नमोनमों भुवस्यंहेत्त्यै जगंताम्पतंये नमोनमों रुद्द्रायांततायिने क्षेत्त्राणाम्पतंये नमोनमं÷सूतायाहंन्त्यै व्वनांनाम्पतंये नमोनमो रोहिंताय ॥१८॥ नमोरोहिंतायस्थ्थपतंये व्वृक्षाणाम्पतंये नमोनमोंभुवन्तयें व्वारिवस्कृतायौषंधीनाम्पतंये नमोनमों मुन्त्रिणें व्वाणिजा युकक्क्षाणाम्पतंये नमोनमंऽउच्चैर्ग्घोषा याक्क्रुन्दयंते पत्तीनाम्पतंये नमोनमं÷कृत्स्नायुतयां ॥१९॥ नमं÷कृत्स्नायुतया धावंतेसत्त्वंनाम्पतंये नमोनमः सहंमानायनिव्व्याधिनंऽआव्व्याधिनीं नाम्पतंये नमोनमोंनिषङ्गिणें ककुभायंस्त्तेनानाम्पतंये नमोनमों निचेरवेंपरि चरायारंण्णया नाम्पतंये नमोनमोव्वञ्चंते ॥२०॥ नमोव्वञ्चंतेपरिवञ्चंतेस्त्तायू नाम्पतंये नमोनमों निषङ्गिणंऽइषुधिमते तस्क्कंराणाम्पतंये नमोनमं÷ सृकायिब्भ्यो जिघांᳫसद्द्भ्यो मुष्णणताम्पतये नमोनमों सिमद्द्भ्योनक्तुञ्चरंद्द्भ्यो व्विकृन्ता

नाम्पतंये नमं÷॥२१॥ नमंऽउष्णणीषिणें गिरिचरायं कुलुञ्चानाम्पतंये नमोनमंऽइषु मद्द्भ्यों धन्न्वायिब्भ्यंश्श्चवो नमोनमंऽआतन्न्वानेब्भ्यं÷ प्प्रतिदधां नेब्भ्यश्श्चवो नमोनमंऽ आयच्छद्द्भ्योस्यंद्भ्यश्श्चवो नमोनमोंव्विसृजद्द्भ्यं÷॥२२॥ नमोंव्विसृजद्द्भ्यो व्विद्ध्यंद्भ्यश्श्चवो नमोनमं÷स्वपद्द्भ्यो जाग्ग्रंद्भ्यश्श्चवोनमोनमः शयांनेब्भ्युऽआसीं नेब्भ्यश्श्चवोनमो नमुस्त्तिष्ठुंद्भ्योधावंद्भ्यश्श्चवो नमोनमं÷सुभाब्भ्यं÷॥२३॥ नमं÷सुभाब्भ्यं÷सुभापंतिब्भ्यश्श्चवो नमोनमोश्श्वेब्भ्यो श्श्वंपतिभ्यश्श्चवो नमोनमंऽआव्व्या धिनींब्भ्यो व्विविद्ध्यंन्तीब्भ्यश्श्चवो नमोनमुऽउगंणा ब्भ्यस्तृःहुतीब्भ्यंश्श्चवो नमोनमोंगुणेब्भ्यं÷॥२४॥ नमोंगुणेब्भ्यों गुणपंति ब्भ्यश्श्चवो नमोनमो व्व्रातेंब्भ्यो व्व्रातंपतिब्भ्यश्श्चवो नमोनमो गृत्त्सेंब्भ्यो गृत्त्संपतिब्भ्यश्श्चवो नमोनमोव्विरूंपेभ्यो व्विश्श्वरूंपेब्भ्यश्श्चवो नमोनमः सेनांब्भ्यः ॥२५॥ नमः सेनांब्भ्यः सेनानिब्भ्यंश्श्चवो नमोनमों रथिब्भ्योंऽअरथेब्भ्यंश्श्चवो नमोनमं÷क्षत्त्तृब्भ्यं÷सङ्ग्रहीतृब्भ्यंश्श्चवो नमोनमों मुहद्भ्योंऽअब्भुंकेब्भ्यंश्श्च वो नमं÷॥२६॥ नमस्त्तक्षंब्भ्यो रथकारेब्भ्यंश्श्चवो नमोनमः कुलालेब्भ्यः कुर्म्मारेंब्भ्यश्श्चवो नमोनमों निषादेब्भ्यं÷ पुञ्जिष्ठेंब्भ्यश्श्च वो नमोनमं÷ श्श्वनिब्भ्यों मृगयुब्भ्यंश्श्चवो नमोनमः श्श्वब्भ्यं÷॥२७॥ नमः श्श्वभ्यः श्श्वपंतिब्भ्यश्श्चवो नमो नमों भवायं च रुद्द्रायं च नमं÷ शर्व्वायं च पशुपतंये च नमो नीलंग्ग्रीवाय च शितिकण्ठांय च नमं÷ कपर्द्दिनें ॥२८॥ नमं÷ कपर्द्दिनें चव्व्युप्प्त केशाय च नमं÷सहस्त्राक्क्षायं च शतधंन्न्वने च नमों गिरिशयायं च शिपिविष्ट्टायं च नमों मीढुष्ट्टंमाय चे षुंमते च नमोंह्रस्वायं ॥२९॥ नमोंह्रस्वायं च व्वामनायं च नमोंबृहुते च व्वर्षीयसे च नमोंव्वृद्धायं च सुवृधें च नमोग्ग्रयायं च प्प्रथमायं च नमंऽआशवें ॥३०॥ नमंऽआशवेंचा जिरायं च नमः शीग्घ्र्यांय च शीब्भ्यांय च नमुऽऊर्म्म्यायचा वस्वन्न्याय च नमों नादेयायंचद्द्वीप्प्यांय च ॥३१॥ नमों ज्ज्येष्ठायं च कनिष्ठायं च नमं÷ पूर्व्वजायं चा परजायं च नमोंमद्ध्यमा यंचा पगल्ब्भायं च नमों जघन्न्याय च बुध्न्याय च नमः सोब्भ्यांय ॥३२॥ नमः सोब्भ्यांय च

प्प्रतिसुर्ष्र्याय चु नमो षाम्म्यांयचक्षेम्म्यांय चु नमुः श्श्लोक्क्यां यचावसान्न्याय चु नमंऽउर्व्वुर्ष्र्याय चु खल्ल्यांय चु नमो व्वन्न्यांय ॥३३॥ नमोव्वन्न्यांय चु कक्क्ष्यांय चु नमं÷ श्श्रवायं च प्प्रतिश्श्रवायं चु नमंऽआशुषेंणायचा शुरंथाय चु नमुः शूरांयचा वभेदिनें चु नमों बिल्मिनें ॥३४॥ नमोंबिल्मिनें च कवुचिनें चु नमों व्वुर्म्मिणें च व्वरूथिनें चु नमं÷ श्श्रुतायं च श्श्रुतसेनायं चु नमों दुन्दुबभ्यायचा हनन्न्याय चु नमोंधृष्णणवें ॥३५॥ नमों धृष्णणवें च प्प्रमृशायं चु नमों निषङ्गिणें चे षुधिमतें चु नमंस्तीक्ष्णेषंवेचा युधिनें चु नमं÷ स्वायुधायं च सुधन्न्वंने च ॥३६॥ नमुः स्रुत्त्यांय चु पत्थ्यांय चु नमुः काट्टयांय चु नीप्प्यांय चु नमुः कुल्यांय च सुरस्याय चु नमों नादेयायं च व्वैशन्तायं च नमुः कूप्प्यांय ॥३७॥ नमुः कूप्प्यांयचावट्टयायचु नमोव्वीद्ध्र्यांयचा तप्प्याय चु नमो मेग्घ्यांय च व्विद्युत्त्याय चु नमो व्वर्ष्ष्यांय चावर्ष्ष्यायं चु नमोव्वात्यांय ॥३८॥ नमोव्वात्यांय चु रेष्म्यांय चु नमों व्वास्तव्याय च व्वास्तुपायं चु नमुः सोमांय च रुद्रायं चु नमंस्ताम्म्रायंचा रुणायं चु नमं÷ शुङ्गवें ॥३९॥ नमं÷ शुङ्गवें च पशुपतंये चु नमंऽउग्ग्रायं च भीमायं चु नमोंग्ग्रेवुधायं च दूरेवुधायं चु नमोंहुन्त्रे चु हनींयसे चु नमों व्वृक्षेब्भ्यो हरिंकेशेब्भ्योनमंस्तारायं ॥४०॥ नमं÷ शम्भुवायंचमयो भुवायंचुनमं÷ शङ्करायंचमयस्क्करायंचुनमं÷ शिवायंचशिवतंरायच॥४१॥ नमुः पार्य्यांय चा वार्य्यांय चु नमं÷ प्प्रतरंणायचोत्तरंणाय चु नमुस्तीर्त्थ्यांय च कूल्ल्यांय चु नमुः शष्प्यांय चु फेन्न्यांय चु नमं÷ सिकुत्त्याय ॥४२॥ नमं÷ सिकुत्त्यायचप्प्रवाहृय्यायचु नमं÷ किंशिलायं चक्षयुणायं चु नमं÷ कपर्द्दिनें च पुलस्तयें चु नमंऽइरिण्ण्याय च प्प्रपत्थ्याय चु नमो व्व्रज्ज्यांय ॥४३॥ नमोव्व्रज्ज्यांय चु गोष्ठ्यांय चु नमुस्तल्प्प्यांय चु गेह्यांय चु नमों हृदुय्याय च निवेष्प्याय चु नमुः काट्टयांय च गह्वरेष्ठायं चु नमुः शुष्क्क्यांय ॥४४॥ नमुः शुष्क्क्यांय च हरित्त्याय चु नमं÷ पांऽंसुव्व्याय च रजुस्याय चु नमो लोप्प्यांयचो लुप्प्याय चु नमुऽऊर्व्यांय चु सूर्व्यांय चु नमं÷ पुण्णांयं ॥४५॥

नमं÷ पुण्णांयं च पर्ण्णशुदायं चु नमंऽउद्गुरमांणायचा भिग्घ्नते चु नमंऽआखिदुते चं प्प्रखिदुते चु नमंऽइषुकृद्ब्भ्यों धनुष्कृद्ब्भ्यंश्श्रवो नमोनमोंवः किरिकेब्भ्योंदेवानांहृदंयेब्भ्यो नमोंव्विचिन्न्वत्केब्भ्योनमों व्विक्षिणत्केब्भ्यो नमंऽआनिर्हतेब्भ्यं÷॥४६॥ द्रापेऽअन्धंसस्प्पतेदरिंद्र नीलंलोहित॥ आसाम्प्रजानां मेषाम्पंशूनाम्मा भेर्म्मारोङ्मोचंनुः किञ्चना मंमत् ॥४७॥ इमारुद्रायं तुवसेंकपर्द्दिनेंक्षयद्वीराय प्रभंरामहेमुती॥ षथाशंमसद्द्विपदेचतुंष्प्पदे व्विश्श्वंम्पुष्टङ्ग्रामेंऽअस्मिन्नंनातुरम् ॥४८॥ षातेंरुद्रशिवातनूः शिवाव्विश्श्वाहांभेषुजी ॥ शिवारुतस्यंभेषुजीतयां नोमृडजीवसें ॥४९॥ परिंनोरुद्रस्यंहेतिर्व्वृणक्तु परिंत्त्वेषस्यंदुर्म्मुतिरं घायोः॥ अवंस्थिरामघवंद्ब्भ्यस्तनुष्व्वमीड्ढ्वस्तोकायतनंयायमृड ॥५०॥ मीढुंष्ट्टम शिवंतमशिवोनं÷ सुमनांभव ॥ पुरमेव्वृक्षऽआयुंधन्निधायकृत्तिं व्वसांनुऽआचंरपिनांकुम्बिभ्रदागंहि॥५१॥ व्विकिंरिद्र्व्विलोंहितनमंस्तेऽ अस्तुभगवः॥ यास्तेंसुहस्रंहेतयोन्न्यमुस्मन्निर्वपन्तुताः॥५२॥ सुहस्रांणि सहस्रशोबाह्वोस्तवंहेतयं÷॥ तासामीशांनोभगवः पराचीनामुखांकृधि ॥५३॥ असंङ्ख्यातासुहस्रांणिषेरुद्राऽअधिभूम्यांम् ॥ तेषांऽंसहस्रयोजुने वुधन्न्वांनितन्न्मसि ॥५४॥ अस्मिन्न्मं हत्त्यर्ण्णुवेन्तरिंक्षे भुवाऽअधिं ॥ तेषांऽंसहस्रयोजुनेवुधन्न्वांनितन्न्मसि ॥५५॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवंरुद्राऽउपंश्श्रिताः॥ तेषांऽंसहस्रयोजुनेवुधन्न्वां नितन्न्मसि ॥५६॥ नीलंग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शुर्व्वाऽअधः क्षमाचुराः॥ तेषांऽंसहस्रयोजुने वुधन्न्वांनितन्न्मसि ॥५७॥ षेव्वृक्षेषुंशुष्प्पिञ्जंरा नीलंग्ग्रीवाव्विलोंहिताः॥ तेषांऽंसहस्रयोजुने वुधन्न्वांनितन्न्मसि ॥५८॥ षेभूतानामधिंपतयो व्विशिखासं÷ कपुर्द्दिनं÷॥ तेषांऽंसहस्रयोजुनेवुधन्न्वांनितन्न्मसि ॥५९॥ षेपथाम्पंथिरक्षंयऐलबृदाऽआंयुर्य्युधं÷॥ तेषांऽंसहस्रयोजुनेवधन्न्वां नितन्न्मसि ॥६०॥ षेतीर्थानिंप्प्रचरंन्ति सृकाहंस्तानिषङ्गिणं÷॥ तेषांऽंसहस्रयोजुने वुधन्न्वांनितन्न्मसि ॥६१॥ षेन्नेंषुव्विविद्ध्यंन्ति पात्रेंषुपिबंतोजनांन्।। तेषांऽंसहस्रयोजुनेवुधन्न्वां नितन्न्मसि ॥६२॥ षऽएतावंन्तश्श्चुभूयांऽंसश्श्च दिशों रुद्राव्वितस्थिरे ॥ तेषांऽंसहस्र

योजनेवधन्वानितन्नमसि॥६३॥ नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेदिवियेषांवर्षमिषवः। तेभ्योदशप्राचीर्दशदक्षिणा दशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः॥ तेभ्योनमोऽअस्तुतेनो वन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मो यश्चनोद्वेष्टितमे षाञ्जम्भेदध्मः ॥६४॥ नमोऽस्तुरुद्रेभ्योयेऽन्तरिक्षेयेषांवातऽइषवः॥ तेभ्योदशप्राचीर्दश दक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः॥ तेभ्यो नमोऽअस्तुतेनो वन्तुतेनोमृडयन्तुतेयन्द्विष्मो यश्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भे दध्मः॥६५॥ नमोऽस्तुरुद्रेभ्यो येपृथिव्यांयेषामन्नमिषवः॥ तेभ्यो दशप्राचीर्दशदक्षिणादशप्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः। तेभ्योनमोऽ अस्तुतेनोवन्तुतेनो मृडयन्तु तेयन्द्विष्मोयश्चनोद्वेष्टितमे षाञ्जम्भे दध्मः॥६६॥

॥ इति रुद्रपाठे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

अथ षष्ठोऽध्यायः (महच्छिरः)

ॐव्वयꣳ सोमव्व्रतेतव मनस्तनूषुबिभ्रतः॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥१॥ एषते रुद्रभागः सहस्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्वस्वाहै षतेरुद्रभागऽआखुस्ते पशुः॥२॥ अवरुद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ॥ यथानोव्वस्यसस्क रद्यथानः श्श्रेयसस्करद्यथानो व्यवसाययात् ॥३॥ भेषजमसिभेष जङ्गवेश्वायपुरुषाय भेषजम् ॥ सुखम्मेषायमेष्यै ॥४॥ त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पुष्टि वर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ॥ त्र्यम्बकँय्यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षी यमामुतः॥५॥ एतत्तेरुद्रावसन्तेन परोमूजवतोतीहि।। अवततधन्वापिना कावसः कृत्तिवासाऽअहिꣳसन्नः शिवोतीहि ॥६॥ त्र्यायुषञ्जमदग्ग्नेः कश्श्यपस्यत्र्यायुषम् ॥ यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥७॥ शिवोनामासिस्वधितिस्ते पितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः॥ निवर्त्तया म्यायुषेन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय॥८॥

॥ इति रुद्रपाठे षष्ठोऽध्यायः ॥६॥

अथ सप्तमोऽध्यायः (जटाध्यायः)

ॐ उग्रश्चभीमश्चध्वान्तश्चधुनिश्च ॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वा चविक्षिपः स्वाहा ॥१॥ अग्निꣳहृदयेनाशनिꣳहृदयाग्ग्रेणपशु पतिङ्कृत्स्नं हृदयेनभवँय्यक्क्ना ॥ शर्व्वम्मतस्नाभ्या मीशानम्मन्युना महादेवमन्तः पर्शव्येनोग्ग्रन्देवं व्वनिष्ठुनाव्वशिष्ठहनुः शिङ्गी निकोश्श्याभ्याम् ॥२॥ उग्ग्रँल्लोहितेन मित्रꣳसौव्व्रत्त्येन रुद्रन्दौर्व्व्रत्त्येनेन्द्रम्प्रक्क्रीडेनमरुतोबलेन साद्ध्यान्प्रमुदा॥ भवस्यकण्ठ्यꣳ रुद्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महादेवस्य यकृच्छर्व्वस्यव्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥३॥ लोमभ्यः स्वाहा लोमभ्यः स्वाहा त्त्वचेस्वाहा त्त्वचे स्वाहा लोहितायस्वाहा लोहितायस्वाहामेदोभ्यः स्वाहा मेदोभ्यः स्वाहा ॥ माꣳसेभ्यः स्वाहा माꣳसेभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहा स्नावभ्यः स्वाहाऽस्थभ्यः स्वाहास्थभ्यः स्वाहा मज्जभ्यः स्वाहामज्जभ्यः स्वाहा रेतसेस्वाहा पायवेस्वाहा ॥४॥ आयासाय स्वाहाप्प्रायासायस्वाहा सँय्यासायस्वाहाव्वियासायस्वाहोद्यासाय स्वाहा॥ शुचेस्वाहाशोचतेस्वाहा शोचमानायस्वाहाशोकायस्वाहा ॥५॥ तपसेस्वाहा तप्यतेस्वाहा तप्यमानायस्वाहा तप्तायस्वाहाघर्म्माय स्वाहा।। निष्कृत्त्यैस्वाहाप्प्रायश्चित्त्यैस्वाहा भेषजायस्वाहा ॥६॥ यमाय स्वाहान्तकायस्वाहा मृत्त्यवेस्वाहा॥ ब्रह्मणेस्वाहा ब्ब्रह्महत्त्यायै स्वाहा विश्श्वेभ्योदेवेभ्यः स्वाहा द्यावापृथिवीभ्याꣳ स्वाहा ॥७॥

॥ इति रुद्रपाठे सप्तमोऽध्यायः ॥७॥

अथाष्टमोऽध्यायः (चमकानुवाकः)

ॐ व्वाजश्चमेप्रसवश्चमे प्प्रयतिश्चमेप्प्रसितिश्चमे धीतिश्चमे क्क्रतुश्चमे स्वरश्चमेश्श्लोकश्चमे श्श्रवश्चमेश्श्रुतिश्चमे ज्ज्योतिश्चमेस्वश्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥१॥ प्राणश्चमेपानश्चमे व्व्यानश्चमेसुश्चमे चित्तञ्चमऽआधीतञ्चमेव्वाक्क्चमे मनश्चमेचक्षुश्चमे श्श्रोत्रञ्चमेदक्षश्चमे बलञ्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥२॥ ओजश्चमेसहश्चमऽआत्क्माचमे तनूश्चमेशर्म्मचमे व्वर्म्म

चमेङ्गानिचमेस्थीनिचमे परूꣳषिचमे शरीराणिचमऽआयुश्चमे जराचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥३॥ ज्ज्यैष्ठ्यञ्चमऽआधिपत्त्यञ्चमे मन्न्युश्चमे भामश्चमे मश्चमेम्भश्चमे जेमाचमे महिमाचमे व्वरिमाचमे प्प्रथिमाचमे व्वर्षिमाचमे द्द्राघिमाचमे व्वृद्धञ्चमेव्वृद्धिश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥४॥(न.१) सत्त्यञ्चमे श्श्रद्धाचमेजगच्चमे धनञ्चमेव्विश्श्वञ्चमे महश्चमेक्क्रीडाचमे मोदश्चमे जातञ्चमे जनिष्ष्यमाणञ्चमे सूक्तञ्चमेसुकृतञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥५॥ ऋतञ्चमेमृतञ्चमेयक्ष्मञ्चमेनामयच्चमे जीवातुश्चमेदीर्ग्घायुत्त्वञ्चमे नमित्रञ्च मेभयञ्चमेसुखञ्चमेशयनञ्चमे सूषाश्चमेसुदिनञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥६॥ यन्ताचमेधर्त्ताचमेक्क्षेमश्चमे धृतिश्चमेव्विश्श्वञ्चमे महश्चमेसंव्विच्चमे ज्ञात्रञ्चमेसूश्चमेप्प्रसूश्चमे सीरञ्चमेलयश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥७॥ शञ्चमे मयश्चमेप्प्रियञ्चमे नुकामश्चमेकामश्चमे सौमनसश्चमेभगश्चमे द्द्रविणञ्चमे भद्द्रञ्चमे श्रेयश्चमेव्वसीयश्चमेयशश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥८॥ (न.२) ऊर्क्क्चमेसूनृताचमेपयश्चमे रसश्चमेघृतञ्चमेमधुचमे सग्ग्धिश्चमेसपीतिश्चमेकृषिश्चमेव्वृष्टिश्चमे जैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥९॥ रयिश्चमेरायश्चमे पुष्टञ्चमेपुष्टिश्चमे व्विभुचमेप्प्रभुचमे पूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमे कुयवञ्चमेक्क्षितञ्चमेन्नञ्चमेक्क्षुच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१०॥ व्वित्तञ्चमेव्वेद्यञ्चमे भूतञ्चमे भविष्ष्यच्चमेसुगञ्चमे सुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमऽऋद्धिश्चमे क्लृप्तञ्चमे क्लृप्तिश्चमेमतिश्चमे सुमतिश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥११॥ व्व्रीहयश्चमेयवाश्चमेमाषाश्चमे तिलाश्चमे मुद्द्गाश्चमे खल्ल्वाश्चमेप्प्रियङ्गवश्चमेणवश्चमेश्श्यामाकाश्चमे नीवाराश्चमे गोधूमाश्चमेमसूराश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१२॥(न.३) अश्म्माचमेमृत्तिका चमेगिरयश्चमे पर्व्वताश्चमेसिकताश्चमे व्वनस्प्पतयश्चमेहिरण्ण्यञ्चमे यश्च मेश्श्यामञ्चमे लोहञ्चमेसीसञ्चमेत्रपुचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१३॥ अग्ग्निश्च मऽआपश्चमेव्वीरुधश्चमऽओषधयश्चमे कृष्टपच्याश्चमेकृष्टपच्याश्चमे ग्ग्राम्म्याश्चमेपशवऽआरण्ण्याश्चमेव्वित्तञ्चमेव्वित्तिश्चमे भूतञ्चमे भूतिश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१४॥ व्वसुचमेव्वसतिश्चमे कर्म्मचमेशक्क्तिश्चमे र्त्थश्चमऽएमश्चमऽ इत्याचमेगतिश्चमे यज्ञेनकल्प्पान्ताम्॥१५॥ (न.४)

अग्ग्निश्चमऽइन्द्रश्चमेसोमश्चमऽइन्द्रश्चमे सविताचमऽइन्द्रश्चमे सरस्वती चमऽ इन्द्रश्चमेपूषाचमऽइन्द्रश्चमे बृहस्प्पतिश्चमऽइन्द्रश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१६॥ मित्रश्चमऽइन्द्रश्चमे व्वरुणश्चमऽइन्द्रश्चमे धाताचमऽइन्द्रश्चमेत्त्वष्टाचमऽ इन्द्रश्चमे मरुतश्चमऽइन्द्रश्चमे व्विश्श्वेचमेदेवाऽ इन्द्रश्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥१७॥ पृथिवीचमऽइन्द्रश्चमेन्तरिक्क्षञ्चमऽइन्द्रश्चमे द्यौश्चमऽ इन्द्रश्चमे समाश्चमऽइन्द्रश्चमे नक्क्षत्राणिचमऽइन्द्रश्चमे दिशश्चमऽइन्द्रश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१८॥(न.५) अꣳशुश्चमेरश्श्मिश्चमे दाब्भ्यश्चमेधिपतिश्चमऽउपाꣳशुश्चमेन्तर्य्यामश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमे मैत्राव्वरुणश्चमऽआश्श्विनश्चमे प्प्रतिप्प्रस्थानश्चमेशुक्क्रश्चमेमन्थीचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१९॥ आग्ग्रयणश्चमेव्वैश्श्वदेवश्चमे ध्ध्रुवश्चमेव्वैश्श्वानरश्चमऽऐन्द्राग्ग्नश्चमेमहावैश्श्वदेवश्चमे मरुत्त्वतीयाश्चमेनिष्क्केवल्ल्यश्चमे सावित्रश्चमेसारस्वतश्चमे पात्क्नीवतश्चमे हारियोजनश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२०॥ स्स्रुचश्चमे चमसाश्चमेव्वायव्व्यानिचमे द्द्रोणकलशश्चमे ग्ग्रावाणश्चमे धिषवणेचमे पूतभृच्चमऽआधवनी यश्चमेव्वेदिश्चमेबर्हिश्चमे वभृथश्चमे स्वगाकारश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२१॥(न.६) अग्ग्निश्चमेघर्म्मश्च मेर्क्कश्चमे सूर्य्यश्चमे प्प्राणश्चमेश्श्वमेधश्चमे पृथिवीचमेदितिश्चमे दितिश्चमेद्यौश्चमेङ्गुलयꣳ शक्क्वरयोदिशश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२२॥ व्व्रतञ्चमऽऋतवश्श्चमे तपश्चमे संव्वत्सरश्चमे होरात्रेऽऊर्व्वष्ठ्ठी वेबृहद्द्रथन्तरेचमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥२३॥(न.७) एकाचमे तिस्त्रश्चमेतिस्त्रश्चमे पञ्चचमे पञ्चचमे सप्प्तचमेसप्प्तचमे नवचमे नवचमऽएकादशचमऽएकादशचमे त्त्रयोदशचमे त्त्रयोदशचमे पञ्चदशचमे पञ्चदशचमे सप्प्तदशचमे सप्प्तदशचमे नवदशचमे नवदशचमऽएकविꣳशतिश्चमऽएकविꣳशतिश्चमेत्त्रयोविꣳशतिश्चमे त्त्रयोविꣳशतिश्चमे पञ्चविꣳशतिश्चमेपञ्चविꣳशतिश्चमेसप्प्तविꣳशतिश्चमेसप्प्तविꣳशतिश्चमेनवविꣳशतिश्चमे नवविꣳशतिश्चमऽएकत्रिꣳशच्चमऽएकत्रिꣳशच्चमेत्त्रयस्त्रिꣳशच्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥२४॥(न.८) चतस्त्रश्चमेष्टौचमेष्टौचमे द्द्वादशचमे द्द्वादशचमे षोडशचमेषोडशचमे विꣳशतिश्चमेविꣳशतिश्चमे चतुर्व्विꣳशतिश्चमे

चतुर्व्विꣳशतिश्चमेष्टाविꣳशतिश्चमेष्टाविꣳ शतिश्चमेद्द्वात्रिꣳ शच्चमे द्वात्रिꣳशच्चमे षट्त्रिꣳशच्चमेषट्त्रिꣳशच्चमे चत्त्वारिꣳशच्चमे चत्त्वारिꣳशच्चमेचतुश्चत्त्वारिꣳशच्चमेचतुश्चत्त्वारिꣳशच्चमे ष्टाचत्वारिꣳशच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२५॥(न.९) त्र्यविश्चमेत्र्यवीचमे दित्त्यवाट्ट्चमे दित्यौहीचमे पञ्चाविश्चमेपञ्चावीचमे त्रिवत्त्सश्चमेत्रिवत्त्साचमे तुर्य्यवाट्ट्चमे तुर्य्यौहीचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२६॥ पुष्ठवाट्ट्चमेपष्ठौहीचमऽउक्षा चमेव्वशाचमऽ ऋषभश्चमे व्वेहच्चमेनड्ड्वाँश्चमेधेनुश्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥२७॥ (न.१०) व्वाजायस्वाहाप्प्रसवायस्वाहा पिजायस्वाहा क्क्रतवेस्वाहा व्वसवेस्वाहाहर्प्पतयेस्वाहान्हे मुग्ग्धायस्वाहा मुग्ग्धाय व्वैनꣳ शिनायस्वाहाव्विनꣳशिनऽआन्त्यायनाय स्वाहान्त्यायभौवनाय स्वाहा भुवनस्यपतयेस्वाहा धिपतयेस्वाहाप्प्रजा पतयेस्वाहा॥ इयन्तेराण्णिमुत्रा यमन्तासियमनऽऊर्ज्जेत्त्वा व्वृष्ट्यैत्वा प्प्रजानान्त्वा धिपत्याय॥२८॥ आयुर्य्यज्ञेन कल्प्पताम्प्राणो यज्ञेनकल्प्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेन कल्प्पताꣳ श्रोत्रँयज्ञेनकल्प्पतां व्वाग्ग्यज्ञेनकल्प्पताम्मनो यज्ञेनकल्प्पता मात्त्मा यज्ञेनकल्प्पताम्ब्रह्माद्यज्ञेन कल्प्पताञ्ज्योति र्य्यज्ञेनकल्प्पताꣳ स्वर्य्यज्ञेन कल्प्पताम्पृष्ठँ यज्ञेनकल्प्पताँयज्ञो यज्ञेनकल्प्पताम् ॥ स्तोमश्चयजुश्चऽऋक्च्चसामच बृहच्चरथन्तरञ्च ॥ स्वर्द्देवाऽअगन्मामृताऽ अभूमप्प्रजापतेः प्प्रजाऽ अभूमव्वेट्ट्स्वाहा ॥२९॥

॥ इति रुद्रपाठे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

अथशान्त्यऽध्यायः

हरिःॐ ऋचंव्वाचम्प्रपद्येमनोयजुः प्प्रपद्ये सामप्प्राणम्प्रपद्येचक्षुः श्रोत्त्रम्प्रपद्ये॥ व्वागोजः सहौजोमयिप्प्राणापानौ॥१॥ यन्मेच्छिद्रञ्चक्षुषो हृदयस्यमनसोव्वातितृण्णम्बृहस्प्पतिर्म्मेतद्दधातु। शन्नोभवतु भुवनस्ययस्प्पतिः॥२॥ भूर्ब्भुवः स्वः॥ तत्त्सवितुर्व्वरेण्ण्यं भर्ग्गो देवस्य धीमहि॥ धियो योनःप्प्रचोदयात् ॥३॥ कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा॥ कयाशचिष्ठयाव्वृता॥४॥ कस्त्त्वासत्त्योमदानाम्मꣳहिष्ठो

मत्त्सदन्धसः॥ दृढाचिदारुजेव्वसु॥५॥ अभीषुणः सखीनामविता जरितॄणाम्॥ शतम्भवास्यूतिभिः॥६॥ कयात्त्वन्नऽऊत्त्याभिप्प्रमन्दसे व्वृषन्॥ कयास्त्तोतृब्भ्यऽआभर॥७॥ इन्द्रोव्विश्श्वस्यराजति॥ शन्नोऽअस्त्तु द्विपदे शञ्चतुष्प्पदे ॥८॥ शन्नोमित्रः शंव्वरुणः शन्नो भवत्त्वर्य्यमा॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिः शन्नोव्विष्ण्णुरुरुक्क्रमः॥९॥ शन्नोव्वातःपवताꣳ शन्नस्त्तपतुसूर्य्यः॥ शन्नः कनिक्क्रदद्देवः पर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु॥ १०॥ अहानिशम्भवन्तुनः शꣳ रात्त्रीः प्प्रतिधीयताम्॥ शन्नऽइन्द्राग्ग्नीभवता मवोभिः शन्नऽइन्द्रावरुणारातहव्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणा व्वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुवितायशँय्योः॥११॥ शन्नोदेवीरभिष्ट्टयऽआपोभवन्तु पीतये। शँय्योरभिस्त्रवन्तुनः॥१२॥ स्योनापृथिविनोभवा नृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्रथाः॥१३॥ आपोहिष्ठामयो भुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणायचक्क्षसे॥१४॥ योवः शिवतमोरसस्तस्य भाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः॥१५॥ तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्य क्षयायजिन्न्वथ। आपो जनयथाचनः॥१६॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिःपृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्श्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳशान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि॥१७॥ दृतेदृꣳहमामित्रस्यमा चक्षुषासर्व्वाणि भूतानिसमीक्षन्ताम्॥ मित्रस्याहञ्चक्षुषासर्व्वाणि भूतानिसमीक्षे। मित्रस्यचक्षुषासमीक्षामहे॥१८॥ दृतेदृꣳह मा। ज्योक्त्तेसन्दृशिजीव्व्यासञ्ज्योक्त्तेसन्दृशिजीव्व्यासम्॥१९॥ नमस्त्तेहरसेशोचिषेनमस्त्तेऽअस्त्वर्च्चिषे ॥ अन्न्याँस्त्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयःपावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव॥२०॥ नमस्त्तेऽअस्त्तुव्विद्युते नमस्तेस्तनयित्नवे। नमस्त्तेभगवन्नस्त्तुयतः स्वः समीहसे॥२१॥ यतोयतः समीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु॥ शन्नः कुरुप्प्रजाब्भ्योभयन्नः पशुब्भ्यः॥२२॥ सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तुदुर्म्मित्रि यास्तस्म्मैसन्तुयोस्म्मान्द्वेष्टि यञ्चव्वयन्द्विष्म्मः॥२३॥ तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्॥ पश्येम शरदःशतञ्जीवेमशरदःशतꣳशृणुयामशरदः शतम्प्रब्रवामशरदःशत मदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात्॥२४॥

॥ ॐशान्तिः शन्तिः शान्तिः। इतिरुद्रपद्धतौ शान्त्याऽध्यायः ॥

अथस्वस्तिप्रार्थनाध्यायमन्त्राः

हरि॑ॐस्वुस्तिनुऽइन्द्रो॑ व्वृद्धश्र्श्र॑वाः स्वुस्तिनः॑ पूषाव्विश्श्ववे॑दाः। स्वुस्तिनुस्ताक्ष्य्र्यो॒ऽअरि॑ष्टनेमिः स्वुस्तिनो॒ बृहुस्प्पति॑र्द्दधातु॥१॥ ॐपय॑ पृथिव्व्याम्पयुऽओष॑धीषुपयो॑ दिव्व्युन्तरि॑क्षे पयो॑धाः ॥ पय॑स्वतीः प्रदिश॑ः सन्तुमह्य्र्य॑म् ॥२॥

ॐव्विष्ष्णोरुराट॑ मसिव्विष्ष्णो॒श्श्नप्प्त्रे॑स्थोव्विष्ष्णो॑ स्यूर॑सि व्विष्ष्णो॑र्द्ध्रुवो॒ऽसि ॥ व्वैष्ष्णुवम॑सि व्विष्ष्ण॑वेत्त्वा॥ ॐअग्निर्द्देवता॒ व्वातो॑देवता॒ सूर्य्यो॑देवता॑ चन्द्रमा॑देवता॒ व्वस॑वोदेवता॑ रुद्राुदेवता॑ऽदित्त्यादेवता॑ मुरुतो॑देवता॒ व्विश्श्वे॑देवादेवता॒ बृहुस्प्पति॑र्द्देवतेन्द्रो॑देवता॒ व्वरु॑णोदेवता॑ ॥४॥

ॐसद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥ ५॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणायनमो बलायनमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः॥६॥ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः॥ सर्वेभ्यः सर्व शर्वेभ्यो नमस्तेऽअस्तु रुद्र रूपेभ्यः ॥७॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् ॥८॥ ईशानः सर्व विद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमेऽअस्तु सदाशिवोऽम् ॥९॥

ॐशिवोनामा॑सिस्वधि॑तिस्त्ते पितानम॑स्त्तेऽअस्त्तुमामा॑हिꣳ सीः॥ निव॑र्त्तयाम्म्यायु॑षेन्नाद्द्या॑य प्प्रुजन॑नायरायस्प्पोषा॑य सुप्प्रजास्त्वाय॑ सुवीर्य्या॑य॥१०॥

ॐव्विश्श्वा॑निदेव सवितर्दुरितानि परा॑सुव। यद्भद्रन्तन्नऽआसु॑व ॥११॥

ॐद्यौः शान्ति॑रुन्तरि॑क्षꣳ शान्तिः॑ पृथिवीशान्तिरापः शान्ति रोष॑धयः शान्तिः॑। व्वनुस्प्पत॑यः शान्तिर्व्विश्श्वे॑देवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्ति॑रेवशान्तिः सामाशान्ति॑रेधि॥१२॥

ॐसर्वेषां वा एष वेदानाꣳरसो यत्साम सर्वेषामेवैन मे तद्वेदानाꣳ रसेना भिषिञ्चति ॥१३॥

॥ इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राः ॥

यदक्षरपदभ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।
अनेन श्रीरुद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः प्रीयताम् न मम।

हाथ में जल लेकर शङ्करजी के सम्मुख छोड़ दें।

॥ ॐतत् सत् श्रीसाम्बसदाशिवार्पणमस्तु ॥

पृष्ठ संख्या....के अनुसार पूर्ववत् षडङ्गन्यास करें

उत्तरपूजन-सङ्कल्प–अब उत्तर पूजन का संकल्प लेकर पूजन करें–

ॐपूर्वोच्चारित संकल्पानुसारेण, रुद्राभिषेकोपरान्ते....गोत्रोत्पन्नोऽहं . ...नामोऽहं (वर्मोऽहं, गुप्तोऽहं) शर्मोऽहं भगवतः श्रीसाम्बसदाशिव प्रीत्यर्थे यथामिलितोपचार द्रव्यैः उत्तरपूजन संकल्पं अहं करिष्ये।

जल शंकरजी के सम्मुख छोड़ दें।

पृष्ठ संख्या (....) के अनुसार आसन आदि के क्रम से विधिपूर्वक शिवपूजन करें। स्नान आदि की एवं महाभिषेक की प्रक्रिया उत्तरपूजन में पुनः न करें। यदि रुद्राभिषेक करते हैं तो अङ्गपूजन एवं अष्टोत्तरशतपूजन आदि उत्तरपूजन में ही करें। संक्षिप्त में उत्तरपूजन यहाँ दिया जा रहा है।

आसनार्थे अक्षतान् समर्पयामि। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। हस्तयोः अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि। शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि। हस्तौप्रक्षाल्य। यज्ञोपवीतं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। उपवस्त्रं समर्पयामि। गन्धंसमर्पयामि। अक्षतान् समर्पयामि। पुष्पमालां समर्पयामि। बिल्वपत्रं समर्पयामि। नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि। धूपमाघ्रापयामि। प्रत्यक्षदीपं दर्शयामि। हस्तौ प्रक्षाल्य। नैवेद्यं समर्पयामि। आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये-मध्ये पानीयं उत्तरापोशनं च समर्पयामि। ताम्बूलं समर्पयामि। कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि। मन्त्र पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि।

प्रार्थनाः

पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजनपरं पठति प्रदोषे ।
तस्यस्थिरां रथगजेन्द्रतुरङ्गयुक्तां लक्ष्मींसदैवसुमुखीं प्रददातिशम्भुः॥
प्रार्थना पूर्वकं नमस्करोमि।

अथरुद्रयाग हवनविधि

हरि÷ॐ गणानान्त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणान्त्वाप्रियपतिꣳ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपतिꣳ हवामहे व्वसोमम। आहमजानिगर्ब्भधमा त्त्वमजासि गर्ब्भधम् स्वाहा ॥१॥

ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन ॥ स सस्त्यश्श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् स्वाहा ॥२॥

६मन्त्राः स्वाहा

ॐ यज्जाग्ग्रतो दूरमुदै तिदैवन्तदु सुप्तस्य तथैवैति ॥ दूरङ्ग मज्ज्योति षाज्ज्योतिरेकन्तन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु ॥१॥ येनकर्म्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञेकृण्ण्वन्ति व्विदथेषुधीराः॥ यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्प्रजानान्तन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु ॥२॥ यत्त्प्रज्ञान मुतचेतो धृतिश्च यज्ज्यो तिरन्तर मृतम्प्रजासु। यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्म क्क्रियते तन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु ॥३॥ येने दम्भूतम्भुवनम्भविष्य्यत् परिगृहीत ममृतेन सर्व्वम् ॥ येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मेमनः शिव शङ्कल्प्पमस्तु ॥४॥ यस्मिन्नृचःसामयजूꣳषि यस्मिन्नप्रतिष्ठिता रथना भाविवाराः ॥ यस्मिँश्चित्तꣳ सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मे मनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु ॥५॥ सुषारथि रश्श्वा निवयन्नमनुष्य्यान्नेनीयते भीसुभिर्व्वाजिनऽइव ॥ हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्ज विष्ठन्तन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु स्वाहा ॥६॥

१६मन्त्राः स्वाहा

ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। सभूमिꣳसर्व्वतस्पृत्त्वा त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वंय्यद्भूतँय्यच्च भाव्व्यम्। उतामृ तत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति।।२।। एतावानस्यमहिमातोज्यायाँश्च पूरुषः।। पादोस्यव्विश्वाभूतानि त्रिपादस्यामृतन्दिवि।।३।। त्रिपादूद्ध्वंऽउदैत्त्पुरुषः पादोस्येहाभवत्त्पुनः।। ततोव्विष्वङ् व्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि।।४।। ततोव्विराडजायत व्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्त्यरिच्च्य तपश्चाद्भू मिमथोपुरः।।५।। तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्।। पशूँताँश्चक्क्रे व्वायव्व्या नारण्याग्राम्याश्चजे ।।६।। तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे। छन्दाꣳसिजज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥७॥ तस्मादश्श्वाऽ अजायन्तयेकेचोभयादतः। गावोहजज्ञिरेतस्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥ तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः। तेनदेवाऽअयजन्त साध्याऽऋष

यश्चये॥९॥ यत्पुरुषम्व्व्यदधुः कतिधाव्व्यकल्प्पयन्। मुखङ्किमस्या सीत्किम्बाहू किमूरूपादाऽउच्च्येते।।१०।। ब्ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः। ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याꣳ शूद्रोऽअजायत।।११।। चन्द्रमामनसोजातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत। श्श्रोत्राद्वायुश्चप्प्राणश्चमुखादग्नि रजायत ॥१२॥ नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत। पद्भ्याम्भू मिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥ अकल्प्पयन् ॥१३॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञ मतन्वत। व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥ सप्तास्या सन्नपरिध यस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः। देवायद्द्यज्ञन्तन्वानाऽअबध्नन् पुरुषम्पशुम्।।१५।। यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणि प्प्रथमान्न्यासन्। तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्र पूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः स्वाहा।।१६।।

६मन्त्राः (उत्तर नारायण) स्वाहा

ॐअद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्व्यै रसाचव्विश्श्वकर्म्मणः सम वर्त्तताग्रे॥ तस्य त्त्वष्टाव्विदधद्रूपमेतितन्नमर्त्त्यस्य देवत्त्वमाजानमग्रे॥१७॥ व्वेदाहमेतम्पुरु षम्महान्तमा दित्यवर्ण्णन्तमसः परस्तात् । तमेवव्विदित्त्वातिमृत्युमेतिनान्यः पन्थाविद्यतेयनाय ॥१८॥ प्रजापतिश्च्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमानो बहुधा व्विजायते। तस्ययोनिम्परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्हतस्थुर्ब्भुवनानि व्विश्श्वा ॥१९॥ यो देवेब्भ्यऽआतपति यो देवानाम्पुरो हितः। पूर्व्वो यो देवेब्भ्यो जातो नमो रुचाय ब्ब्राह्मये॥२०॥ रुचम्ब्राह्म ञ्जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन्॥ यस्त्वै वम्ब्राह्मणो व्विद्यात्तस्यदेवाऽअसन्नवशे॥२१॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्न्यावहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौव्व्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽ इषाण स्वाहा॥२२॥

१२मन्त्राः स्वाहा

ॐ आशुः शिशानोव्वृषभो नभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रदनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्त्साकमिन्द्रः॥१॥ सङ्क्रदनेना निमिषेणजिष्णुनायुत्त्कारेणदुश्च्च्यवनेनधृष्णुना॥ तदिन्द्रेणजयततत्त्स हद्धवंय्युधोनरऽइषु हस्तेनव्वृष्णा॥२॥ सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳ सृष्ट्टा सयुधऽइन्द्रोगणेन॥ सः सृष्टजित्त्सोमपाबाहु शद्धर्च्चुग्रधन्वाप्प्रतिहिता भिरस्ता॥३॥ बृहस्पतेपरिदीयारथे नरक्षोहामित्राँ२॥ ऽअपबाधमानः॥ प्रभञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणोयुधाजयन्नस्म्मा कमेद्धचवितारथानाम्॥४॥ बलविज्ञा यस्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्वाजी सहमानऽउग्रः॥ अभिवीरोऽअभिसत्त्वा सहोजाजैत्रमिन्द्ररथमा तिष्ठगोवित्॥५॥ गोत्रभिदङ्गो विदंव्वज्ज्र बाहुञ्जयन्त

मज्ज्मप्प्रमृणन्त मोजसा॥ इमꣳ सजाताऽअनु वीरयद्ध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽअनुसꣳ रभद्ध्वम्॥६॥ अभिगोत्राणिसहसागा हमानोदयोव्वीरः शतमन्न्युरिन्द्रः॥ दुश्च्यवनः पृतनाषाड युध्योस्माकꣳ सेनाऽअवतुप्प्रयुत्त्सु॥७॥ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः॥ देवसेनाना मभिभञ्जतीनाञ्जयन्ती नाम्मरुतोयन्त्वग्ग्रम्॥८॥ इन्द्रस्य व्वृष्ष्णोव्वरुणस्यराज्ञऽआदित्त्यानाम्मरुताꣳ शर्द्धऽउग्ग्रम्॥ महामनसाम्भुवनच्च्य वानाङ्घोषो देवानाञ्जयतामुदस्थात्॥९॥ उद्धर्षयमघवन्ना युधान्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाꣳसि॥ उद्वृत्रहन्वाजिनां व्वाजिनान्न्युद्रथानाञ्जयतांय्यन्तुघोषाः॥१०॥ अस्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजे ष्ष्वस्माकंय्याऽइषवस्ताजयन्तु॥ अस्माकंव्वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्माँ२॥उदेवाऽ अवताहवेषु॥११॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणाङ्गान्यप्प्वेपरेहि॥ अभिप्प्रेहि निर्द्दहहृत्सुशोकैरन्धेना मित्रास्तमसासचन्ताम् स्वाहा ॥१२॥

१७मन्त्राः स्वाहा

ॐव्विभ्राड् बृहत्पिबतुसोम्म्यम्मद्ध्वा युर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम्।। व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्त्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरुधाव्विराजति ॥१॥ उदुत्त्यञ्जा तवेदसन्देवं व्वहन्तिकेतवः॥ दृशेव्विश्श्वायसूर्य्यम् ॥२॥ येनापावकचक्षसा भुरण्यन्तञ्जनाँ२॥ऽअनु॥ त्वंव्वरुणपश्यसि ॥३॥ दैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽआगतꣳ रथेन सूर्य्यत्त्वचा॥ मद्ध्वायज्ञꣳ समञ्जाथे॥ तम्प्रत्क्नथाऽयंव्वेनश्चित्रन्देवानाम् ॥४॥ तम्प्रत्क्नथापूर्व्वथा व्विश्श्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदꣳस्वर्व्विदम्। प्रतीचीनं व्वृजनन्दोहसेधुनि माशुञ्जयन्तमनुयासुव्वर्द्धसे ॥५॥ अयंव्वेनश्चो दयत्पृश्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायू रजसोव्विमाने ॥ इममपाꣳसङ्गमेसूर्य्यस्यशिशुन्न व्विप्रामतिभीरिहन्ति ॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनी कञ्चक्षुर्म्मित्रस्यव्वरुण स्याग्ग्नेः॥ आप्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्त्थुषश्च ॥७॥ आनऽइडाभिर्व्विदथे सुशस्तिव्विश्श्वानरः सवितादेवऽएतु। अपियथायुवानो मत्सथानो व्विश्श्वञ्जगदभिपित्त्वेमनीषा ॥८॥ यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽअभि सूर्य्य। सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे ॥९॥ तरणिर्व्विश्श्वदर्शतो ज्ज्योतिष्कृदसिसूर्य्य ॥ व्विश्श्वमाभासिरोचनम् ॥१०॥ तत्त्सूर्य्यस्यदेवत्वन्तन्महित्त्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्व्विततꣳ सञ्जभार ॥ यदेयुक्तहरितः सधस्थादाद्द्रात्रीव्वासस्त नुतेसिमस्मै ॥११॥ तन्मित्रस्यव्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्यो रुपस्थे ॥ अनन्तमन्न्य द्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥१२॥ बण्महाँ२॥ असिसूर्य्यबडादित्त्यमहाँ२॥ ऽअसि॥ महस्तेसतोमहिमापनस्य

तेद्धादेवमहाँ२॥ऽअसि ॥१३॥ बट्सूर्य्यश्श्रवसामहाँ२॥ऽअसि सत्रादेवमहाँ२॥ ऽअसि॥ मह्नादेवानामसुर्य्यः पुरोहितो व्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्याम्॥१४॥ श्रायन्तऽइव सूर्य्यंव्विश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत ॥ व्वसूनिजातेजनमानऽओजसा प्प्रतिभागन्नदीधिम ॥१५॥ अद्यादेवाऽउदिता सूर्य्यस्यनिरꣳ हसः पिपृतानिर वद्यात्॥ तन्नोमित्रोव्वरुणोमा महन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः॥ आकृष्ष्णेनरजसा व्वर्त्तमानोनिवेशयन्न मृतम्मर्त्यञ्च ॥ हिरण्ययेनसवितारथेना देवोयातिभुवनानिपश्यन् स्वाहा॥१७॥

रुद्रसूक्तम् १६१ आहुतयः

ॐभूर्भुवः स्वः नमस्तेरुद्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवे नमः॥ बाहुब्भ्यामुततेनमः स्वाहा ॥१॥

ॐयातेरुद्रशिवातनूरघोरापापकाशिनी ॥ तयानस्तन्न्वा शन्तमयागिरि शन्ताभिचाकशीहि स्वाहा॥२॥

ॐयामिषुङ्गिरिशन्तहस्ते बिभर्ष्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु माहिꣳ सीः पुरुषञ्जगत् स्वाहा॥३॥

ॐशिवेनव्वचसात्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ॥ यथानः सर्व्वमिज्जगद यक्ष्मꣳ सुमनाऽअसत् स्वाहा ॥४॥

ॐअद्ध्यवोच दधिवक्ताप्प्रथमो दैव्व्योभिषक् ॥ अहींश्चसर्व्वाञ्जम्भ यन्त्सर्व्वाश्चया तुधान्न्यो धराचीःपरासुव स्वाहा॥५॥

ॐअसौयस्ताम्म्रोऽअरुणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः॥ येचैनꣳरुद्राऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशो वैषाꣳहेडऽईमहे स्वाहा॥६॥

ॐअसौयोवसर्प्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः॥ उतैनंगोपाऽअदृश्श्र न्नदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्टो मृडयातिनः स्वाहा॥७॥

ॐनमोस्तुनीलग्ग्रीवाय सहस्राक्षायमीढुषे॥ अथोयेऽअस्यसत्त्वानो हन्तेब्भ्यो करन्नमः स्वाहा॥८॥

ॐप्रमुञ्चधन्न्वनस्त्वमुभयोरात्क्नर्योज्ज्याम्॥ याश्चतेहस्तऽइषवः पराताभग वोव्वप स्वाहा॥९॥

ॐव्विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२॥ऽउत॥ अनेशन्नस्य याऽइषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः स्वाहा॥१०॥

ॐयातेहेतिर्म्मीढुष्ट्टमहस्तेबभूवतेधनुः॥ तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्व मयक्ष्मया परिभुज स्वाहा॥११॥

ॐपरिते धन्न्वनोहेतिरस्मान्न्वृणक्तुव्विश्श्वतः॥ अथोयऽइषु धिस्तवारेऽ

अस्म्मन्निधे हितम् स्वाहा॥१२॥

ॐअवतत्यधनुष्ट्वꣳसहस्राक्षशतेषुधे॥ निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखा शिवोनः सुमनाभव स्वाहा॥१३॥

ॐनमस्तऽआयुधायाना तायधृष्णवे ॥ उभाब्भ्या मुततेनमो बाहुब्भ्यान्तव धन्वने स्वाहा॥१४॥

मानोमहान्त मुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्त मुतमानऽउक्षितम्॥ मानोव्वधीः पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्वो रुद्ररीरिषः स्वाहा॥१५॥

ॐमानस्तोकेतनयेमानऽआयुषि मानोगोषु मानोऽअश्वेषुरीरिषः ॥ मानो व्वीरान्नुद्र भामिनोव्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे स्वाहा॥१६॥

ॐनमोहिरण्य बाहवेसेनान्ये दिशाञ्च पतये नमः स्वाहा॥१७॥

ॐनमो व्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः पशूनाम्पतये नमः स्वाहा॥१८॥

ॐनमः शष्प्पञ्जरायत्त्विषीमते पथीनाम्पतये नमः स्वाहा॥१९॥

ॐनमो हरि केशायो पवीतिने पुष्ट्टानाम्पतये नमः स्वाहा॥२०॥

ॐनमोबभ्लुशाय व्याधिनेन्नानाम्पतये नमः स्वाहा॥२१॥

ॐनमो भवस्य हेत्त्यै जगताम्पतये नमः स्वाहा॥२२॥

ॐनमो रुद्द्राया तायिने क्षेत्राणाम्पतये नमः स्वाहा॥२३॥

ॐनमः सूतायाहन्त्यै व्वनानाम्पतये नमः स्वाहा॥२४॥

ॐनमोरोहितायस्थपतये व्वृक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा॥२५॥

ॐनमो भुवन्तये व्वारिवस्कृतायौषधीनाम्पतये नमः स्वाहा॥२६॥

ॐनमो मन्त्रिणे व्वाणिजाय कक्षाणाम्पतये नमः स्वाहा॥२७॥

ॐनम ऽउच्चैर्घोषा याक्रन्दयतेपत्तीनाम्पतये नमः स्वाहा॥२८

ॐनमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये नमः स्वाहा॥२९॥

ॐनमः सहमानायनिव्व्याधिनऽआव्व्याधिनीनाम्पतये नमः स्वाहा॥३०॥

ॐनमो निषङ्गिणे ककुभायस्ते नानाम्पतये नमः स्वाहा॥३१॥

ॐनमो निचेरवे परिचराया रण्यानाम्पतये नमः स्वाहा॥३२॥

ॐनमोव्वञ्चते परिवञ्चतेस्तायू नाम्पतये नमः स्वाहा॥३३॥

ॐनमो निषङ्गिणऽइषुधिमते तस्क्कराणाम्पतये नमः स्वाहा॥३४॥

ॐनमः सृकायिब्भ्योजिघाꣳ सद्भ्योमुष्ण्णताम्पतये नमः स्वाहा॥३५॥

ॐनमो सिमद्भ्योनक्तञ्चरद्भ्योव्विकृन्तानाम्पमये नमःस्वाहा॥३६॥

ॐनमऽउष्ण्णीषिणेगिरिचरायकुलुञ्चा नाम्पतये नमः स्वाहा॥३७॥

ॐनमऽइषु मद्भ्यो धन्वायिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥३८॥

ॐनमऽआतन्वानेब्भ्यः प्प्रतिदधानेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥३९॥

ॐनमऽआयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४०॥

ॐनमोव्विसृजद्भ्यो व्विदद्यद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४१॥

ॐनमः स्वपद्भ्यो जाग्गृद्ब्भ्यश्चवो नमः स्वाहा॥४२॥

ॐनमः शयानेब्भ्यऽआसीनेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४३॥

ॐनमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४४॥

ॐनमः सभाब्भ्यः सभापतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४५॥

ॐनमो श्वेब्भ्यो श्वपतिभ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४६॥

ॐनमऽआव्याधिनीब्भ्योव्विविद्यन्तीब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥७॥

ॐनमऽ उगणाब्भ्यस्तृꣳ हतीब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४८॥

ॐनमो गणेब्भ्यो गणपतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥४९॥

ॐनमो व्व्रातेब्भ्यो व्व्रातपतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५०॥

ॐनमो गृत्त्सेब्भ्यो गृत्त्सपतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५१॥

ॐनमो व्विरूपेब्भ्योव्विश्वरूपेब्भ्यश्चवो नमः स्वाहा॥५२॥

ॐनमः सेनाब्भ्यः सेनानिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५३॥

ॐनमो रथिब्भ्योऽरथेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५४॥

ॐनमः क्षत्तृब्भ्यः सङ्ग्रहीतृब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५५॥

ॐनमो महद्भ्योऽअर्ब्भकेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५६॥

ॐनमस्तक्षब्भ्यो रथकारेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५७॥

ॐनमः कुलालेब्भ्यः कर्म्मारेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५८॥

ॐनमो निषादेब्भ्यः पुञ्जिष्ठेब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥५९॥

ॐनमः श्वनिब्भ्योमृगयुब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥६०॥

ॐनमः श्वभ्यः श्वपतिब्भ्यश्च वो नमः स्वाहा॥६१॥

ॐनमो भवाय च रुद्द्राय च नमः स्वाहा॥६२॥

ॐशर्व्वाय च पशुपतये च स्वाहा॥६३॥

ॐनमोनीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च स्वाहा॥६४॥

ॐनमः कपर्द्दिने च व्युप्त केशाय च स्वाहा॥६५॥

ॐनमः सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने च स्वाहा॥६६॥

ॐनमो गिरिशयाय च शिपिविष्ट्टाय च स्वाहा॥६७॥

ॐनमो मीढुष्ट्टमाय चे षुमते च स्वाहा॥६८॥

ॐनमो ह्रस्वाय च व्वामनाय च स्वाहा॥६९॥

ॐनमो बृहते चव्वर्षीयसे च स्वाहा॥७०॥
ॐनमो व्वृद्धाय च स वृधे च स्वाहा॥७१॥
ॐनमो ग्र्याय च प्प्रथमाय च स्वाहा॥७२॥
ॐनमऽआशवे चा जिराय च स्वाहा॥७३॥
ॐनमः शीग्घ्र्याय च शीब्भ्याय च स्वाहा॥७४॥
ॐनमऽ ऊर्म्म्यायचा वस्वन्न्याय च स्वाहा॥७५॥
ॐनमो नादेयाय च द्वीप्प्याय च स्वाहा॥७६॥
ॐनमो ज्ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च स्वाहा॥७७॥
ॐनमः पूर्व्वजा यचा परजाय च स्वाहा॥७८॥
ॐनमोमद्ध्यमा य चा पगल्ल्भाय च स्वाहा॥७९॥
ॐनमो जघन्न्याय च बुध्न्याय च स्वाहा॥८०॥
ॐनमः सोब्भ्याय च प्प्रतिसर्य्याय च स्वाहा॥८१॥
ॐनमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च स्वाहा॥८२॥
ॐनमः श्लोक्याय चा वसान्न्याय च स्वाहा॥८३॥
ॐनमऽ उर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय च स्वाहा॥८४॥
ॐनमो व्वन्न्याय च कक्ष्याय च स्वाहा॥८५॥
ॐनमः श्श्रवाय च प्रतिश्श्रवाय च स्वाहा॥८६॥
ॐनमऽ आशुषेणाय चा शुरथाय च स्वाहा॥८७॥
ॐनमः शूरायचा वभेदिने च स्वाहा॥८८॥
ॐनमो बिल्म्मिने च कवचिने च स्वाहा॥८९॥
ॐनमो व्वर्म्मिणे च व्वरूथिने च स्वाहा॥९०॥
ॐनमः श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च स्वाहा॥९१॥
ॐनमो दुन्दुब्भ्याय चा हनन्न्याय च स्वाहा॥९२॥
ॐनमो धृष्ष्णवे च प्प्रमृशाय च स्वाहा॥९३॥
ॐनमो निषङ्ग्गिणे चे षुधिमते च स्वाहा॥९४॥
ॐनमस्तीक्ष्णेषवे चा युधिने च स्वाहा॥९५॥
ॐनमः स्वायुधाय च सुधन्न्वने च स्वाहा॥९६॥
ॐनमः स्स्रुत्याय च पत्थ्याय च स्वाहा॥९७॥
ॐनमः काटच्याय च नीप्प्याय च स्वाहा॥९८॥
ॐनमः कुल्ल्याय च सरस्याय च स्वाहा॥९९॥
ॐनमो नादेयाय च व्वैशन्ताय च स्वाहा॥१००॥

ॐनमः कूप्प्याय चा वट्ट्याय च स्वाहा॥१०१॥
ॐनमोव्वीद्ध्र्याय चा तप्प्याय च स्वाहा॥१०२॥
ॐनमो मेग्घ्याय च व्विद्युत्त्याय च स्वाहा॥१०३॥
ॐनमो व्वर्ष्ष्याय चाव्वर्ष्ष्याय च स्वाहा॥१०४॥
ॐनमोव्वात्याय च रेष्म्याय च स्वाहा॥१०५॥
ॐनमो व्वास्तव्याय च व्वास्तुपाय च स्वाहा॥१०६॥
ॐनमः सोमाय च रुद्द्राय च स्वाहा॥१०७॥
ॐनमस्ताम्म्राय चारुणाय च स्वाहा॥१०८॥
ॐनमः शङ्ग्वे च पशुपतये च स्वाहा॥१०९॥
ॐनमऽउग्राय च भीमाय च स्वाहा॥११०॥
ॐनमोग्ग्रे वधाय च दूरे वधाय च स्वाहा॥१११॥
ॐनमो हन्त्रे च हनीयसे च स्वाहा॥११२॥
ॐनमोव्वृक्षेब्भ्यो हरिकेशेब्भ्यः स्वाहा॥११३॥
ॐनमस्ताराय स्वाहा ॥११४॥
ॐनमः शम्भवाय च मयो भवाय च स्वाहा॥११५॥
ॐनमः शङ्कराय च मयस्कराय च स्वाहा॥११६॥
ॐनमः शिवाय च शिवतराय च स्वाहा॥११७॥
ॐनमः पार्य्याय चा वार्य्याय च स्वाहा॥११८॥
ॐनमः प्प्रतरणाय चोत्तरणाय च स्वाहा॥११९॥
ॐनमस्तीर्त्थ्याय च कूल्ल्याय च स्वाहा॥१२०॥
ॐनमः शष्प्याय च फेन्न्याय च स्वाहा॥१२१॥
ॐनमः सिकत्त्याय च प्प्रवाह्याय च स्वाहा॥१२२॥
ॐनमः किꣳ शिलाय च क्षयणाय च स्वाहा॥१२३॥
ॐनमः कपर्द्दिने च पुलस्तये च स्वाहा॥१२४॥
ॐनमऽइरिण्ण्याय च प्प्रपत्थ्याय च स्वाहा॥१२५॥
ॐनमोव्व्रज्ज्याय च गोष्ठ्याय च स्वाहा॥१२६॥
ॐनमस्तल्ल्प्प्याय च गेह्याय च स्वाहा॥१२७॥
ॐनमो हृदय्याय च निवेष्प्याय च स्वाहा॥१२८॥
ॐनमः काटच्याय च गह्वरेष्ठ्याय च स्वाहा॥१२९॥
ॐनमः शुष्क्याय च हरित्याय च स्वाहा॥१३०॥
ॐनमः पाꣳ सव्याय च रजस्याय च स्वाहा॥१३१॥

ॐनमो लोप्याय चो लप्याय च स्वाहा॥१३२॥
ॐनमऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च स्वाहा॥१३३॥
ॐनमः पर्ण्याय च पर्णशदाय च स्वाहा॥१३४॥
ॐनमऽउद्गुरमाणाय चा भिग्घ्नते च स्वाहा॥१३५॥
ॐनमऽआखिदते च प्रखिदते च स्वाहा॥१३६॥
ॐनमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद्भ्यश्चवो नमः स्वाहा॥१३७॥
ॐनमोवः किरिकेब्भ्योदेवानाꣳ हृदयेब्भ्यः स्वाहा॥१३८॥
ॐनमोव्विचिन्वत्केब्भ्यो देवानाꣳहृदयेब्भ्यः स्वाहा॥१३९॥
ॐनमो विक्षिणत्केब्भ्यो देवानाꣳ हृदयेब्भ्यः स्वाहा॥१४०॥
ॐनमऽआनिर्हतेभ्यो देवानाꣳ हृदयेब्भ्यः स्वाहा॥१४१॥

ॐद्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्रनीललोहित॥ आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मा रोङ्मोचनः किञ्चना ममत् स्वाहा॥१४२॥

ॐइमारुद्रायतवसेकपर्द्दिने क्षयद्वीरायप्रभरामहेमतीः। यथाशमसद्विपदे चतुष्पदे व्विश्वम्पुष्टङ्ग्रामेऽअस्मिन्ननातुरम् स्वाहा॥१४३॥

ॐयातेरुद्र शिवातनूः शिवा व्विश्वाहा भेषजी॥ शिवारुतस्य भेषजी तयानो मृडजीवसे स्वाहा॥१४४॥

ॐपरिनोरुद्रस्यहे तिर्व्वृणक्तुपरित्वेषस्य दुर्म्म तिरघायोः॥ अवस्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयायमृड स्वाहा॥१४५॥

ॐमीढुष्टमशिवतम शिवोन सुमनाभव॥ परमेव्वृक्षऽआयु धन्निधायकृत्तिं व्वसानऽ आचर पिना कम्बिभ्रदागहि स्वाहा॥१४६॥

ॐव्विकिरिद्रुद्र व्विलोहित नमस्तेऽ अस्तु भगवः॥ यास्तेसहस्रꣳ हेतयोन्य मस्मन्निव पन्तुताः स्वाहा॥१४७॥

ॐसहस्राणिसहस्रशोबाह्वोस्तवहेतयः॥ तासामीशानोभगवः पराचीना मुखाकृधि स्वाहा॥१४८॥

ॐअसङ्ख्याता सहस्राणि ये रुद्राऽअधि भूम्याम्॥ तेषाꣳ सहस्र योजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१४९॥

ॐअस्मिन्महत्त्यर्णवेन्तरिक्षेभवाऽअधि॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेवधन्वानितन्मसि स्वाहा॥१५०॥

ॐनीलग्रीवाः शितिकण्ठादिवꣳ रुद्द्राऽउपश्रिताः॥ तेषाꣳ

सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१५१॥

ॐनीलग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः॥ तेषाꣳ सहस्र योजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१५२॥

ॐये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा नीलग्रीवा व्विलोहिताः॥ तेषाꣳ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१५३॥

ॐये भूतानामधि पतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः॥ तेषाꣳसहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१५४॥

ॐयेपथाम्पथि रक्षयऽऐलबृदाऽआयुय्युर्धः॥ तेषाꣳसहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१५५॥

ॐये तीर्थानि प्रचरन्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः॥ तेषाꣳ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१५६॥

ॐयेन्नेषु व्विविद्यन्ति पात्रेषु पिबतो जनान्॥ तेषाꣳ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१५७॥

ॐयऽएतावन्तश्च भूयाꣳसश्चदिशोरुद्राव्वितस्थिरे॥ तेषाꣳ सहस्रयोजने वधन्वा नितन्मसि स्वाहा॥१५८॥

ॐनमोस्तुरुद्रेब्भ्योयेदिवियेषांव्वर्षमिषवः॥ तेब्भ्योदशप्राचीर्द्दश दक्षिणादशप्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तु तेनोमृड यन्तुते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमे षाञ्जम्भेदध्मः स्वाहा॥१५९॥

ॐनमोस्तुरुद्रेब्भ्योयेऽन्तरिक्षेये षाम्बातऽइषवः।। तेब्भ्योदशप्राचीर्द्दश दक्षिणा दशप्रतीचीर्द्दशो दीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः॥ तेब्भ्योनमोऽ अस्तुतेनोवन्तुतेनो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नोद्द्वेष्टितमे षाञ्जम्भेदध्मः स्वाहा॥१६०॥

ॐनमोस्तुरुद्रेब्भ्योये पृथिव्यांये षामन्नमिषवः॥ तेब्भ्योदशप्राचीर्द्दश दक्षिणा दशप्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोर्द्ध्वाः॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोवन्तुतेनो मृडयन्तुते यन्द्विष्मोयश्च नोद्द्वेष्टि तमेषाञ्जम्भेदध्मः स्वाहा॥१६१॥

८मन्त्राः पाठमात्रम् (मात्र पाठ करें)

ॐभूः ॐभुवः ॐस्वः ॐव्वयꣳ सोमव्व्रतेतवमनस्तनू षुबिभ्रतः॥ प्रजावन्तः सचेमहि॥१॥ एषतेरुद्रभागः सहस्वस्राम्बिकयातञ्जु षस्वस्वाहैषते रुद्रभागऽआखुस्ते पशुः॥२॥ अवरुद्रमदीमह्य वदेवन्त्र्यम्बकम्॥ यथानोव्वस्य सस्करद्यथानः श्श्रेयसस्करद्यथानोव्यवसाययात्॥३॥ भेषजमसिभेषजङ्ग वेश्वायपुरुषाय भेषजम्॥ सुखम्मेषायमेष्यै॥४॥ त्र्यम्बकंय्यजामहे

सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम्॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मा मृतात्॥ त्र्यम्बकंय्यजामहे सुगन्धिम्पतिवेदनम्॥ उर्व्वा रुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मा मुतः॥५॥ एतत्तेरुद्रावसन्तेनपरोमूज वतोतीहि॥ अवततधन्वा पिना कावसः कृत्तिवासाऽअहिꣳ सन्नः शिवोतीहि॥६॥ त्र्यायुषञ्जमदग्ग्नेः कश्य पस्यत्र्यायुषम्॥ यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम्॥७॥ शिवोनामासिस्व धितिस्तेपिता नमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳ सीः॥ निवर्त्तयाम्य्या युषेन्नाद्याय प्प्रजनना यरायस्प्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय॥८॥

७मन्त्राः पाठमात्रम् (मात्र पाठ करें)

ॐ उग्रश्चभीमश्च ध्वान्तश्चधुनिश्च॥ सासह्वाँश्चाभियुग्वा चव्विक्षिपः स्वाहा॥१॥ अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्न हृदयेनभवं यक्ना॥ शर्व्वम्मतस्न्नाब्भ्या मीशानम्मन्न्युना महादेवमन्तः पर्शव्व्ये नोग्ग्रन्देवं व्वनिष्ठुनाव्वशिष्ठहनुः शिङ्गीनिकोश्याब्भ्याम्॥२॥ उग्ग्रंल्लोहितेन मित्रꣳ सौव्व्रत्त्ये नरुद्द्रन्दौर्व्व्रत्ये नेन्द्रम्प्रक्क्रीडेनमरुतो बलेनसाद्ध्यान् प्प्रमुदा॥ भवस्यकण्ठयꣳ रुद्द्रस्यान्तः पार्श्व्यम्महा देवस्ययकृच्छर्व्वस्य व्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत्॥३॥ लोमब्भ्यः स्वाहा लोमब्भ्यः स्वाहा त्त्वचेस्वाहा त्त्वचेस्वाहा लोहितायस्वाहा लोहितायस्वाहा मेदोब्भ्यः स्वाहा मेदोब्भ्यः स्वाहा॥ माꣳसेब्भ्यः स्वाहा माꣳसेब्भ्यः स्वाहा स्न्नावब्भ्यः स्वाहा स्न्नावब्भ्यः स्वाहाऽस्थब्भ्यः स्वाहाऽस्थब्भ्यः स्वाहा मज्जब्भ्यः स्वाहा मज्जब्भ्यः स्वाहा रेतसेस्वाहापायवेस्वाहा॥४॥ आयासायस्वाहा प्प्रायासायस्वाहा संय्यासायस्वाहा व्वियासायस्वाहो द्यासायस्वाहा॥ शुचेस्वाहाशोचतेस्वाहा शोचमानायस्वाहाशोकायस्वाहा॥५॥ तपसेस्वाहा तप्प्यतेस्वाहा तप्प्यमानायस्वाहातप्प्तायस्वाहाघर्म्मायस्वाहा॥ निष्कृत्यैस्वाहा प्प्रायश्चित्त्यैस्वाहाभेषजायस्वाहा॥६॥ यमायस्वाहान्तकायस्वाहा मृत्यवे स्वाहा॥ ब्रह्मणेस्वाहाब्ब्रह्महत्यायैस्वाहा व्विश्श्वेब्भ्योदेवेब्भ्यः स्वाहाद्यावा पृथिवीब्भ्याꣳ स्वाहा॥७॥

हवनम्

ॐव्वाजश्श्चमेप्रसवश्श्चमेप्प्रयतिश्श्चमेप्प्रसितिश्श्चमे धीतिश्श्चमेक्क्रतुश्श्चमे स्वरश्श्चमेश्श्लोकश्श्चमे श्रवश्श्चमे श्श्रुतिश्श्चमेज्ज्योतिश्श्चमे स्वश्श्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥१॥ प्राणश्श्चमे पानश्च्चमेव्व्यानश्श्चमे सुश्श्चमेचित्तञ्चमऽआधीतञ्चमे व्वाक्चमेमनश्श्चमेचक्षुश्श्चमे श्रोत्रञ्चमे दक्षश्श्चमे बलञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२॥ ओजश्चमेसहश्श्चमऽआत्क्माचमेतनूश्श्चमे शर्म्मचमेव्वर्म्मचमेङ्गानिचमे स्थीनि

चमे परूꣳषि च मे शरीराणिचमऽ आयुश्चमेजराचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥३॥ ज्यैष्ठ्यञ्चमऽआधिपत्त्यञ्चमे मन्न्युश्चमेभामश्चमे मश्चमेम्भश्चमेजेमाचमे महिमाचमे व्वरिमाचमेप्प्रथिमाचमेव्वर्षिमाचमे द्राघिमाचमेव्वृद्धञ्चमे व्वृद्धिश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥४॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐसत्त्यञ्चमेश्रद्धाचमे जगच्चमेधनञ्चमे व्विश्श्वञ्चमेमहश्चमे क्रीडाचमे मोदश्चमेजातञ्चमेजनिष्ष्यमाणञ्चमे सूक्तञ्चमेसुकृतञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥५॥ ऋतञ्चमेमृतञ्चमेयक्ष्मञ्चमेनामयच्चमे जीवातुश्चमेदीर्घायुत्वञ्चमे नमित्रञ्चमेभ यञ्चमे सुखञ्चमेशयनञ्चमे सूषाश्चमेसुदिनञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥६॥ यन्ताचमे धर्त्ताचमेक्षेमश्चमेधृतिश्चमे व्विश्श्वञ्चमेमहश्चमेसंव्विच्चमे ज्ञात्रञ्चमेसूश्चमेप्रसूश्चमे सीरञ्चमेलयश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥७॥ शञ्चमे मयश्चमे प्प्रियञ्चमेनुकामश्चमे कामश्चमेसौमनसश्चमे भगश्चमेद्द्रविणञ्चमे भद्द्रञ्चमेश्रेयश्चमे व्वसीयश्चमे यशश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥८॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐऊर्क्चमेसूनृताचमे पयश्चमेरसश्चमे घृतञ्चमेमधुचमे सग्ग्धिश्श्चमे सपीतिश्श्चमे कृषिश्चमेव्वृष्टिश्चमे जैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥९॥ रयिश्चमेरायश्चमे पुष्टञ्चमेपुष्टिश्चमे व्विभुचमेप्रभुचमे पूर्णञ्चमेपूर्णतरञ्चमे कुयवञ्चमेक्षितञ्चमेन्नञ्चमेक्षुच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१०॥ व्वित्तञ्चमेव्वेद्यञ्चमे भूतञ्चमेभविष्यच्चमे सुगञ्चमेसुपत्थ्यञ्चमऽऋद्धञ्चमऽऋद्धिश्चमे क्लृप्तञ्चमे क्लृप्तिश्चमे मतिश्चमेसुमतिश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥११॥ व्व्रीहयश्चमे यवाश्चमे माषाश्चमे तिलाश्चमेमुद्गाश्चमे खल्ल्वाश्चमेप्रियङ्गवश्चमे णवश्चमे श्यामाकाश्चमे नीवाराश्चमे गोधूमाश्चमे मसूराश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥१२॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐअश्म्माचमेमृत्तिकाचमे गिरयश्चमेपर्व्वताश्चमे सिकताश्चमे व्वनस्प्पत यश्चमेहिरण्यञ्चमे यश्चमेश्यामञ्चमे लोहञ्चमेसीसञ्चमे त्रपुचमेयज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥१३॥ अग्निश्चमऽआपश्चमेव्वीरुधश्चमऽओषधयश्चमेकृष्टपच्च्याश्च मेकृष्टपच्च्याश्चमे ग्राम्म्याश्चमेपशवऽआरण्ण्याश्चमेव्वित्तञ्चमे व्वित्तिश्चमे भूतञ्चमेभूतिश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१४॥ व्वसुचमेव्वसतिश्चमे कर्म्मचमे शक्तिश्चमेर्त्थश्चमऽएमश्चमऽ इत्याचमेगतिश्चमे यज्ञेनकल्प्पान्ताम् स्वाहा॥१५॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐअग्निश्चमऽइन्द्रश्चमे सोमश्चमऽइन्द्रश्चमे सविताचमऽइन्द्रश्चमे सरस्वती

चमऽइन्द्रश्चमे पूषाचमऽइन्द्रश्चमेबृहस्पतिश्चमऽइन्द्रश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१६॥ मित्रश्चमऽइन्द्रश्चमे व्वरुणश्चमऽइन्द्रश्चमे धाताचमऽइन्द्रश्चमेत्त्वष्टाचमऽइन्द्रश्चमे मरुतश्चमऽइन्द्रश्चमेव्विश्वे चमेदेवाऽइन्द्रश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१७॥ पृथिवी चमऽइन्द्रश्चमेन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्चमेद्यौश्चमऽ इन्द्रश्चमेसमाश्चमऽइन्द्रश्चमे नक्षत्राणि चमऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमऽइन्द्रश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥१८॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐ अः शुश्चमेरश्मिश्चमेदाब्भ्यश्चमे धिपतिश्चमऽउपाꣳ शुश्चमेन्तर्य्या मश्चमऽऐन्द्रवायवश्चमे मैत्राव्वरुणश्चमऽआश्विनश्चमे प्रतिप्प्रस्थानश्चमे शुक्रश्चमेमन्थीचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१९॥ आग्रयणश्चमेव्वैश्वदेवश्चमे ध्रुवश्चमे व्वैश्श्वानरश्चमऽऐन्द्राग्नश्चमे महाव्वैश्श्वदेवश्चमे मरुत्वतीयाश्चमेनिष्क्के वल्यश्चमे सावित्रश्चमेसारस्वतश्चमे पात्क्नीवतश्चमे हारियोजनश्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥२०॥ स्रुचश्चमेचमसाश्चमे व्वायव्यानिचमे द्रोण कलशश्चमे ग्ग्रावाणश्चमे धिषवणेचमे पूतभृच्चमऽआधवनीयश्चमेव्वेदिश्चमे बर्हिश्चमे वभृ थश्चमे स्वगाकारश्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥२१॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐअग्निश्चमे घर्म्मश्चमेर्क्कश्चमे सूर्य्यश्चमेप्प्राणश्चमेश्श्वमेधश्चमे पृथिवीचमेदितिश्चमे दितिश्चमेद्यौश्चमेङ्गुलयः शक्क्वरयोदिशश्चमे यज्ञेन कल्प्पन्ताम्॥२२॥ व्व्रतञ्चमऽऋतवश्चमे तपश्चमेसंवत्सरश्चमेहोरात्रेऽ ऊर्व्वष्ठीवेबृहद्रथन्तरेचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥२३॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐएकाचमे तिस्त्रश्चमेतिस्त्रश्चमे पञ्चचमेपञ्चचमे सप्तचमेसप्तचमे नवचमेनव चमऽएकादशचमऽएकादशचमे त्रयोदशचमेत्रयोदशचमे पञ्चदशचमेपञ्चदशचमे सप्तदश चमेसप्तदशचमे नवदशचमेनवदशचमऽ एकविꣳ शतिश्चमऽएकविꣳशतिश्चमे त्रयोविꣳ शतिश्चमेत्रयोविꣳ शतिश्चमे पञ्चविꣳ शतिश्चमेपञ्चविꣳ शतिश्चमेसप्तविꣳ शतिश्चमेसप्तविꣳ शतिश्चमे नवविꣳ शतिश्चमे नवविꣳ शतिश्चमऽएकत्रिꣳ शच्चमे त्रयस्त्रिꣳ शच्चमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥२४॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐचतस्त्रश्चमेष्टौचमेष्टौचमेद्वादशचमेद्वादशचमे षोडशचमेषोडशचमे विꣳशतिश्चमे विꣳ शतिश्चमेचतुर्व्विꣳ शतिश्चमे चतुर्व्विꣳ शतिश्चमेष्टाविꣳ शतिश्चमेष्टाविꣳ शतिश्चमे द्वात्रिꣳ शच्चमेद्वात्रिꣳ शच्चमे षट्त्रिꣳ शच्चमेषट्त्रिꣳ

शच्चमे चत्वारिꣳ शच्चमे चत्वारिꣳ शच्चमे चतुश्चत्वारिꣳ शच्चमेचतुश्चत्वारिꣳ शच्चमेष्टाचत्वारिꣳ शच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥२५॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐव्यविश्चमेव्यवीचमे दित्यवाट्चमेदित्यौहीचमे पञ्चाविश्चमेपञ्चावीचमे त्रिवत्सश्चमे त्रिवत्साचमेतुर्य्यवाट्चमेतुर्य्यौहीचमे यज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥२६॥ पष्ठवाट्चमेपष्ठौहीचमऽउक्षाचमे व्वशाचमऽऋषभश्चमे व्वेहच्चमेनड्वाँश्चमे धेनुश्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् स्वाहा॥२७॥

६मन्त्राः स्वाहा

ॐ यज्जाग्रतो दूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्य तथैवैति। दूरङ्गमञ्ज्योति षाञ्ज्योति रेकन्तन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु॥१॥ येनकर्म्माण्यपसो मनीषिणो यज्ञे कृण्वन्ति व्विदथेषुधीराः॥ यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्प्रजानान्तन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु॥२॥ यत्त्प्रज्ञान मुतचेतो धृतिश्चयज्ज्यो तिरन्तरमृतम्प्रजासु॥ यस्मान्नऽऋतेकिञ्चन कर्म्मक्रियतेतन्मेमनः शिव शङ्कल्प्पमस्तु॥३॥ येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत् परिगृहीतममृतेनसर्व्वम्॥ येनयज्ञस्ता यते सप्तहोतातन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु॥४॥ यस्मिन्नृचः सामयजूꣳषि यस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः॥ यस्मिँश्चित्तꣳ सर्व्व मोतम्प्रजा नान्तन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु ॥५॥ सुषारथिरश्वानिव यन्मनुष्यान्ने नीयतेभीसुभिर्व्वा जिनऽइव॥ हृत्प्रतिष्ठुंयदजिरञ्ज विष्ठुन्तन्मेमनः शिवशङ्कल्प्पमस्तु स्वाहा॥६॥

१६मन्त्राः स्वाहा

ॐसहस्रशीर्षापुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्॥ सभूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्त्वा त्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम्॥१॥ पुरुषऽएवेदꣳ सर्व्वंय्यद्भूतंय्यच्चभाव्व्यम्। उतामृ तत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति॥२॥ एतावानस्य महिमातोज्यायाँश्चपूरुषः॥ पादोस्यव्विश्वाभूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि॥३॥ त्रिपादूर्द्ध्वंऽउदैत्त्पुरुषः पादोस्येहा भवत्त्पुनः॥ ततोव्विख्वङ्व्यक्क्रा मत्साशनानशनेऽअभि॥४॥ ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः॥ सजातोऽअत्त्यरिच्च्य तपश्चाद्भूमि मथोपुरः॥५॥ तस्माद्यज्ञात्त्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम्॥ पशूँताँश्चक्क्रे व्वायव्व्या नारण्याग्राम्याश्चजे॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे। छन्दाꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्म्मा दजायत॥७॥ तस्मादश्श्वाऽअजायन्तये केचोभयादतः॥ गावोहजज्ञिरेतस्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः॥८॥ तंय्यज्ञम्बर्हि षिप्प्रौक्षन्पुरुषञ्जातमग्रतः॥ तेनदेवाऽअयजन्त साध्याऽऋषयश्चये॥९॥

यत्पुरुषम्व्व्यदधुः कतिधाव्व्यकल्प्पयन्॥ मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमू रूपादाऽउच्च्येते॥१०॥ व्ब्राह्मणोऽस्यमुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः॥ ऊरू तदस्ययद्वैश्यः पद्भ्याꣳशूद्रोऽअजायत॥११॥ चन्द्रमामनसो जातश्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत॥ श्श्रोत्राद्वायुश्च्चप्प्राणश्च्च मुखादग्निरजायत॥१२॥ नाब्भ्याऽआसी दन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत॥ पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२॥अकल्प्पयन् ॥१३॥ यत्पुरुषेणहविषादेवायज्ञमतन्वत। व्वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः॥१४॥ सप्तास्यासन्न्परिध यस्त्रिः सप्प्तसमिधः कृताः। देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽअबध्नन्न्पुरुषम्पशुम्॥१५॥ यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानिधर्म्माणि प्प्रथमान्न्यासन्। तेहनाकम्महिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः स्वाहा॥१६॥

६मन्त्राः (उत्तर नारायण) स्वाहा

ॐअद्भ्यः सम्भृतः पृथिव्व्यैरसाचव्विश्वकर्म्मणः समवर्त्तताग्रे। तस्यत्त्वष्टा व्विदधद्रू पमेतितन्न्मर्त्त्यस्य देवत्त्वमाजानमग्रे॥१७॥ व्वेदाहमे तम्पुरुषम्महान्तमादित्य वर्ण्णन्त मसः परस्तात्॥ तमेवव्विदित्त्वाति मृत्युमेतिनान्यः पन्थाविद्यतेयनाय॥१८॥ प्रजापतिश्च्च रतिगर्ब्भेऽअन्तरजाय मानोबहुधाव्विजायते॥ तस्ययोनिम्परिपश्यन्तिधीरास्तस्मिन्न्हतस्थुर्ब्भुवनानि व्विश्श्वा॥१९॥ योदेवेब्भ्यऽआतपतियोदेवानाम्पुरोहितः॥ पूर्व्वोयोदेवेब्भ्यो जातोनमोरुचायब्ब्राह्मये॥२०॥ रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्रेत दब्ब्रुवन्॥ यस्त्वैवम्ब्राह्मणो व्विद्यात्तस्यदेवाऽअसन्न्वशे॥२१॥ श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्या वहोरात्रे पार्श्वेनक्षत्रणि रूपमश्श्विनौव्व्यात्तम्॥ इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाण सर्व्वलोकम्मऽइषाण स्वाहा॥२२॥

१२मन्त्राः स्वाहा

ॐआशुः शिशानो व्वृषभोनभीमो घनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम्॥ सङ्क्रदनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्त्सा कमिन्द्रः॥१॥ सङ्क्रदनेना निमिषेणजिष्णुनायुत्त्कारेण दुश्च्च्यवनेनधृष्णुना॥ तदिन्द्रेणजयततत्त्स हद्ध्वँय्युधोनरऽइषुहस्तेनव्वृष्णा॥२॥ सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳ सृष्टासयुधऽइन्द्रोगणेन॥ सꣳ सृष्टजित्त्सोमपाबाहु शर्द्ध्युग्र धन्न्वाप्प्रतिहिता भिरस्ता॥३॥ बृहस्पतेपरिदीया रथेनरक्षोहामित्राँ२॥ऽ अपबाधमानः॥ प्रभञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणोयुधा जयन्नस्म्माकमेद्ध्यवितारथानाम्॥४॥ बलविज्ञा यस्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्न्वाजीसहमानऽउग्रः॥ अभिवीरोऽअभिसत्त्वा सहोजाजैत्रमिन्द्र रथमातिष्ठगोवित्॥५॥ गोत्रभिदङ्गो विदंव्वज्ज्रबाहुञ्जयन्त

मज्ज्मप्प्रमृणन्तमोजसा॥ इमꣳ सजाताऽअनुवीरयद्ध्वमिन्द्रꣳ सखायोऽअनुसꣳ रभद्ध्वम्॥६॥ अभिगोत्राणिसहसागा हमानोदयोव्वीरः शतमन्न्युरिन्द्रः॥ दुश्च्यवनः पृतनाषाडयुध्योस्माकꣳसेनाऽअवतु प्प्रयुत्त्सु॥७॥ इन्द्रऽआसान्नेता बृहस्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः॥ देवसेनानामभिभञ्जतीभञ्जयन्ती नाम्मरुतो यन्त्वग्ग्रम्॥८॥ इन्द्रस्यव्वृष्णोव्वरुणस्य राज्ञऽआदित्त्या नाम्मरुताꣳ शर्द्धऽउग्ग्रम्॥ महामनसम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषो देवानाञ्जयता मुदस्त्थात्॥९॥ उद्धर्षयमघवन्ना युधान्युत्सत्त्व नाम्मामकानाम्मनाꣳसि॥ उद्बृत्रहन्न्वाजिनांव्वाजिनान्न्यु द्रथानाञ्जयतां य्यन्तुघोषाः॥१०॥ अस्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजेष्ष्वस्माकंय्याऽइषवस्ताजयन्तु॥ अस्माकं व्वीराऽउत्तरे भवन्त्वस्माँ२॥ऽ उदेवाऽअवताहवेषु॥११॥ अमीषाञ्चित्तम्प्रति लोभयन्ती गृहाणाङ्गान्न्यप्प्वेपरेहि॥ अभिप्प्रेहिनिर्द्दहहृत्सुशोकैरन्धेना मित्रास्तमसासचन्ताम् स्वाहा॥१२॥

१७मन्त्राः स्वाहा

ॐव्विभ्राड्बृहत्पिबतु सोम्म्यमद्ध्वा युर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ॥ व्वातजूतोयोऽ अभिरक्षतित्त्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरुधाव्विराजति॥१॥ उदुत्त्यञ्जात वेदसन्देवंव्वहन्तिकेतवः॥ दृशेव्विश्श्वायसूर्य्यम्॥२॥ येनापावकचक्षसा भुरण्यन्तञ्जनाँ२॥ऽअनु॥ त्वंव्वरुण पश्यसि॥३॥ देव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽआगतꣳ रथेन सूर्य्यत्त्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञꣳ समञ्जाथे॥ तम्प्रत्क्नथाऽयंव्वेनश्चित्रन्देवानाम् ॥४॥ तम्प्रत्क्नथापूर्व्वथाव्विश्श्वथेमथाज्ज्येष्ठतातिम्बर्हिषदꣳ स्वर्व्विदम्। प्रतीचीनं व्वृजनन्दोहसे धुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुव्वर्द्धसे॥५॥ अयंव्वेनश्चोदयत्पृश्निन्न गर्ब्भाज्ज्योतिर्ज्जरायूरजसोव्विमाने॥ इममपाꣳ सङ्गमेसूर्य्यस्य शिशुन्नव्विप्रा मतिभीरिहन्ति॥६॥ चित्रन्देवानामुदगादनी कञ्चक्षुर्म्मित्रस्यव्वरुणस्याग्ग्नेः॥ आप्प्राद्यावा पृथिवीऽअन्तरिक्षꣳ सूर्य्यऽआत्माजगतस्तस्त्थुषश्च॥७॥ आनऽ इडाभिर्व्विदथे सुशस्ति व्विश्श्वानरः सवितादेवऽएतु। अपियथायुवा नोमत्सथानोव्विश्श्वञ्जगदभि पित्त्वेमनीषा॥८॥ यदद्यकच्चव्वृत्रहन्नुदगाऽ अभिसूर्य्य॥ सर्व्वन्तदिन्द्रतेव्वशे॥९॥ तरणिर्व्विश्श्वदर्शतोज्ज्यो तिष्कृदसिसूर्य्य॥ व्विश्श्वमाभासिरोचनम्॥१०॥ तत्त्सूर्य्यस्यदेवत्वन्तन्न्महित्त्वम्मद्ध्या कर्त्तोर्व्वित तꣳसञ्जभार॥ यदेयुक्तहरितः सधस्थादाद्रात्रीव्वा सस्तनुतेसिमस्म्मै।।११।। तन्मित्रस्यव्वरुणस्याभिचक्षे सूर्य्योरूपङ् कृणुतेद्योरुपस्त्थे॥ अनन्तमन्न्यद्रुश दस्यपाजः कृष्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति॥१२॥ बण्महाँ२॥ऽअसिसूर्य्यबडा दित्त्यमहाँ२॥ऽअसि॥ महस्तेसतोमहिमा पनस्यतेद्धादेवमहाँ२।।ऽअसि॥१३॥

बट्सूर्य्यश्र वसामहाँ२॥ऽ असिसत्रा देवमहाँ२॥ऽअसि॥ मह्नादेवानामसुर्य्यः पुरोहितो व्विभुज्न्योतिरदाब्भ्यम्॥१४॥ श्रायन्तऽइवसूर्य्यंव्विश्वेदिन्द्रस्य भक्षत॥ व्वसूनिजातेजनमानऽओज साप्प्रतिभा गन्नदीधिम॥१५॥ अद्यादेवाऽ उदितासूर्य्यस्यनिरꣳ हसः पिपृतानिरवद्यात्॥ तन्नोमित्रो व्वरुणोमामहन्ता मदितिः सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः॥ आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानो निवेशयन्न मृतम्मर्त्यञ्च॥ हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयाति भुवनानिपश्यन् स्वाहा ॥१७॥

ॐनमस्ते (१६१ आहुतयः)

ॐव्वाजायस्वाहाप्प्रसवायस्वाहा पिजायस्वाहाक्रतवेस्वाहा व्वसवे स्वाहाहर्प्पतयेस्वाहान्हेमुग्धायस्वाहा मुग्धायव्वैनꣳ शिनायस्वाहा व्विनꣳ शिनऽआन्त्यायनाय स्वाहान्त्यायभौवनायस्वाहा भुवनस्यपतयेस्वाहाधिपतये स्वाहाप्प्रजापतयेस्वाहा। इयन्तेराण्मित्रायायन्तासियमनऽऊर्ज्जेत्वा व्वृष्टचैत्वा प्प्रजानान्त्वाधिपत्याय स्वाहा॥२८॥

ॐआयुर्य्यज्ञेन कल्प्यताम्प्राणो यज्ञेनकल्प्यताञ्चक्षुर्य्यज्ञेन कल्प्यताꣳ श्श्रोत्रंयज्ञेनकल्प्यतां व्वाग्ग्यज्ञेनकल्प्यताम्मनो यज्ञेनकल्प्यतामात्मायज्ञेन कल्प्यताम्ब्रह्मायज्ञेन कल्प्यताञ्ज्योतिर्य्यज्ञेनकल्प्यताꣳ स्वर्य्यज्ञेन कल्प्यताम्पृष्ठं यज्ञेनकल्प्यतांयज्ञोयज्ञेनकल्प्यताम्॥ स्तोमश्चयजुश्चऽऋक्च सामचबृहच्चरथन्तरञ्च॥ स्वर्द्देवाऽअगन्मामृताऽअभूमप्प्रजापतेः प्प्रजाऽअभूमव्वेट् स्वाहा॥२९॥

२४मन्त्राः स्वाहा

ॐऋचंव्वाम्प्रपद्येमनोयजुः प्प्रपद्येसामप्प्राणम्प्रपद्येचक्षुः श्रोत्रंप्रपद्ये॥ व्वागोजः सहौजोमयिप्प्राणापानौ स्वाहा॥१॥

ॐयन्मेच्छिद्द्रञ्चक्षुषोहृदयस्य मनसोव्वातितृण्णम्बृहस्प्पतिर्म्मे तद्दधातु। शन्नोभवतुभुवनस्य यस्प्पतिः स्वाहा॥२॥

ॐभूर्भुवः स्वः तत् सवितुर्व्वरण्येयं भर्ग्गोदेवस्य धीमहि। धियो योनः प्प्रचोदयात् स्वाहा ॥३॥

ॐकयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा॥ कयाशचिष्ठयाव्वृता स्वाहा॥४॥

कस्त्वासत्योमदानाम्मꣳ हिष्ठोमत्सदन्धसः॥ दृढाचिदारुजेव्वसुस्वाहा ।५।

ॐअभीषुणः सखीनामविताजरितृणाम्॥ शतम्भवास्यूतिभिः स्वाहा॥६॥

ॐकयात्वन्नऽऊत्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषन्॥ कयास्तोतृब्भ्यऽआभर स्वाहा॥७॥

ॐइन्द्रोव्विश्वस्यराजति॥ शन्नोऽअस्तु द्विद्विपदेशञ्चतुष्प्पदे स्वाहा॥८॥

ॐशन्नोमित्रः शंव्वरुणः शन्नोभवत्वर्य्यमा॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्पतिः शन्नोव्विष्णु रुरुक्क्रमः स्वाहा॥९॥

ॐशन्नोव्वातः पवताꣳ शन्नस्तपतुसूर्य्यः। शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्न्योऽ अभिवर्षतु स्वाहा॥१०॥

ॐअहानिशम्भवन्तुः शꣳ रात्रीः प्प्रतिधीयताम्॥ शन्नऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रा वरुणारातहव्या ॥ शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौ शमिन्द्रासोमासुवितायशंय्योः स्वाहा॥११॥

ॐशन्नोदेवीरभिष्टयऽआपोभवन्तुपीतये॥ शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः स्वाहा॥१२॥

ॐस्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी॥ यच्छानः शर्म्मसप्रथाः स्वाहा ॥१३॥

ॐआपोहिष्ठ्वामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन॥ महेरणायचक्षसे स्वाहा॥१४॥

ॐयोवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः॥ उशतीरिवमातरः स्वाहा॥१५॥

ॐतस्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ॥ आपोजनयथाचनः स्वाहा॥१६॥

ॐद्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः॥ व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सामा शान्तिरेधि स्वाहा॥१७॥

ॐदृतेदृꣳ हमामित्रस्यमाचक्षुषा सर्व्वाणिभूतानि समीक्षन्ताम्॥ मित्रस्या हञ्चक्षुषा सर्व्वाणिभूतानि समीक्षे॥ मित्रस्यचक्षुषा समीक्षामहे स्वाहा॥१८॥

ॐदृतेदृꣳ हमाज्योक्तेसन्दृशिजीव्यासञ्ज्योक्तेसन्दृशि जीव्यासम् स्वाहा॥१९॥

ॐनमस्तेहरसेशोचिषे नमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे॥ अन्याँस्तेऽअस्म्मत्तपन्तु हेतयः पावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳ शिवोभव स्वाहा॥२०॥

ॐनमस्तेऽअस्तुव्विद्युतेनमस्तेस्तनयित्नवे। नमस्तेभगवन्नस्तुयतः स्वः समीहसे स्वाहा॥२१॥

ॐयतोयतः समीहसेततोनोऽअभयङ्कुरु। शन्नः कुरुप्प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः स्वाहा॥२२॥

ॐसुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्म्मै सन्तुयोस्म्मान् द्द्वेष्टियञ्च व्वयन्द्विष्मः ॥२३॥

ॐतच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतꣳ शृणुया मशरदः शतम्प्रब्ब्रवामशरदः शतमदीनाः स्यामशरदः शतम्भूयश्चशरदः शतात् स्वाहा॥२४॥

५मन्त्राः पाठमात्रम्

ॐसद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः॥१॥ वामदेवायनमो ज्येष्ठायनमः श्रेष्ठायनमो रुद्रायनमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥२॥ अघोरेभ्योऽथघोरेभ्योघोरघोरतरेभ्यः। सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्योनमस्तेऽअस्तु रुद्र रूपेभ्यः ॥३॥ तत्पुरुषायविद्महेमहादेवायधीमहि। तन्नोरुद्रः प्रचोदयात् ॥४॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपति र्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवोमेऽअस्तु सदाशिवोऽम् ॥५॥

ॐभूर्भुवः स्वः अनेन कृतेन हवनाख्येन कर्मणा साङ्गतासिद्धचर्थं तत् सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं भगवान् रुद्रदेवता प्रीयतां न मम ॥

ॐ तत् सत् श्रीसदाशिवार्पणमस्तु॥

ततः षडङ्गन्यासं कुर्याइिति।

॥ इति रुद्रयाग हवनमन्त्राः ॥

शिवसहस्रनामावलिः

विनियोगः

ॐअस्य श्रीशिवसहस्रनाम मन्त्रस्य नारायण ऋषिः श्रीसदाशिवो देवता अनुष्टुप् छन्दः श्रीशिवोबीजं गौरीशक्तिः श्रीशिवप्रीत्यर्थं तद्दिव्य सहस्रनामभिः अमुकद्रव्य (बिल्वपत्र, मन्दारपुष्पधत्तूरनील कमलादि) समर्पणे विनियोगः। (विनियोग पढ़कर जल किसी पात्र में छोड़ दें)

करन्यासः–ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ मः मध्यमाभ्यां नमः। ॐ शिं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ वां कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ यं करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यासः–ॐ हृदयाय नमः। ॐ नं शिरसे स्वाहा। ॐ मः शिखायै वषट्। ॐ शिं कवचाय हुम्। ॐ वां नेत्रत्रयाय वौषट्। ॐ यं अस्त्राय फट्।

ध्यानम्

हाथ में अक्षत-पुष्प-विल्वपत्र लेकर भगवान आशुतोष का ध्यान करें–

ध्यायेन्नित्यं महेशं रजत गिरि निभं चारु चन्द्रा वतंसं
रत्नाकल्पो ज्वलाङ्गं परशु मृगवरा भीतिहस्तं प्रसन्नम्।
पद्मासीनं समन्तात् स्तुत ममर गणैर्व्यध्र कृत्तिं वसानं
विश्वाद्यं विश्ववन्द्यं निखिल भयहरं पञ्चवक्त्रं त्रिनेत्रम्।।

अर्थ-चाँदी के पर्वत के समान जिनकी श्वेत कान्ति है, जो सुन्दर चन्द्रमा को आभूषण रूप से धारण करते हैं, रत्नमय अलंकारों से जिनका शरीर उज्ज्वल है, जिनके हाथों में परशु तथा मृग और अभय मुद्रायें हैं जो प्रसन्न हैं, पद्म के आसन पर विराजमान हैं, देवतागण जिनके चारों ओर खड़े होकर स्तुति करते हैं, जो बाघ की खाल पहनते हैं, जो विश्व के आदि, जगत् की उत्पत्ति के बीज और समस्त भयों को हरने वाले हैं, जिनके पाँच मुख और तीन नेत्र हैं, उन महेश्वर का प्रतिदिन ध्यान करें।

भगवान् शिव के १००८ नामों का उच्चारण करते हुए एक-एक विल्वपत्र (या चावल-पुष्प) चढ़ायें–

१. ॐ स्थिराय नमः।
२. ॐ स्थाणवे नमः।
३. ॐ प्रभवे नमः।
४. ॐ भीमाय नमः।
५. ॐ प्रवराय नमः।
६. ॐ वरदाय नमः।
७. ॐ वराय नमः।
८. ॐ सर्वात्मने नमः।
९. ॐ सर्वविख्याताय नमः।
१०. ॐ सर्वस्मै नमः।
११. ॐ सर्वकराय नमः।
१२. ॐ भवाय नमः।
१३. ॐ जटिने नमः।
१४. ॐ चर्मिणे नमः।
१५. ॐ शिखण्डिने नमः।
१६. ॐ सर्वाङ्गाय नमः।
१७. ॐ सर्वभावनाय नमः।
१८. ॐ हराय नमः।
१९. ॐ हरिणाक्षाय नमः।
२०. ॐ सर्वभूतहराय नमः।
२१. ॐ प्रभवे नमः।
२२. ॐ पृवृत्तये नमः।
२३. ॐ निवृत्तये नमः।
२४. ॐ नियताय नमः।
२५. ॐ शाश्वताय नमः।
२६. ॐ ध्रुवाय नमः।
२७. ॐ श्मशानवासिने नमः।
२८. ॐ भगवते नमः।
२९. ॐ खचराय नमः।
३०. ॐ गोचराय नमः।
३१. ॐ अर्दनाय नमः।
३२. ॐ अभिवाद्याय नमः।
३३. ॐ महाकर्मणे नमः।
३४. ॐ तपस्विने नमः।
३५. ॐ भूतभावनाय नमः।
३६. ॐ उन्मत्तवेषप्रच्छन्नाय नमः।
३७. ॐ सर्वलोकप्रजापतये नमः।
३८. ॐ महारूपाय नमः।
३९. ॐ महाकायाय नमः।
४०. ॐ वृषरूपाय नमः।
४१. ॐ महायशसे नमः।
४२. ॐ महात्मने नमः।
४३. ॐ सर्वभूतात्मने नमः।
४४. ॐ विश्वरूपाय नमः।
४५. ॐ महाहनवे नमः।
४६. ॐ लोकपालाय
४७. ॐ अन्तर्हितात्मने नमः।
४८. ॐ प्रसादाय नमः।
४९. ॐ हयगर्दभये नमः।
५०. ॐ पवित्राय नमः।
५१. ॐ महते नमः।
५२. ॐ नियमाय नमः।
५३. ॐ नियमाश्रिताय नमः।
५४. ॐ सर्वकर्मणे नमः।
५५. ॐ स्वयंभूताय नमः।
५६. ॐ आदये नमः।
५७. ॐ आदिकराय नमः।
५८. ॐ निधये नमः।
५९. ॐ सहस्राक्षाय नमः।
६०. ॐ विशालाक्षाय नमः।
६१. ॐ सोमाय नमः।
६२. ॐ नक्षत्रसाधकाय नमः।

६३. ॐ चन्द्राय नमः।
६४. ॐ सूर्याय नमः।
६५. ॐ शनये नमः।
६६. ॐ केतवे नमः।
६७. ॐ ग्रहाय नमः।
६८. ॐ ग्रहपतये नमः।
७९. ॐ वराय नमः।
७०. ॐ अत्रये नमः।
७१. ॐ अत्र्यानमस्कर्त्रे नमः।
७२. ॐ मृगबाणार्पणाय नमः।
७३. ॐ अनघाय नमः।
७४. ॐ महातपसे नमः।
७५. ॐ घोर तपसे नमः।
७६. ॐ अदीनाय नमः।
७७. ॐ दीनसाधकाय नमः।
७८. ॐ संवत्सरकराय नमः।
७९. ॐ मन्त्राय नमः।
८०. ॐ प्रमाणाय नमः।
८१. ॐ परमाय तपसे नमः।
८२. ॐ योगिने नमः।
८३. ॐ योज्याय नमः।
८४. ॐ महाबीजाय
८५. ॐ महारेतसे नमः।
८६. ॐ महाबलाय नमः।
८७. ॐ सुवर्णरेतसे नमः।
८८. ॐ सर्वज्ञाय नमः।
८९. ॐ सुबीजाय नमः।
९०. ॐ बीजवाहनाय नमः।
९१. ॐ दशबाहवे नमः।
९२. ॐ अनिमिषाय नमः।
९३. ॐ नीलकण्ठाय नमः।
९४. ॐ उमापतये नमः।
९५. ॐ विश्वरूपाय नमः।
९६. ॐ स्वयं श्रेष्ठाय नमः।
९७. ॐ बलबीराय नमः।
९८. ॐ अबलगणाय नमः।
९९. ॐ गणकर्त्रे नमः।
१००. ॐ गणपतये नमः।
१०१. ॐ दिग्वाससे नमः।
१०२. ॐ कामाय नमः।
१०३. ॐ मन्त्रविदे नमः।
१०४. ॐ परममन्त्राय नमः।
१०५. ॐ सर्वभावकराय नमः।
१०६. ॐ हराय नमः।
१०७. ॐ कमण्डलुधराय नमः।
१०८. ॐ धन्विने नमः।
१०९. ॐ बाणहस्ताय नमः।
११०. ॐ कपालवते नमः।
१११. ॐ अशनिने नमः।
११२. ॐ शतघ्निने नमः।
११३. ॐ खड्गिने नमः।
११४. ॐ पट्टिशिने नमः।
११५. ॐ आयुधिने नमः।
११६. ॐ महते नमः।
११७. ॐ स्रुवहस्ताय नमः।
११८. ॐ सुरूपाय नमः।
११९. ॐ तेजसे नमः।
१२०. ॐ तेजस्करनिधये नमः।
१२१. ॐ उष्णीषिणे नमः।
१२२. ॐ सुवक्त्राय नमः।
१२३. ॐ उदग्राय नमः।
१२४. ॐ विनताय नमः।

१२५. ॐ दीर्घाय नमः।
१२६. ॐ हरिकेशाय नमः।
१२७. ॐ सुतीर्थाय नमः।
१२८. ॐ कृष्णाय नमः।
१२९. ॐ शृगालरूपाय नमः।
१३०. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
१३१. ॐ मुण्डाय नमः।
१३२. ॐ सर्वशुभङ्कराय नमः।
१३३. ॐ अजाय नमः।
१३४. ॐ बहुरूपाय नमः।
१३५. ॐ गन्धधारिणे नमः।
१३६. ॐ कपर्दिने नमः।
१३७. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः।
१३८. ॐ ऊर्ध्वलिङ्गाय
१३९. ॐ ऊर्ध्वशायिने नमः।
१४०. ॐ नभस्थलाय नमः।
१४१. ॐ त्रिजटिने नमः।
१४२. ॐ चीरवाससे नमः।
१४३. ॐ रुद्राय नमः।
१४४. ॐ सेनापतये नमः।
१४५. ॐ विभवे नमः।
१४६. ॐ अहश्चराय नमः।
१४७. ॐ नक्तंचराय नमः।
१४८. ॐ तिग्मन्यवे नमः।
१४९. ॐ सुवर्चसाय नमः।
१५०. ॐ गजघ्ने नमः।
१५१. ॐ दैत्यघ्ने नमः।
१५२. ॐ कालाय नमः।
१५३. ॐ लोकधात्रे नमः।
१५४. ॐ गुणाकराय नमः।
१५५. ॐ सिंहशार्दूलरूपाय नमः।
१५६. ॐ आर्द्रचर्माम्बरावृताय नमः।
१५७. ॐ कालयोगिने नमः।
१५८. ॐ महानादाय नमः।
१५९. ॐ सर्वकामाय नमः।
१६०. ॐ चतुष्पथाय नमः।
१६१. ॐ निशाचराय नमः।
१६२. ॐ प्रेतचारिणे नमः।
१६३. ॐ भूतचारिणे नमः।
१६४. ॐ महेश्वराय नमः।
१६५. ॐ बहुभूताय नमः।
१६६. ॐ बहुधराय नमः।
१६७. ॐ स्वर्भानवे नमः।
१६८. ॐ अमिताय नमः।
१६९. ॐ गतये नमः।
१७०. ॐ नृत्यप्रियाय नमः।
१७१. ॐ नित्यनर्ताय नमः।
१७२. ॐ नर्तकाय नमः।
१७३. ॐ सर्वलालसाय नमः।
१७४. ॐ घोराय नमः।
१७५. ॐ महातपसे नमः।
१७६. ॐ पाशाय नमः।
१७७. ॐ नित्याय नमः।
१७८. ॐ गिरिरुहाय नमः।
१७९. ॐ नभसे नमः।
१८०. ॐ सहस्रहस्ताय नमः।
१८१. ॐ विजयाय नमः।
१८२. ॐ व्यवसायाय नमः।
१८३. ॐ अतन्द्रिताय नमः।
१८४. ॐ अधर्षणाय नमः।
१८५. ॐ धर्षणात्मने नमः।
१८६. ॐ यज्ञघ्ने नमः।

१८७. ॐ कामनाशकाय नमः।
१८८. ॐ दक्षयागापहारिणे नमः।
१८९. ॐ सुसहाय नमः।
१९०. ॐ मध्यमाय नमः।
१९१. ॐ तेजोऽपहारिणे नमः।
१९२. ॐ बलघ्ने नमः।
१९३. ॐ मुदिताय नमः।
१९४. ॐ अर्थाय नमः।
१९५. ॐ अजिताय नमः।
१९६. ॐ अवराय नमः।
१९७. ॐ गम्भीरघोषाय नमः।
१९८. ॐ गम्भीराय नमः।
१९९. ॐ गम्भीरबलवाहनाय नमः।
२००. ॐ न्यग्रोधरूपाय नमः।
२०१. ॐ न्यग्रोधाय नमः।
२०२. ॐ वृक्षकर्णस्थितये नमः।
२०३. ॐ विभवे नमः।
२०४. ॐ सुतीक्ष्णदशनाय नमः।
२०५. ॐ महाकायाय नमः।
२०६. ॐ महाननाय नमः।
२०७. ॐ विष्वक्सेनाय नमः।
२०८. ॐ हरये नमः।
२०९. ॐ यज्ञाय नमः।
२१०. ॐ संयुगापीडवाहनाय नमः।
२११. ॐ तीक्ष्णतापाय नमः।
२१२. ॐ हर्यश्वाय नमः।
२१३. ॐ सहायाय नमः।
२१४. ॐ कर्मकालविदे नमः।
२१५. ॐ विष्णुप्रसादिताय नमः।
२१६. ॐ यज्ञाय नमः।
२१७. ॐ समुद्राय नमः।
२१८. ॐ वडवामुखाय नमः।
२१९. ॐ हुताशनसहायाय नमः।
२२०. ॐ प्रशान्तात्मने नमः।
२२१. ॐ हुताशनाय नमः।
२२२. ॐ उग्रतेजसे नमः।
२२३. ॐ महातेजसे नमः।
२२४. ॐ जन्याय नमः।
२२५. ॐ विजयकालविदे नमः।
२२६. ॐ ज्योतिषामयनाय नमः।
२२७. ॐ सिद्धये नमः।
२२८. ॐ सर्वविग्रहाय नमः।
२२९. ॐ शिखिने नमः।
२३०. ॐ मुण्डिने नमः।
२३१. ॐ जटिने नमः।
२३२. ॐ ज्वालिने नमः।
२३३. ॐ मूर्तिजाय नमः।
२३४. ॐ मूर्द्धगाय नमः।
२३५. ॐ बलिने नमः।
२३६. ॐ वेणविने नमः।
२३७. ॐ पणविने नमः।
२३८. ॐ तालिने नमः।
२३९. ॐ खलिने नमः।
२४०. ॐ कालकटंकटाय नमः।
२४१. ॐ नक्षत्रविग्रहमतये नमः।
२४२. ॐ गुणबुद्धये नमः।
२४३. ॐ लयाय नमः।
२४४. ॐ अगमाय नमः।
२४५. ॐ प्रजापतये नमः।
२४६. ॐ विश्वबाहवे नमः।
२४७. ॐ विभागाय नमः।
२४८. ॐ सर्वगाय नमः।

२४९. ॐ अमुखाय नमः।
२५०. ॐ विमोचनाय नमः।
२५१. ॐ सुसरणाय नमः।
२५२. ॐ हिरण्यकवचोद्भवाय नमः।
२५३. ॐ मेढ्रजाय नमः।
२५४. ॐ बलचारिणे नमः।
२५५. ॐ महीचारिणे नमः।
२५६. ॐ स्रुताय नमः।
२५७. ॐ सर्वतूर्यनिनादिने नमः।
२५८. ॐ सर्वातोद्यपरिग्रहाय नमः।
२५९. ॐ व्यालरूपाय नमः।
२६०. ॐ गुहावासिने नमः।
२६१. ॐ गुहाय नमः।
२६२. ॐ मालिने नमः।
२६३. ॐ तरङ्गविदे नमः।
२६४. ॐ त्रिदशाय नमः।
२६५. ॐ त्रिकालधृषे नमः।
२६६. ॐ कर्मसर्वबन्ध विमोचनाय नमः।
२६७. ॐ असुरेन्द्राणां बन्धनाय नमः।
२६८. ॐ युधि शत्रुविनाशनाय नमः।
२६९. ॐ सांख्यप्रसादाय नमः।
२७०. ॐ दुर्वाससे नमः।
२७१. ॐ सर्वसाधुनिषेविताय नमः।
२७२. ॐ प्रस्कन्दाय नमः।
२७३. ॐ विभागज्ञाय नमः।
२७४. ॐ अतुल्याय नमः।
२७५. ॐ यज्ञविभागविदे नमः।
२७६. ॐ सर्ववासाय नमः।
२७७. ॐ सर्वचारिणे नमः।
२७८. ॐ दुर्वाससे नमः।
२७९. ॐ वासवाय नमः।
२८०. ॐ अमराय नमः।
२८१. ॐ हैमाय नमः।
२८२. ॐ हेमकराय नमः।
२८३. ॐ अयज्ञाय नमः।
२८४. ॐ सर्वधारिणे नमः।
२८५. ॐ धरोत्तमाय नमः।
२८६. ॐ लोहिताक्षाय नमः।
२८७. ॐ महाक्षाय नमः।
२८८. ॐ विजयाक्षाय नमः।
२८९. ॐ विशारदाय नमः।
२९०. ॐ संग्रहाय नमः।
२९१. ॐ निग्रहाय नमः।
२९२. ॐ कर्त्रे नमः।
२९३. ॐ सर्पचीरनिवासनाय नमः।
२९४. ॐ मुख्याय नमः।
२९५. ॐ अमुख्याय नमः।
२९६. ॐ देहाय नमः।
२९७. ॐ काहलये नमः।
२९८. ॐ सर्वकामदाय नमः।
२९९. ॐ सर्वकालप्रसादाय नमः।
३००. ॐ सुबलाय नमः।
३०१. ॐ बलरूपधृषे नमः।
३०२. ॐ सर्वकामवराय नमः।
३०३. ॐ सर्वदाय नमः।
३०४. ॐ सर्वतोमुखाय नमः।
३०५. ॐ आकाशनिर्विरूपाय नमः।
३०६. ॐ निपातिने नमः।
३०७. ॐ अवशाय नमः।
३०८. ॐ खगाय नमः।
३०९. ॐ रौद्ररूपाय नमः।
३१०. ॐ अंशवे नमः।

३११. ॐ आदित्याय नमः।
३१२. ॐ बहुरश्मये नमः।
३१३. ॐ सुवर्चसिने नमः।
३१४. ॐ वसुवेगाय नमः।
३१५. ॐ महावेगाय नमः।
३१६. ॐ मनोवेगाय नमः।
३१७. ॐ निशाचराय नमः।
३१८. ॐ सर्ववासिने नमः।
३१९. ॐ श्रियावासिने नमः।
३२०. ॐ उपदेशकराय नमः।
३२१. ॐ अकराय नमः।
३२२. ॐ मुनये नमः।
३२३. ॐ आत्मनिरालोकाय नमः।
३२४. ॐ सम्भग्नाय नमः।
३२५. ॐ सहस्रदाय नमः।
३२६. ॐ पक्षिणे नमः।
३२७. ॐ पक्षरूपाय नमः।
३२८. ॐ अतिदीप्ताय नमः।
३२९. ॐ विशाम्पतये नमः।
३३०. ॐ उन्मादाय नमः।
३३१. ॐ मदनाय नमः।
३३२. ॐ कामाय नमः।
३३३. ॐ अश्वत्थाय नमः।
३३४. ॐ अर्थकराय नमः।
३३५. ॐ यशसे नमः।
३३६. ॐ वामदेवाय नमः।
३३७. ॐ वामाय नमः।
३३८. ॐ प्राचे नमः।
३३९. ॐ दक्षिणाय नमः।
३४०. ॐ वामनाय नमः।
३४१. ॐ सिद्धयोगिने नमः।
३४२. ॐ महर्षये नमः।
३४३. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
३४४. ॐ सिद्धसाधकाय नमः।
३४५. ॐ भिक्षवे नमः।
३४६. ॐ भिक्षुरूपाय नमः।
३४७. ॐ विपणाय नमः।
३४८. ॐ मृदवे नमः।
३४९. ॐ अव्ययाय नमः।
३५०. ॐ महासेनाय नमः।
३५१. ॐ विशाखाय नमः।
३५२. ॐ षष्टिभागाय नमः।
३५३. ॐ गवाम्पतये नमः।
३५४. ॐ वज्रहस्ताय नमः।
३५५. ॐ विष्कम्भिने नमः।
३५६. ॐ चमूस्तम्भनाय नमः।
३५७. ॐ वृत्तावृत्तकराय नमः।
३५८. ॐ तालाय नमः।
३५९. ॐ मधवे नमः।
३६०. ॐ मधुकलोचनाय नमः।
३६१. ॐ वाचस्पत्याय नमः।
३६२. ॐ वाजसनाय नमः।
३६३. ॐ नित्यमाश्रमपूजिताय नमः।
३६४. ॐ ब्रह्मचारिणे नमः।
३६५. ॐ लोकचारिणे नमः।
३६६. ॐ सर्वचारिणे नमः।
३६७. ॐ विचारविदे नमः।
३६८. ॐ ईशानाय नमः।
३६९. ॐ ईश्वराय नमः।
३७०. ॐ कालाय नमः।
३७१. ॐ निशाचारिणे नमः।
३७२. ॐ पिनाकवते नमः।

३७३. ॐ निमित्तस्थाय नमः।
३७४. ॐ निमित्ताय नमः।
३७५. ॐ नन्दये नमः।
३७६. ॐ नन्दिकराय नमः।
३७७. ॐ हरये नमः।
३७८. ॐ नन्दीश्वराय नमः।
३७९. ॐ नन्दिने नमः।
३८०. ॐ नन्दनाय नमः।
३८१. ॐ नन्दिवर्धनाय नमः।
३८२. ॐ भगहारिणे नमः।
३८३. ॐ निहन्त्रे नमः।
३८४. ॐ कालाय नमः।
३८५. ॐ ब्रह्मणे नमः।
३८६. ॐ पितामहाय नमः।
३८७. ॐ चतुर्मुखाय नमः।
३८८. ॐ महालिङ्गाय नमः।
३८९. ॐ चारुलिङ्गाय नमः।
३९०. ॐ लिङ्गाध्यक्षाय नमः।
३९१. ॐ सुराध्यक्षाय नमः।
३९२. ॐ योगाध्यक्षाय नमः।
३९३. ॐ युगावहाय नमः।
३९४. ॐ बीजाध्यक्षाय नमः।
३९५. ॐ बीजकर्त्रे नमः।
३९६. ॐ अध्यात्मानुगताय नमः।
३९७. ॐ बलाय नमः।
३९८. ॐ इतिहासाय नमः।
३९९. ॐ सकल्पाय नमः।
४००. ॐ गौतमाय नमः।
४०१. ॐ निशाकराय नमः।
४०२. ॐ दम्भाय नमः।
४०३. ॐ अदम्भाय नमः।
४०४. ॐ वैदम्भाय नमः।
४०५. ॐ वश्याय नमः।
४०६. ॐ वशकराय नमः।
४०७. ॐ कलये नमः।
४०८. ॐ लोककर्त्रे नमः।
४०९. ॐ पशुपतये नमः।
४१०. ॐ महाकर्त्रे नमः।
४११. ॐ अनौषधाय नमः।
४१२. ॐ अक्षराय नमः।
४१३. ॐ परमाय ब्रह्मणे नमः।
४१४. ॐ बलवते नमः।
४१५. ॐ शक्राय नमः।
४१६. ॐ नीतये नमः।
४१७. ॐ अनीतये नमः।
४१८. ॐ शुद्धात्मने नमः।
४१९. ॐ शुद्धाय नमः।
४२०. ॐ मान्याय नमः।
४२१. ॐ गतागताय नमः।
४२२. ॐ बहुप्रसादाय नमः।
४२३. ॐ सुस्वप्नाय नमः।
४२४. ॐ दर्पणाय नमः।
४२५. ॐ अमित्रजिते नमः।
४२६. ॐ वेदकाराय नमः।
४२७. ॐ मन्त्रकाराय नमः।
४२८. ॐ विदुषे नमः।
४२९. ॐ समरमर्दनाय नमः।
४३०. ॐ महामेघनिवासिने नमः।
४३१. ॐ महाघोराय नमः।
४३२. ॐ वशिने नमः।
४३३. ॐ कराय नमः।
४३४. ॐ अग्निज्वालाय नमः।

४३५. ॐ महाज्वालाय नमः।
४३६. ॐ अतिधूम्राय नमः।
४३७. ॐ हुताय नमः।
४३८. ॐ हविषे नमः।
४३९. ॐ वृषणाय नमः।
४४०. ॐ शङ्कराय नमः।
४४१. ॐ नित्यं वर्चस्विने नमः।
४४२. ॐ धूमकेतनाय नमः।
४४३. ॐ नीलाय नमः।
४४४. ॐ अङ्गलुब्धाय नमः।
४४५. ॐ शोभनाय नमः।
४४६. ॐ निरवग्रहाय नमः।
४४७. ॐ स्वस्तिदाय नमः।
४४८. ॐ स्वस्तिभावनाय नमः।
४४९. ॐ भागिने नमः।
४५०. ॐ भागकराय नमः।
४५१. ॐ लघवे नमः।
४५२. ॐ उत्सङ्गाय नमः।
४५३. ॐ महाङ्गाय नमः।
४५४. ॐ महागर्भपरायणाय नमः।
४५५. ॐ कृष्णवर्णाय नमः।
४५६. ॐ सुवर्णाय नमः।
४५७. ॐ सर्वदेहिनामिन्द्रियाय नमः।
४५८. ॐ महापादाय नमः।
४५९. ॐ महाहस्ताय नमः।
४६०. ॐ महाकायाय नमः।
४६१. ॐ महायशसे नमः।
४६२. ॐ महामूर्ध्ने नमः।
४६३. ॐ महामात्राय नमः।
४६४. ॐ महानेत्राय नमः।
४६५. ॐ निशालयाय नमः।
४६६. ॐ महान्तकाय नमः।
४६७. ॐ महाकर्ण्णाय नमः।
४६८. ॐ महोष्ठाय नमः।
४६९. ॐ महाहनवे नमः।
४७०. ॐ महानासाय नमः।
४७१. ॐ महाकम्बवे नमः।
४७२. ॐ महाग्रीवाय नमः।
४७३. ॐ श्मशानभाजे नमः।
४७४. ॐ महावक्षसे नमः।
४७५. ॐ महोरस्काय नमः।
४७६. ॐ अन्तरात्मने नमः।
४७७. ॐ मृगालयाय नमः।
४७८. ॐ लम्बनाय नमः।
४७९. ॐ लम्बितोष्ठाय नमः।
४८०. ॐ महामायाय नमः।
४८१. ॐ पयोनिधये नमः।
४८२. ॐ महादन्ताय नमः।
४८३. ॐ महादंष्ट्राय नमः।
४८४. ॐ महाजिह्वाय नमः।
४८५. ॐ महामुखाय नमः।
४८६. ॐ महानखाय नमः।
४८७. ॐ महारोम्णे नमः।
४८८. ॐ महाकोशाय नमः।
४८९. ॐ महाजटाय नमः।
४९०. ॐ प्रसन्नाय नमः।
४९१. ॐ प्रसादाय नमः।
४९२. ॐ प्रत्ययाय नमः।
४९३. ॐ गिरिसाधनाय नमः।
४९४. ॐ स्नेहनाय नमः।
४९५. ॐ अस्नेहनाय नमः।
४९६. ॐ अजिताय नमः।

४९७. ॐ महामुनये नमः।
४९८. ॐ वृक्षाकराय नमः।
४९९. ॐ वृक्षकेतवे नमः।
५००. ॐ अनलाय नमः।
५०१. ॐ वायुवाहनाय नमः।
५०२. ॐ गण्डलिने नमः।
५०३. ॐ मेरुधाम्ने नमः।
५०४. ॐ देवाधिपतये नमः।
५०५. ॐ अथर्वशीर्षाय नमः।
५०६. ॐ सामास्याय नमः।
५०७. ॐ ऋक्सहस्रमितेक्षणाय नमः।
५०८. ॐ यजुःपादभुजाय नमः।
५०९. ॐ गुह्याय नमः।
५१०. ॐ प्रकाशाय नमः।
५११. ॐ जङ्घमाय नमः।
५१२. ॐ अमोघार्थाय नमः।
५१३. ॐ प्रसादाय नमः।
५१४. ॐ अभिगम्याय नमः।
५१५. ॐ सुदर्शनाय नमः।
५१६. ॐ उपकाराय नमः।
५१७. ॐ प्रियाय नमः।
५१८. ॐ सर्वस्मै नमः।
५१९. ॐ कनकाय नमः।
५२०. ॐ काञ्चनच्छवये नमः।
५२१. ॐ नाभये नमः।
५२२. ॐ नन्दिकराय नमः।
५२३. ॐ भावाय नमः।
५२४. ॐ पुष्करस्थपतये नमः।
५२५. ॐ स्थिराय नमः।
५२६. ॐ द्वादशाय नमः।
५२७. ॐ त्रासनाय नमः।
५२८. ॐ आद्याय नमः।
५२९. ॐ यज्ञाय नमः।
५३०. ॐ यज्ञसमाहिताय नमः।
५३१. ॐ नक्ताय नमः।
५३२. ॐ कलये नमः।
५३३. ॐ कालाय नमः।
५३४. ॐ मकराय नमः।
५३५. ॐ कालपूजिताय नमः।
५३६. ॐ सगणाय नमः।
५३७. ॐ गणकाराय नमः।
५३८. ॐ भूतवाहनसारथये नमः।
५३९. ॐ भस्मशयाय नमः।
५४०. ॐ भस्मगोप्त्रे नमः।
५४१. ॐ भस्मभूताय नमः।
५४२. ॐ तरवे नमः।
५४३. ॐ गणाय नमः।
५४४. ॐ लोकपालाय नमः।
५४५. ॐ अलोकाय नमः।
५४६. ॐ महात्मने नमः।
५४७. ॐ सर्वपूजिताय नमः।
५४८. ॐ शुक्लाय नमः।
५४९. ॐ त्रिशुक्लाय नमः।
५५०. ॐ सम्पन्नाय नमः।
५५१. ॐ शुचये नमः।
५५२. ॐ भूतनिषेविताय नमः।
५५३. ॐ आश्रमस्थाय नमः।
५५४. ॐ क्रियावस्थाय नमः।
५५५. ॐ विश्वकर्ममतये नमः।
५५६. ॐ वराय नमः।
५५७. ॐ विशालशाखाय नमः।
५५८. ॐ ताम्रोष्ठाय नमः।

५५९. ॐ अम्बुजालाय नमः।
५६०. ॐ सुनिश्चलाय नमः।
५६१. ॐ कपिलाय नमः।
५६२. ॐ कपिशाय नमः।
५६३. ॐ शुक्लाय नमः।
५६४. ॐ आयुषे नमः।
५६५. ॐ परस्मै नमः।
५६६. ॐ अपरस्मै नमः।
५६७. ॐ गन्धर्वाय नमः।
५६८. ॐ अदितये नमः।
५६९. ॐ तार्क्ष्याय नमः।
५७०. ॐ सुविज्ञेयाय नमः।
५७१. ॐ सुशारदाय नमः।
५७२. ॐ परश्वधायुधाय नमः।
५७३. ॐ देवाय नमः।
५७४. ॐ अनुकारिणे नमः।
५७५. ॐ सुबान्धवाय नमः।
५७६. ॐ तुम्बवीणाय नमः।
५७७. ॐ महाक्रोधाय नमः।
५७८. ॐ ऊर्ध्वरेतसे नमः।
५७९. ॐ जलेशयाय नमः।
५८०. ॐ उग्राय नमः।
५८१. ॐ वंशकराय नमः।
५८२. ॐ वंशाय नमः।
५८३. ॐ वंशनादाय नमः।
५८४. ॐ अनिन्दिताय नमः।
५८५. ॐ सर्वाङ्गरूपाय नमः।
५८६. ॐ मायाविने नमः।
५८७. ॐ सुहृदे नमः।
५८८. ॐ अनिलाय नमः।
५८९. ॐ अनलाय नमः।
५९०. ॐ बन्धनाय नमः।
५९१. ॐ बन्धकर्त्रे नमः।
५९२. ॐ सुबन्धनविमोचनाय नमः।
५९३. ॐ सयज्ञारये नमः।
५९४. ॐ सकामारये नमः।
५९५. ॐ महादंष्ट्राय नमः।
५९६. ॐ महायुधाय नमः।
५९७. ॐ बहुधानिन्दिताय नमः।
५९८. ॐ शर्वाय नमः।
५९९. ॐ शङ्कराय नमः।
६००. ॐ शङ्कराय नमः।
६०१. ॐ अधनाय नमः।
६०२. ॐ अमरेशाय नमः।
६०३. ॐ महादेवाय नमः।
६०४. ॐ विश्वदेवाय नमः।
६०५. ॐ सुरारिघ्ने नमः।
६०६. ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः।
६०७. ॐ अनिलाभाय नमः।
६०८. ॐ चेकितानाय नमः।
६०९. ॐ हविषे नमः।
६१०. ॐ अजैकपदे नमः।
६११. ॐ कापालिने नमः।
६१२. ॐ त्रिशङ्कवे नमः।
६१३. ॐ अजिताय नमः।
६१४. ॐ शिवाय नमः।
६१५. ॐ धन्वन्तरये नमः।
६१६. ॐ धूमकेतवे नमः।
६१७. ॐ स्कन्दाय नमः।
६१८. ॐ वैश्रवणाय नमः।
६१९. ॐ धात्रे नमः।
६२०. ॐ शक्राय नमः।

६२१. ॐ विष्णवे नमः।
६२२. ॐ मित्राय नमः।
६२३. ॐ त्वष्ट्रे नमः।
६२४. ॐ ध्रुवाय नमः।
६२५. ॐ धराय नमः।
६२६. ॐ प्रभावाय नमः।
६२७. ॐ सर्वगाय वायवे नमः।
६२८. ॐ अर्यम्णे नमः।
६२९. ॐ सवित्रे नमः।
६३०. ॐ रवये नमः।
६३१. ॐ उषङ्गवे नमः।
६३२. ॐ विधात्रे नमः।
६३३. ॐ मान्धात्रे नमः।
६३४. ॐ भूतभावनाय नमः।
६३५. ॐ विभवे नमः।
६३६. ॐ वर्णविभाविने नमः।
६३७. ॐ सर्वकामगुणावहायनमः।
६३८. ॐ पद्मनाभाय नमः।
६३९. ॐ महागर्भाय नमः।
६४०. ॐ चन्द्रवक्त्राय नमः।
६४१. ॐ अनिलाय नमः।
६४२. ॐ अनलाय नमः।
६४३. ॐ बलवते नमः।
६४४. ॐउपशान्ताय नमः।
६४५. ॐपुराणाय नमः।
६४६. ॐपुण्यचञ्चुरिणे नमः।
६४७. ॐकुरुकर्त्रे नमः।
६४८. ॐकुरुवासिने नमः।
६४९. ॐ कुरुभूताय नमः।
६५०. ॐ गुणौषधाय नमः।
६५१. ॐ सर्वाशयाय नमः।
६५२. ॐ दर्भचारिणे नमः।
६५३. ॐ सर्वेषां प्राणिनां पतये नमः।
६५४. ॐ देवदेवाय नमः।
६५५. ॐ सुखासक्ताय नमः।
६५६. ॐ सते नमः।
६५७. ॐ असते नमः।
६५८. ॐ सर्वरत्नविदे नमः।
६५९. ॐ कैलाशगिरिवासिने नमः।
६६०. ॐ हिमवद्गिरिसंश्रयाय नमः।
६६१. ॐ कूलहारिणे नमः।
६६२. ॐ कूलकर्त्रे नमः।
६६३. ॐ बहुविद्याय नमः।
६६४. ॐ बहुप्रदाय नमः।
६६५. ॐ वणिजाय नमः।
६६६. ॐ वर्धकिने नमः।
६६७. ॐ वृक्षाय नमः।
६६८. ॐ बकुलाय नमः।
६६९. ॐ चन्दनाय नमः।
६७०. ॐ छदाय नमः।
६७१. ॐ सारग्रीवाय नमः।
६७२. ॐ महाजत्रवे नमः।
६७३. ॐ अलोलाय नमः।
६७४. ॐ महौषधाय नमः।
६७५. ॐ सिद्धार्थ कारिणे नमः।
६७६. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
६७७. ॐ छन्दोव्याकरणोत्तराय नमः।
६७८. ॐ सिंहनादाय नमः।
६७९. ॐ सिंहदंष्ट्राय नमः।
६८०. ॐ सिंहगाय नमः।
६८१. ॐ सिंहवाहनाय नमः।
६८२. ॐ प्रभावात्मने नमः।

६८३. ॐ जगत्कालस्थालाय नमः।
६८४. ॐ लोकहिताय नमः।
६८५. ॐ तरवे नमः।
६८६. ॐ सारङ्गाय नमः।
६८७. ॐ नवचक्राङ्गाय नमः।
६८८. ॐ केतुमालिने नमः।
६८९. ॐ सभावनाय नमः।
६९०. ॐ भूतालयाय नमः।
६९१. ॐ भूतपतये नमः।
६९२. ॐ अहोरात्राय नमः।
६९३. ॐ अनिन्दिताय नमः।
६९४. ॐ सर्वभूतानां वाहित्रे नमः।
६९५. ॐ सर्वभूतानांनिलयाय नमः।
६९६. ॐ विभवे नमः।
६९७. ॐ भवाय नमः।
६९८. ॐ अमोघाय नमः।
६९९. ॐ संयताय नमः।
७००. ॐ अश्वाय नमः।
७०१. ॐ भोजनाय नमः।
७०२. ॐ प्राणधारणाय नमः।
७०३. ॐ धृतिमते नमः।
७०४. ॐ मतिमते नमः।
७०५. ॐ दक्षाय नमः।
७०६. ॐ सत्कृताय नमः।
७०७. ॐ युगाधिपाय नमः।
७०८. ॐ गोपालये नमः।
७०९. ॐ गोपतये नमः।
७१०. ॐ ग्रामाय नमः।
७११. ॐ गोचर्मवसनाय नमः।
७१२. ॐ हरये नमः।
७१३. ॐ हिरण्यबाहवे नमः।
७१४. ॐ प्रवेशिनां गुहापालाय नमः।
७१५. ॐ प्रकृष्टारये नमः।
७१६. ॐ महाहर्षाय नमः।
७१७. ॐ जितकामाय नमः।
७१८. ॐ जितेन्द्रियाय नमः।
७१९. ॐ गान्धाराय नमः।
७२०. ॐ सुवासाय नमः।
७२१. ॐ तपःसक्ताय नमः।
७२२. ॐ रतये नमः।
७२३. ॐ नराय नमः।
७२४. ॐ महागीताय नमः।
७२५. ॐ महानृत्याय नमः।
७२६. ॐ अप्सरोगणसेविताय नमः।
७२७. ॐ महाकेतवे नमः।
७२८. ॐ महाधातवे नमः।
७२९. ॐ नैकसानुचराय नमः।
७३०. ॐ चलाय नमः।
७३१. ॐ आवेदनीयाय नमः।
७३२. ॐ आदेशाय नमः।
७३३. ॐ सर्वगन्धसुखावहाय नमः।
७३४. ॐ तोरणाय नमः।
७३५. ॐ तारणाय नमः।
७३६. ॐ वाताय नमः।
७३७. ॐ परिध्यै नमः।
७३८. ॐ पतिखेचराय नमः।
७३९. ॐ संयोगवर्धनाय नमः।
७४०. ॐ वृद्धाय नमः।
७४१. ॐ अतिवृद्धाय नमः।
७४२. ॐ गुणाधिकाय नमः।
७४३. ॐ नित्यायआत्मसहायाय नमः।
७४४. ॐ देवासुरपतये नमः।

७४५. ॐ पत्ये नमः।
७४६. ॐ युक्ताय नमः।
७४७. ॐ युक्तबाहवे नमः।
७४८. ॐ देवायदिविसुपर्वणाय नमः।
७४९. ॐ आषाढाय नमः।
७५०. ॐ सुषाढाय नमः।
७५१. ॐ ध्रुवाय नमः।
७५२. ॐ हरिणाय नमः।
७५३. ॐ हराय नमः।
७५४. ॐ आवर्तमानेभ्योवपुषे नमः।
७५५. ॐ वसुश्रेष्ठाय नमः।
७५६. ॐ महापथाय नमः।
७५७. ॐ विमर्शाय शिरोहारिणे नमः।
७५८. ॐ सर्वलक्षणलक्षिताय नमः।
७५९. ॐ अक्षायरथयोगिने नमः।
७६०. ॐ सर्वयोगिने नमः।
७६१. ॐ महाबलाय नमः।
७६२. ॐ समाम्नायाय नमः।
७६३. ॐ असमाम्नायाय नमः।
७६४. ॐ तीर्थदेवाय नमः।
७६५. ॐ महारथाय नमः।
७६६. ॐ निर्जीवाय नमः।
७६७. ॐ जीवनाय नमः।
७६८. ॐ मन्त्राय नमः।
७६९. ॐ शुभाक्षाय नमः।
७७०. ॐ बहुकर्कशाय नमः।
७७१. ॐ रत्नप्रभूताय नमः।
७७२. ॐ रत्नाङ्गाय नमः।
७७३. ॐ महार्णवनिपानविदे नमः।
७७४. ॐ मूलाय नमः।
७७५. ॐ विशालाय नमः।
७७६. ॐ अमृताय नमः।
७७७. ॐ व्यक्ताव्यक्ताय नमः।
७७८. ॐ तपोनिधये नमः।
७७९. ॐ आरोहणाय नमः।
७८०. ॐ अधिरोहाय नमः।
७८१. ॐ शीलधारिणे नमः।
७८२. ॐ महायशसे नमः।
७८३. ॐ सेनाकल्पाय नमः।
७८४. ॐ महाकल्पाय नमः।
७८५. ॐ योगाय नमः।
७८६. ॐ युगकराय नमः।
७८७. ॐ हरये नमः।
७८८. ॐ युगरूपाय नमः।
७८९. ॐ महारूपाय नमः।
७९०. ॐ महानागहनाय नमः।
७९१. ॐ अवधाय नमः।
७९२. ॐ न्यायनिर्वपणाय नमः।
७९३. ॐ पादाय नमः।
७९४. ॐ पण्डिताय नमः।
७९५. ॐ अचलोपमाय नमः।
७९६. ॐ बहुमालाय नमः।
७९७. ॐ महामालाय नमः।
७९८. ॐ शशिने हरसुलोचनाय नमः।
७९९. ॐ विस्तारायलवणायकूपायनमः।
८००. ॐ त्रियुगाय नमः।
८०१. ॐ सफलोदयाय नमः।
८०२. ॐ त्रिलोचनाय नमः।
८०३. ॐ विषण्णाङ्गाय नमः।
८०४. ॐ मणिविद्धाय नमः।
८०५. ॐ जटाधराय नमः।
८०६. ॐ विन्दवे नमः।

८०७. ॐ विसर्गाय नमः।
८०८. ॐ सुमुखाय नमः।
८०९. ॐ शराय नमः।
८१०. ॐ सर्वायुधाय नमः।
८११. ॐ सहाय नमः।
८१२. ॐ निवेदनाय नमः।
८१३. ॐ सुखाजाताय नमः।
८१४. ॐ सुगन्धाराय नमः।
८१५. ॐ महाधनुषे नमः।
८१६. ॐ भगवते गन्धपालिने नमः।
८१७. ॐ सर्वकर्मणामुत्थानायनमः।
८१८. ॐ मन्थानायबहुलायवायवेनमः।
८१९. ॐ सकलाय नमः।
८२०. ॐ सर्वलोचनाय नमः।
८२१. ॐ तलस्तालाय नमः।
८२२. ॐ करस्थालिने नमः।
८२३. ॐ ऊर्ध्वसंहननाय नमः।
८२४. ॐ महते नमः।
८२५. ॐ छत्राय नमः।
८२६. ॐ सुच्छत्राय नमः।
८२७. ॐ विख्यातलोकाय नमः।
८२८. ॐ सर्वाश्रयाय क्रमाय नमः।
८२९. ॐ मुण्डाय नमः।
८३०. ॐ विरूपाय नमः।
८३१. ॐ विकृताय नमः।
८३२. ॐ दण्डिने नमः।
८३३. ॐ कुण्डिने नमः।
८३४. ॐ विकुर्वणाय नमः।
८३५. ॐ हर्यक्षाय नमः।
८३६. ॐ ककुभाय नमः।
८३७. ॐ वज्रिणे नमः।
८३८. ॐ शतजिह्वाय नमः।
८३९. ॐ सहस्रपादेसहस्रमूर्ध्नेनमः।
८४०. ॐ देवेन्द्राय नमः।
८४१. ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
८४२. ॐ गुरवे नमः।
८४३. ॐ सहस्रबाहवे नमः।
८४४. ॐ सर्वाङ्गाय नमः।
८४५. ॐ शरण्याय नमः।
८४६. ॐ सर्वलोककृते नमः।
८४७. ॐ पवित्राय नमः।
८४८. ॐ त्रिककुन्मन्त्राय नमः।
८४९. ॐ कनिष्ठाय नमः।
८५०. ॐ कृष्णपिङ्गलाय नमः।
८५१. ॐ ब्रह्मदण्डविनिर्मात्रेनमः।
८५२. ॐ शतघ्नीपाशशक्तिमतेनमः।
८५३. ॐ पद्मगर्भाय नमः।
८५४. ॐ महागर्भाय नमः।
८५५. ॐ ब्रह्मगर्भाय नमः।
८५६. ॐ जलोद्भवाय नमः।
८५७. ॐ गभस्तये नमः।
८५८. ॐ ब्रह्मकृते नमः।
८५९. ॐ ब्रह्मिणे नमः।
८६०. ॐ ब्रह्मविदे नमः।
८६१. ॐ ब्राह्मणाय नमः।
८६२. ॐ गतये नमः।
८६३. ॐ अनन्तरूपाय नमः।
८६४. ॐ नैकात्मने नमः।
८६५. ॐ स्वयंभुवायतिग्मतेजसे नमः।
८६६. ॐ ऊर्ध्वगात्मने नमः।
८६७. ॐ पशुपतये नमः।
८६८. ॐ वातरंहसे नमः।

८६९. ॐ मनोजवाय नमः।
८७०. ॐ चन्दनिने नमः।
८७१. ॐ पद्मनालाग्राय नमः।
८७२. ॐ सुरभ्युत्तरणाय नमः।
८७३. ॐ नराय नमः।
८७४. ॐ कर्णिकामहास्रग्विणे नमः।
८७५. ॐ नीलमौलये नमः।
८७६. ॐ पिनाकधृते नमः।
८७७. ॐ उमापतये नमः।
८७८. ॐ उमाकान्ताय नमः।
८७९. ॐ जाह्नवीधृते नमः।
८८०. ॐ उमाधवाय नमः।
८८१. ॐ वरायवराहाय नमः।
८८२. ॐ वरदाय नमः।
८८३. ॐ वरेण्याय नमः।
८८४. ॐ सुमहास्वनाय नमः।
८८५. ॐ महाप्रसादाय नमः।
८८६. ॐ दमनाय नमः।
८८७. ॐ शत्रुघ्ने नमः।
८८८. ॐ श्वेतपिङ्गलाय नमः।
८८९. ॐ पीतात्मने नमः।
८९०. ॐ परमात्मने नमः।
८९१. ॐ प्रयतात्मने नमः।
८९२. ॐ प्रधानधृते नमः।
८९३. ॐ सर्वपार्श्वमुखाय नमः।
८९४. ॐ त्र्यक्षाय नमः।
८९५. ॐ धर्मसाधारणाय वराय नमः।
८९६. ॐ चराचरात्मने नमः।
८९७. ॐ सूक्ष्मात्मने नमः।
८९८. ॐ अमृताय गोवृषेश्वराय नमः।
८९९. ॐ साध्यर्षये नमः।
९००. ॐ आदित्याय वसवे नमः।
९०१. ॐ विवश्वतेसवितामृताय नमः।
९०२. ॐ व्यासाय नमः।
९०३. ॐ सुसंक्षेपायविस्तरायसर्गाय नमः।
९०४. ॐ पर्ययाय नराय नमः।
९०५. ॐ ऋतवे नमः।
९०६. ॐ संवत्सराय नमः।
९०७. ॐ मासाय नमः।
९०८. ॐ पक्षाय नमः।
९०९. ॐ संख्यासमापनाय नमः।
९१०. ॐ कलाभ्यो नमः।
९११. ॐ काष्ठाभ्यो नमः।
९१२. ॐ लवेभ्यो नमः।
९१३. ॐ मात्राभ्यो नमः।
९१४. ॐ मुहूर्ताहःक्षपाभ्यो नमः।
९१५. ॐ क्षणेभ्यो नमः।
९१६. ॐ विश्वक्षेत्राय नमः।
९१७. ॐ प्रजाबीजाय नमः।
९१८. ॐ लिङ्गाय नमः।
९१९. ॐ आद्याय निर्गमाय नमः।
९२०. ॐ सते नमः।
९२१. ॐ असते नमः।
९२२. ॐ व्यक्ताय नमः।
९२३. ॐ अव्यक्ताय नमः।
९२४. ॐ पित्रे नमः।
९२५. ॐ मात्रे नमः।
९२६. ॐ पितामहाय नमः।
९२७. ॐ स्वर्गद्वाराय नमः।
९२८. ॐ प्रजाद्वाराय नमः।
९२९. ॐ मोक्षद्वाराय नमः।
९३०. ॐ त्रिविष्टपाय नमः।

९३१. ॐ निर्वाणाय नमः।
९३२. ॐ ह्लादनाय नमः।
९३३. ॐ ब्रह्मलोकाय नमः।
९३४. ॐ परस्यैगतये नमः।
९३५. ॐ देवासुरविनिर्मात्रे नमः।
९३६. ॐ देवासुरपरायणाय नमः।
९३७. ॐ देवासुरगुरवे नमः।
९३८. ॐ देवाय नमः।
९३९. ॐ देवासुरनमस्कृताय नमः।
९४०. ॐ देवासुरमहामात्राय नमः।
९४१. ॐ देवासुरगणाश्रयाय नमः।
९४२. ॐ देवासुरगणाध्यक्षाय नमः।
९४३. ॐ देवासुरगणाग्रण्ये नमः।
९४४. ॐ देवातिदेवाय नमः।
९४५. ॐ देवर्षये नमः।
९४६. ॐ देवासुरवरप्रदाय नमः।
९४७. ॐ देवासुरेश्वराय नमः।
९४८. ॐ विश्वस्मै नमः।
९४९. ॐ देवासुरमहेश्वराय नमः।
९५०. ॐ सर्वदेवमयाय नमः।
९५१. ॐ अचिन्त्याय नमः।
९५२. ॐ देवतात्मने नमः।
९५३. ॐ आत्मसम्भवाय नमः।
९५४. ॐ उद्भिदे नमः।
९५५. ॐ त्रिविक्रमाय नमः।
९५६. ॐ वैद्याय नमः।
९५७. ॐ विरजसे नमः।
९५८. ॐ नीरजसे नमः।
९५९. ॐ अमराय नमः।
९६०. ॐ ईड्याय नमः।
९६१. ॐ हस्तीश्वराय नमः।
९६२. ॐ व्याघ्राय नमः।
९६३. ॐ देवसिंहाय नमः।
९६४. ॐ नरर्षभाय नमः।
९६५. ॐ विबुधाय नमः।
९६६. ॐ अग्रवराय नमः।
९६७. ॐ सूक्ष्माय नमः।
९६८. ॐ सर्वदेवाय नमः।
९६९. ॐ तपोमयाय नमः।
९७०. ॐ सुयुक्ताय नमः।
९७१. ॐ शोभनाय नमः।
९७२. ॐ वज्रिणे नमः।
९७३. ॐ प्रासानांप्रभवाय नमः।
९७४. ॐ अव्ययाय नमः।
९७५. ॐ गुहाय नमः।
९७६. ॐ कान्ताय नमः।
९७७. ॐ निजाय सर्गाय नमः।
९७८. ॐ पवित्राय नमः।
९७९. ॐ सर्वपावनाय नमः।
९८०. ॐ शृङ्गिणे नमः।
९८१. ॐ शृङ्गप्रियाय नमः।
९८२. ॐ बभ्रवे नमः।
९८३. ॐ राजराजाय नमः।
९८४. ॐ निरामयाय नमः।
९८५. ॐ अभिरामाय नमः।
९८६. ॐ सुरगणाय नमः।
९८७. ॐ विरामाय नमः।
९८८. ॐ सर्वसाधनाय नमः।
९८९. ॐ ललाटाक्षाय नमः।
९९०. ॐ विश्वदेवाय नमः।
९९१. ॐ हरिणाय नमः।
९९२. ॐ ब्रह्मवर्चसे नमः।

९९३. ॐ स्थावराणां पतये नमः।
९९४. ॐ नियमेन्द्रियवर्धनाय नमः।
९९५. ॐ सिद्धार्थाय नमः।
९९६. ॐ सिद्धभूतार्थाय नमः।
९९७. ॐ अचिन्त्याय नमः।
९९८. ॐ सत्यव्रताय नमः।
९९९. ॐ शुचये नमः।
१०००. ॐ व्रताधिपाय नमः।
१००१. ॐ परस्मै नमः।
१००२. ॐ ब्रह्मणे नमः।
१००३. ॐ भक्तानां परमायै गतये नमः।
१००४. ॐ विमुक्ताय नमः।
१००५. ॐ मुक्ततेजसे नमः।
१००६. ॐ श्रीमते नमः।
१००७. ॐ श्रीवर्धनाय नमः।
१००८. ॐ जगते नमः।

समर्पणम्:-अनेन कृतेन श्रीशिवसहस्रार्चनेन कर्मणा साङ्गता सिद्धचर्थं तत् सम्पूर्ण फल प्राप्त्यर्थं ॐभूर्भुवः स्वः श्रीभगवते साम्बसदाशिवाय नमः प्रीयेताम् न मम।।

✡✡✡

शिवस्तोत्रम्

विल्वाष्टोत्तरशतनाम स्तोत्रम्

ॐत्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम्।
त्रिजन्मपाप सङ्हारं एक बिल्वं शिवार्पणम्।।१।।
त्रिशाखैर्बिल्व पत्रैश्च अछिद्रैः कोमलैः शुभैः।
तवपूजां करिष्यामि एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२।।
सर्व त्रैलोक्य कर्ता च सर्वत्रैलोक्य पावनम्।
सर्व त्रैलोक्य हर्तार एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३।।
नागाधिराजवलयं नागहारेणभूषितम्।
नागकुण्डल संयुक्तं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४।।
अक्षमालाधरं रुद्रं पार्वती प्रियवल्लभम्।
चन्द्रशेखरमीशानं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५।।
त्रिलोचनं दशभुजं दुर्गा देहार्ध धारणम्।
विभूत्यव्यर्चितं देवं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६।।
त्रिशूलधारिणं देवं नागाभरणसुन्दरम्।
चन्द्रशेखर मीशानं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७।।

गङ्गाधराम्बिकानाथं फणिकुण्डलमण्डितम्।
कालकालं गिरीशं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८।।
शुद्धस्फटिक संकाशं शितिकण्ठं कृपानिधिम्।
सर्श्वेश्वरं सदाशान्तं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९।।
सच्चिदानन्दरूपञ्च परानन्दमयं शिवम्।
वागीश्वरं चिदाकाशं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०।।
शिपिविष्टं सहस्राक्षं दुन्दुभ्यां च निशांगिणम्।
हिरण्यबाहुसेनान्य एकबिल्वं शिवार्पणम्।।११।।
अरुणंवामनं तारां वास्तव्यं चैव वास्तवम्।
ज्येष्ठंकनिष्ठं वैशान्तं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१२।।
हरिकेशं स नन्दीशं उच्चैत्घोषं सनातनम्।
अघोर रूपकं कुम्भं एक बिल्वं शिवार्पणम्।।१३।।
पूर्वजावर्ज्य याम्यं च सूक्ष्मातस्कर नायकम्।
नीलकण्ठंजगन्यञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१४।।
सुराश्रयं विषहरं वर्मिणीं च वरूथिनीम्।
महासेनं महावीरं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१५।।
कुमारं कुशलं कुप्यं वदानाम्यञ्चमहारथम्।
तवर्यातौऽर्यदेवञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१६।।
दशकरणंललाटाक्षं पञ्चक्त्रं सदाशिवम्।
अशेषपापसङ्हारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१७।।
नीलकण्ठं जगद्वन्द्यं दीननाथं महेश्वरम्।
महापापहरं शम्भो एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१८।।
चूडामणिकृतं विद्युं वलयीकृत वाशुकीम्।
कैलाश निलयं भीमं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१९।।
कर्पूरकुन्दधवलं नरकारणवतारकम्।
करुणामृतसिन्धुञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२०।।
महादेवमहात्मानं भुजङ्गाधिप कङ्कणम्।
महापापहरं देवं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२१।।
भूतेशं खण्डपरशुं वामदेवं पिनाकिनम्।
वामेशक्तिधरं श्रेष्ठं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२२।।
कालेक्षणं विरूपाक्षं श्रीकण्ठं भक्तवत्सलम्।
नीललोहितखट्वाङ्गं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२३।।

कैलाशवासिनं भीमं कठोरं त्रिपुरान्तकम्।
वृषाङ्कं वृषभारूढं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२४।।
सामप्रियं सर्वमयं भस्मोद्धूलित विग्रहः।
मृत्युञ्जयं लोकनाथं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२५।।
दारिद्रच्च दुःखहरणं रविचन्द्र विलेक्षणम्।
मृगपाणिर्चन्द्रमौलिः एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२६।।
सर्वलोकभयाकारं सर्वलोकैक साक्षिणम्।
निर्मलं निर्गुणाकारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२७।।
सर्वतत्त्वान्तकं शम्भुं सर्वतत्त्व विदूरकम्।
सर्व तत्त्वस्वरूपञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२८।।
सर्वलोकगुरुस्थानं सर्वलोकवरप्रदम्।
सर्वलोकैक वर्तञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।२९।।
मन्मथोद्धरणं चैवं भवभर्ग परात्मकम्।
कमलाप्रियपूज्यञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३०।।
तेजोमयं महाभीमं उमेशं भस्मलेपनम्।
भवरोग विनाशञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३१।।
स्वर्गापवर्ग फलदं रघुनाथवरप्रदम्।
नागराजसुताकान्त एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३२।।
मञ्जीरपादयुगलं शुभलक्षण लक्षितम्।
फणिराजविराजञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३३।।
निरामयं निराधारं निःसर्गःनिस्प्रपञ्चकम्।
तेजोरूपं महानाथं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३४।।
सर्वलोकैक पितरं सर्वलोकैक मातरम्।
सर्वलोकैक नाथं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३५।।
चित्राम्भरं निराभाषं वृषभेश्वरवाहनम्।
नीलग्रीवं चतुर्वक्त्रं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३६।।
रत्नकञ्चुक रत्नेशं रत्नकुण्डल मण्डितम्।
नवरत्न किरीटं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३७।।
दिव्यरत्नाङ्गुली करणं कण्ठाभरण भूषितम्।
नानारत्नं मणिमयं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३८।।
रत्नाङ्गुलीयविलशत् करशाखानखप्रभम्।
भक्तमानस गेहेन एकबिल्वं शिवार्पणम्।।३९।।

वामाङ्गभाग विलसत् अम्बिका च विलक्षणः।
पुण्ड्रीकाक्ष निकाङ्चं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४०।।
सम्पूर्णकामदं सौख्यं भक्तेष्ट फलकारणम्।
सौभाग्यदं हितकरं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४१।।
नानाशास्त्रगुणोपेतं शुभमङ्गलविग्रहम्।
विद्याविभेदरहितं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४२।।
अप्रमेय गुणाधारं वेदकद्रूप विग्रहम्।
वर्माऽधर्म प्रवृत्यं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४३।।
गौरीविलाशसदनं जीवजीवपितामहम्।
कल्पान्तभैरवं शुभ्रं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४४।।
सुखदं सुखनाथञ्च दुःखदं दुःखनाशनम्।
दुःखावतार भद्रञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४५।।
सुखरूपं रूपनाशनं सर्व धर्मफलप्रदम्।
अतीन्द्रियं महामाय एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४६।।
सर्वपक्षी मृगाकारं सर्वपक्षीमृगाधिपम्।
सर्वपक्षीमृगाधारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४७।।
जीवाध्यक्षं जीववन्द्यं जीवजीवनरक्षकम्।
जीवकृत जीवहरणं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४८।।
विश्वात्मानां विश्ववन्द्यं वज्रात्मनां वज्रहस्तकम्।
वज्रेशं वज्रभूशं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।४९।।
गणाधिपं गणाध्यक्षं प्रलयानल नाशकम्।
जितेन्द्रियं वीरभद्र एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५०।।
त्र्यम्बकं च महादेवं अरिषड्वर्ग नाशकम्।
दिगम्बरं सोमनाथं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५१।।
कुन्देन्दु धवलं शम्भुं भगनेत्र विद्विज्वलम्।
कालाग्नि रुद्रं सर्वज्ञ एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५२।।
कम्बुग्रीवं कम्बुकटं धैर्यदं धैर्यवर्धकम्।
शार्दूलचर्म वसनं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५३।।
जगत्पीतं च हेतुञ्च जगत्प्रलय कारणम्।
पूर्णानन्दस्वरूपञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५४।।
स्वर्गेशं महातेजं पुण्यश्रवणकीर्तनम्।
ब्रह्माण्डनायकं तार एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५५।।

मन्दारमालानिलयं मन्दारकुसुमप्रियम्।
वृन्दारकप्रियतरं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५६।।
महेन्द्रियं महाबाहुं विश्वासं परिपूरकम्।
सुलभासुलभं लभ्यं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५७।।
बीजाधारं बीजरूपं निर्बीजं बीजवृद्धिदम्।
परेशं बीज नाशञ्च एक बिल्वं शिवार्पणम्।।५८।।
युगाकारं युगाधीशं युगक्रुद्धयुगनाशनम्।
परेशं बीज नाशञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।५९।।
दुर्जिटिं पिङ्गलजटं जटामण्डलमण्डितम्।
कर्पूरगौरं गौरीशं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६०।।
सुरावासं जनावासं योगीशं योगि पुङ्गवम्।
योगिनं योगिनां सिंहं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६१।।
उत्तमानोत्तमं तत्त्वं अन्धकासुरसूदनम्।
भक्तकल्पद्रुवंस्थोम एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६२।।
विचित्रमस्यावसनं दिव्यचन्दनचर्चितम्।
विष्णुब्रह्मादिवन्द्यञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६३।।
कुमारं पितरं देव शीतचन्द्र कलानिधिम्।
ब्रह्मशत्रु जगन्मित्रं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६४।।
लाभन्य नधुराकारं करुणारस सागरम्।
भोरमध्ये शहस्रार्चि एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६५।।
जटाधारं पावकाक्षं रुक्षेशं भूमिनायकम्।
कामदंस वदागम्य एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६६।।
शिवं शान्तं उमानाथं महाध्यान परायणम्।।
ज्ञानप्रदं कृत्तिवासं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६७।।
वासुक्य रगहरं च लोकानुग्रहकारणम्।
ज्ञानप्रदं कृत्तिवासं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६८।।
सशाङ्क धारिणीं भर्गं सर्वलोकैक शङ्करम्।
शुद्धं च शास्वतं नित्यं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।६९।।
शरणागतदीनार्त परित्राणपरायणम्।
गम्भीरं च वषट्कारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७०।।
भोक्तारं भोजनं भोज्यं जेतारं जीत मानसम्।
करुणं कारणं जिष्णुं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७१।।

क्षेत्रज्ञं क्षेत्रपालं च परार्थैक प्रयोजनम्।
व्योमकेशं भीमदेवं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७२।।
भवग्नं तरुणोपेतं योदिष्टं यमनाशनम्।
हिरण्यगर्भं हेमाङ्गं एकविल्वं शिवार्पणम्।।७३।।
दक्षं चामुण्ड जनकं मोक्षदं मोक्षनाशनम्।
हिरण्यदं हेमरूपं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७४।।
महास्मशान निलयं प्रचण्डस्फटिकप्रभम्।
वेदाश्चवेदरूपं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७५।।
स्थिरंधर्ममुमानाथं ब्रह्मण्यं चायश्रं विभु।
जगन्निवासं प्रथमं एक बिल्वं शिवार्पणम्।।७६।।
रुद्राक्षमालाभरणं रुद्राक्ष प्रियवत्सलम्।
रुद्राक्षभक्त संस्तोम एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७७।।
फणेन्द्रविलशद् कण्ठं भुजङ्गभरणप्रियम्।
दक्षाद्धर विनाशं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७८।।
नागेन्द्र विलसत्कर्ण महेन्द्रवलयाव्रतम्।
मुनिवन्द्यं मुनिश्रेष्ठ एकबिल्वं शिवार्पणम्।।७९।।
मृगेन्द्रचर्म वसनं मुनीनामेकजीवनम्।
सर्वदेवाधि पूज्यञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८०।।
निधिनेशं धनाधीशमपमृत्यु विनाशनम्।
लिङ्गमूर्तिं च लिङ्गात्मं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८१।।
भक्तकल्याणदं व्यस्तं वेदवेदान्त संस्तुतम्।
कल्पवृत्तकल्पनासञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८२।।
घोरपातक दावाग्निं जन्मकर्म विवर्जितम्।
कपालमालाभरणं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८३।।
मातङ्गचर्म वसनं विरट्टुरि विदारकम्।
विष्णुक्रान्तमनन्तं च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८४।।
यज्ञकर्म फलाध्यक्षं यज्ञविघ्न विनाशनम्।
यज्ञेशं यज्ञभोक्तारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८५।।

कालाधीशं त्रिकालज्ञं दुष्ट निग्रह कारकम्।
योगि मानस पूज्यञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८६।।
महोन्नत महाकायं महोदर महाभुजम्।
महावक्त्रं महावृद्धं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८७।।
सुनेत्रं सुललाटं च सर्व भीमपराक्रमम्।
महेश्वरं जीवतर एक बिल्वं शिवार्पणम्।।८८।।
समस्त जगदाधारां समस्तगुण सागरम्।
सत्यं सत्यगुणोपेतं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।८९।।
माघकृष्णचतुर्दश्यां पूजार्थञ्च जगद्गुरोः।
दुर्लभं सर्वदेवानां एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९०।।
तत्राऽपिदुर्लभं मन्ये नभोमासेन्दु वासरे।
प्रदोषकाले पूजाञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९१।।
शालिग्रामेषु विप्राणां तडाकसतकूपयोः।
कोटिकन्यामहादानं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९२।।
दर्शनं बिल्व वृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोरपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९३।।
तुलसी बिल्व निर्गुण्डि जम्बीरामलकं तथा।
अघोरपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९४।।
अखण्डं बिल्व पत्रस्य पूजयेत्नन्दिकेश्वरम्।
मुच्यतेसर्वपापेभ्यः एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९५।।
सालङ्कृत सताव्रत्ता कन्याकोटि सहस्रकम्।
साम्राज्य पृथ्विनाथञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९६।।
दसकोटितरङ्गानं अश्वमेधसहस्रकम्।
सवत्सधेनु कोटीनां एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९७।।
चतुर्वेद सहस्राणि भारतादि पुराणकम्।
साम्राज्यपृथ्विनाथञ्च एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९८।।
सर्वरत्नमयं मेरुं काञ्चनं दिव्यचन्दनम्।
तुलाभारं शतावर्तं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।९९।।
अष्टोत्तरशतं विल्वं योर्चये लिङ्गमस्तके।
अथोर्वक्तं वदेद्यस्तु एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१००।।

काशीक्षेत्र निवासञ्च कालभैरव दर्शनम्।
अघोरपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०१।।
अष्टोत्तरशतश्लोकैः स्तोत्राद्यैः पूजयेद्यतः।
त्रिसन्ध्यंमोक्षमाप्नोति एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०२।।
दन्तिकोटिसहस्राणि भूहिरण्यसहस्रकम्।
सर्वंकृतमयं पुण्यं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०३।।
पुत्रपौत्रादिकं भोगं भुक्त्वा चाऽत्रय धनेऽपितम्।
अन्त्येन शिवसायुज्य एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०४।।
विप्रकोटिसहस्राणां वित्तदानञ्चयत्फलम्।
तत्फलं प्राप्नुयात्सत्य एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०५।।
तन्नामकीर्तनं तद्वद तव पादाम्बुयः पिवेत्।
जीवमुक्तो भवेन्नित्यं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०६।।
अनेकदानफलदं अनन्तं सक्रतार्थितम्।
तीर्थयात्राखिलंपुण्यं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०७।।
त्वं मान्पालय सर्वत्र पदध्यान कृतं तव।
भवनं शाङ्करं नित्यं एकबिल्वं शिवार्पणम्।।१०८।।
एककाले पठेन्नित्यं सर्वशत्रुनिवारणम्।
द्विकाले च पठेन्नित्यं सर्वपापनिवारणम्।।१०९।।
त्रिकाले च पठेन्नित्यं मनोवाञ्छाफलप्रदम्।
अचिरात्कार्यसिद्धिं च लभतेनाऽत्र संशयः।।११०।।
एककालंद्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः।
लक्ष्मी प्राप्ति शिवावासः शिवेन सह मोदते।।१११।।
कोटिजन्मकृतं पापं अर्चनेन विनश्यति।
सप्तजन्मकृतं पापं श्रवणेन विनश्यति।।११२।।
जन्मान्तरकृतं पापं पठनेन विनश्यति।
जन्मान्तरकृतं पापं दर्शनेन विनश्यति।।११३।।
दिवारात्रिकृतं पापं पठनेन विनश्यति।
क्षणे क्षणे कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।।११४।।
पुस्तकं धारयेद्देहि आरोग्य भयनाशनम्।।११५।।

।। इति शिवाष्टोत्तरबिल्वस्तोत्रम् सम्पूर्णम्।।

शिवमानसपूजनम्

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं
नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदाङ्कितं चन्दनम् ।
जाती चम्पक बिल्वपत्र रचितं पुष्पं च धूपं तथा
दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम् ।।१।।
सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं
भक्ष्यं पञ्चविधं पयो दधियुतं रम्भाफलं पानकम् ।
शाकानामयुतं जलं रुचिकरं कर्पूर खण्डोज्ज्वलं
ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु ।।२।।
छत्रं चामर योर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं
वीणाभेरिमृदङ्गकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा ।
साष्टाङ्गं प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया
सङ्कल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो ।।३।।
आत्मात्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं
पूजा ते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधिस्थितिः ।
सञ्चारः पदयोः प्रदक्षिणविधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो
यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भोतवाराधनम् ।।४।।
करचरण-कृतं वा क्कायजं कर्मजं वा
श्रवण नयनजं वा मानसं वापराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शम्भो।।५।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचिता श्रीशिवमानसपूजा सम्पूर्णा ।।

मृतसञ्जीवनकवचम्

एवमाराध्य गौरीशं देवं मृत्युञ्जयेश्वरम् ।
मृतसञ्जीवनं नाम कवचं प्रजपेत्सदा ।।१।।
सारात् सारतरं पुण्यं गुह्याद् गुह्यतरं शुभम् ।
महादेवस्य कवचं मृतसञ्जीवनाभिधम् ।।२।।
समाहितमना भूत्वा शृणुष्व कवचं शुभम् ।
श्रुत्वैतद् दिव्य कवचं रहस्यं कुरु सर्वदा ।।३।।

जराभयकरो यज्वा सर्वदेवनिषेवितः ।
मृत्युञ्जयो महादेवः प्राच्यां मां पातु सर्वदा ।।४।।
दधानः शक्तिमभयां त्रिमुखः षड्भुजः प्रभुः ।
सदाशिवोऽग्निरूपी मां आग्नेय्यां पातु सर्वदा ।।५।।
अष्टादशभुजोपेतो दण्डाभयकरो विभुः ।
यमरूपी महादेवो दक्षिणस्यां सदावतु ।।६।।
खड्गाभयकरो धीरो रक्षोगण निषेवितः ।
रक्षोरूपी महेशो मां नैऋत्यां सर्वदाऽवतु ।।७।।
पाशाभयभुजः सर्व रत्नाकर निषेवितः ।
वरुणात्मा महादेवः पश्चिमे मां सदाऽवतु ।।८।।
गदाभयकरः प्राणनायकः सर्वदागतिः ।
वायव्यां मारुतात्मा मां शङ्करः पातु सर्वदा ।।९।।
शङ्खाभयकरस्थो मां नायकः परमेश्वरः ।
सर्वात्मान्तरदिग्भागे पातु मां शङ्करः प्रभुः।।१०।।
शूलाभयकरः सर्वविद्यानामधिनायकः।
ईशानात्मा तथैशान्यां पातु मां परमेश्वरः।।११।।
ऊर्ध्वभागे ब्रह्मरूपी विश्वात्माऽधः सदाऽवतु।
शिरो मे शङ्करः पातु ललाटं चन्द्रशेखरः।।१२।।
भ्रूमध्यं सर्वलोकेशः त्रिनेत्रोऽवतु लोचने ।
भ्रूयुग्मं गिरिशः पातु कर्णौ पातु महेश्वरः ।।१३।।
नासिकां मे महादेव ओष्ठौ पातु वृषध्वजः ।
जिह्वां मे दक्षिणामूर्तिः दन्तान्मे गिरिशोऽवतु।।१४।।
मृत्युञ्जयो मुखं पातु कण्ठं मे नागभूषणः ।
पिनाकी मत्करौ पातु त्रिशूली हृदयं मम ।।१५।।
पञ्चवक्त्रः स्तनौ पातु उदरं जगदीश्वरः ।
नाभिं पातु विरूपाक्षः पार्श्वे मे पार्वती पतिः।।१६।।
कटिद्वयं गिरीशो मे पृष्ठं मे प्रमथाधिपः ।
गुह्यं महेश्वरः पातु ममोरू पातु भैरवः ।।१७।।
जानुनी मे जगद्धर्ता जङ्घे मे जगदम्बिका ।
पादौ मे सततं पातु लोकवन्द्यः सदाशिवः ।।१८।।

गिरीशः पातु मे भार्यां भवः पातु सुतान् मम ।
मृत्युञ्जयो ममायुष्यं चित्तं मे गणनायकः ।।१९।।
सर्वाङ्गं मे सदा पातु कालकालः सदाशिवः ।
एतत्ते कवचं पुण्यं देवतानां च दुर्लभम् ।।२०।।
मृतसञ्जीवनं नाम्ना महादेवेन कीर्तितम् ।
सहस्रावर्तनं चास्य पुरश्चरणमीरितम् ।।२१।।
यः पठेच्छ्रणुयान्नित्यं श्रावयेत् सुसमाहितः।
सोऽकालमृत्युं निर्जित्य सदायुष्यं समश्नुते ।।२२।।
हस्तेन वा यदा स्पृष्ट्वा मृतं सञ्जीवयत्यसौ ।
आधयो व्याधयस्तस्य न भवन्ति कदाचन ।।२३।।
कालमृत्युमपि प्राप्तमसौ जयति सर्वदा ।
अणिमादिगुणैश्वर्यं लभते मानवोत्तमः ।।२४।।
युद्धारम्भे पठित्वेदं अष्टाविंशतिवारकम् ।
युद्धमध्ये स्थितः शत्रुः सद्यः सर्वैर्न दृश्यते ।।२५।।
न ब्रह्मादीनि चास्त्राणि क्षयं कुर्वन्ति तस्य वै ।
विजयं लभते देवयुद्धमध्येऽपि सर्वदा ।।२६।।
प्रातरुत्थाय सततं यः पठेत् कवचं शुभम् ।
अक्षय्यं लभते सौख्यं इह लोके परत्र च ।।२७।।
सर्वव्याधिविनिर्मुक्तः सर्वरोगविवर्जितः ।
अजरामरणो भूत्वा सदा षोडशवार्षिकः ।।२८।।
विचरत्यखिलाँल्लोकान् प्राप्य भोगांश्च दुर्लभान्।
तस्मादिदं महागोप्यं कवचं समुदाहृतम् ।।
मृतसञ्जीवनं नाम्ना दैवतैरपि दुर्लभम् ।।२९।।

।। इति मृतसञ्जीवनकवचं सम्पूर्णम् ।।

द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम्

सौराष्ट्रदेशे विशदेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकला वतंसम्।
भक्तिप्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये ।।१।।
श्रीशैलशृङ्गे विबुधातिसङ्गे तुलाद्रितुङ्गेऽपि मुदावसन्तम् ।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसार समुद्रसेतुम् ।।२।।
अवन्तिकायां विहितावतारं मुक्तिप्रदानाय च सज्जनानाम् ।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्दे महाकालमहासुरेशम् ।।३।।
कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय ।
सदैवमान्धातृपुरे वसन्तमोङ्कारमीशं शिवमेकमीडे ।।४।।
पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसन्तं गिरिजासमेतम् ।
सुरासुराराधितपादपद्मं श्रीवैद्यनाथं तमहं नमामि ।।५।।
याम्ये सदङ्गे नगरेतिरम्ये विभूषिताङ्गं विविधैश्चभोगैः ।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्रीनागनाथं शरणं प्रपद्ये ।।६।।
महाद्रि पार्श्वे च तटे रमन्तं सम्पूज्यमानं सततं मुनीन्द्रैः ।
सुरासुरैर्यक्षमहोरगाद्यैः केदारमीशं शिवमेकमीडे ।।७।।
सह्याद्रिशीर्षे विमले वसन्तं गोदावरीतीरपवित्रदेशे ।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे ।।८।।
सुताम्रपर्णीजलराशियोगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः ।
श्रीरामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि ।।९।।
यं डाकिनीशाकिनिकासमाजे निषेव्यमाणं पिशिताशनैश्च।
सदैव भीमादिपदप्रसिद्धं तं शङ्करं भक्तहितं नमामि ।।१०।।
सानन्दमानन्दवने वसन्तमानन्दकन्दं हतपापवृन्दम् ।
वाराणसीनाथमनाथनाथं श्रीविश्वनाथं शरणं प्रपद्ये ।।११।।
इलापुरे रम्यविशालकेऽस्मिन् समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम् ।
वन्दे महोदारतरस्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये ।।१२।।
ज्योतिर्मयद्वादशलिङ्गकानां शिवात्मनां प्रोक्तमिदं क्रमेण ।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भवेच्च॥१३॥

।। इति श्रीद्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीशिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्माङ्गरागाय महेश्वराय ।
नित्यायशुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।।१।।
मन्दाकिनी सलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।
मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय।।२।।
शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द सूर्याय दक्षाध्वर नाशकाय।
श्रीनीलकण्ठायवृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।।३।।
वशिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्य मुनीन्द्रदेवार्चित शेखराय।
चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय ।।४।।
यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय।।५।।
पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।६।।

।। इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

शिवषडक्षर-स्तोत्रम्

ॐकारं विन्दुसंयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐ-काराय नमो नमः ।।१।।
नमन्ति ऋषयो देवा नमन्त्यप्सरसां गणाः ।
नरा नमन्ति देवेशं न-काराय नमो नमः।।२।।
महादेवं महात्मानं महाध्यान परायणम् ।
महापापहरं देवं म-काराय नमो नमः।।३।।
शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रहकारकम् ।
शिवमेकपदं नित्यं शि-काराय नमो नमः।।४।।
वाहनं वृषभो यस्य वासुकिः कण्ठभूषणम् ।
वामेशक्तिधरं देवं वा-काराय नमो नमः।।५।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरुः सर्वदेवानां य-काराय नमो नमः।।६।।
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिवसन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।७।।

।। इति श्रीरुद्रयामले उमामहेश्वरसंवादे शिवषडक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीरुद्राष्टकम्

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपम् ।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं चिदाकाशमाकाशवाशं भजेऽहम्।।१।।
निराकारमोङ्कारमूलं तुरीयं गिराग्यानगोतीतमीशं गिरीशम् ।
करालं महाकाल कालं कृपालं गुणागार संसारपारं नतोऽहम्।।२।।
तुषाराद्रि सङ्काश गौरं गम्भीरं मनोभूत कोटिप्रभा श्रीशरीरम् ।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारुगङ्गा लसद्भाल बालेन्दु कण्ठेभुजङ्गा।।३।।
चलत्कुण्डलं भ्रू-सुनेत्रं विशालं प्रसन्नाननं नीलकण्ठं दयालम् ।
मृगाधीश चर्माम्बरं मुण्डमालं प्रियंशङ्करं सर्वनाथं भजामि।।४।।
प्रचण्डं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं अखण्डं अजं भानु कोटिप्रकाशम् ।
त्रयः शूल निर्मूलनं शूलपाणिं भजेऽहं भवानी पतिं भावगम्यम्।।५।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी।
चिदानन्द सन्दोह मोहापहारी प्रसीद-प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।६।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं भजन्तीह लोके परे वा नराणाम् ।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासम्।।७।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां नतोऽहं सदा सर्वदा शम्भु तुभ्यम् ।
जराजन्म दुःखौघ तातप्यमानं प्रभो पाहि आपन्नमामीश शम्भो।।८।।
रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये ।
ये पठन्तिनरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।।९।।

।। इति श्रीगोस्वामितुलसीदासकृतं श्रीरुद्राष्टकं सम्पूर्णम् ।।

श्रीविश्वनाथाष्टकम्

गङ्गातरङ्ग रमणीय जटाकलापं गौरीनिरन्तर विभूषित वामभागम्।
नारायणप्रियमनङ्ग मदापहारं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम्।।१।।
वाचामगोचरमनेकगुण स्वरूपं वागीश-विष्णु-सुर-सेवित-पादपीठम्।
वामेन विग्रहवरेण कलत्रवन्तं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥२॥
भूताधिपं भुजगभूषणभूषिताङ्गं व्याघ्राजिनाम्बरधरं जटिलं त्रिनेत्रम् ।
पाशाङ्कुशाभय वरप्रद शूलपाणिं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥३॥
शीतांशुशोभित किरीट विराजमानं भालेक्षणानल विशोषित पञ्चबाणम्।
नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम्।।४।।

पञ्चाननं दुरितमत्त मतङ्गजानां नागान्तकं दनुजपुङ्गवपन्नगानाम् ।
दावानलं मरणशोक जराटवीनां वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥५॥
तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीयं आनन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम् ।
नागात्मकंसकलनिष्कलमात्मरूपं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥६॥
रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागं वैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम् ।
माधुर्यधैर्य सुभगं गरलाभिरामं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥७॥
आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां पापेरतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ।
आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं वाराणसी पुरपतिं भज विश्वनाथम् ॥८॥
वाराणसीपुरपतेःस्तवनं शिवस्य व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः ।
विद्यां श्रियंविपुल सौख्यमनन्त कीर्तिं सम्प्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम् ॥९॥

विश्वनाथाष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।१०।।

।। इति श्रीमहर्षिवेदव्यासप्रणीतं श्रीविश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम् ।।

लिङ्गाष्टकम्

ब्रह्ममुरारि सुरार्चित लिङ्गं निर्मल भासित शोभित लिङ्गम् ।
जन्मज दुःख विनाशकलिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।१।।
देवमुनि प्रवरार्चित लिङ्गं कामदहं करुणाकर लिङ्गम् ।
रावणदर्प विनाशन लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।२।।
सर्व सुगन्धि सुलेपित लिङ्गं बुद्धि विवर्द्धन कारण लिङ्गम् ।
सिद्धसुरासुर वन्दित लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।३।।
कनक महामणि भूषित लिङ्गं फणिपति वेष्टित शोभित लिङ्गम् ।
दक्ष सुयज्ञ विनाशन लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।४।।
कुङ्कुम चन्दन लेपित लिङ्गं पङ्कजहार सुशोभित लिङ्गम्।
सञ्चित पाप विनाशन लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।५।।
देवगणार्चित सेवित लिङ्गं भावैर्भक्तिभिरेव च लिङ्गम्।
दिनकर कोटि प्रभाकर लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।६।।
अष्टदलोपरि वेष्टित लिङ्गं सर्व समुद्भव कारण लिङ्गम्।
अष्टदरिद्र विनाशित लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।७।।

सुर गुरु सुरवर पूजित लिङ्गं सुर वनपुष्प सदार्चित लिङ्गम्।
परात्परं परमात्मक लिङ्गं तत्प्रणमामि सदाशिवलिङ्गम्।।८।।

लिङ्गाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिव सन्निधौ ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते ।।९।।

।। इति लिङ्गाष्टकं सम्पूर्णम् ।।

शिवमहिम्नःस्तोत्रम्

महिम्नः पारन्ते परम विदुषो यद्यसदृशी
स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमति परिणामावधिगृणन्
ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।।१।।
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो-
रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्यविषयः
पदे त्ववाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।।२।।
मधुस्फीता वाचः परममृतं निर्मितवतः
तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम् ।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः
पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।।३।।
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदय रक्षाप्रलयकृत्
त्रयी वस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद रमणीयामरमणीं
विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।।४।।
किमीहः किंकायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं
किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च ।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्य नवसरदुः स्थो हतधियः
कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।।५।।
अजन्मानो लोकाः किमवयववन्तोऽपि जगतां
अधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति ।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कःपरिकरो
यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे ।।६।।

त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति
प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च ।
रुचीनां वैचित्र्यादृजु कुटिलनाना पथजुषां
नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।।७।।
महोक्षः खट्वाङ्गं परशुरजिनं भस्म फणिनः
कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम् ।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां
न हि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति ।।८।।
ध्रुवं कश्चित् सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं
परो ध्रौव्याध्रौव्ये जगति गदति व्यस्त विषये ।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव
स्तुवञ्जिह्रेमित्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता ।।९।।
तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः
परिच्छेत्तुं याता वनलमनल स्कन्ध वपुषः ।
ततो भक्तिश्रद्धा भरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत्
स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।।१०।।
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं
दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान् ।
शिरः पद्मश्रेणीरचितचरणाम्भोरुहबलेः
स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्।।११।।
अमुष्य त्वत्सेवा समधिगतसारं भुजवनं
बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयतः ।
अलभ्या पातालेऽप्यल सचलिताङ्गुष्ठ शिरसि
प्रतिष्ठा त्वय्यासीद्ध्रुवमुपचितो मुह्यति खलः।।१२।।
यदृद्धिं सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सतीं-
अधश्चक्रे बाणः परिजनविधेयत्रिभुवनः ।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोः
न कस्याप्युन्नत्यैभवति शिरसस्त्वय्यवनतिः।।१३।।
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकितदेवासुरकृपा-
विधेयस्यासीद्यस्त्रिनयनविषं संहृतवतः ।
स कल्माषः कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो
विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभङ्गव्यसनिनः।।१४।।

असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे
निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखाः ।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत्
स्मरः स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्यः परिभवः।।१५।।
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं
पदं विष्णोर्भ्राम्यद्भुज परिघरुग्णग्रहगणम् ।
मुहुर्द्यौर्दौःस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा
जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।।१६।।
वियद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्गमरुचिः
प्रवाहो वारां यः पृषतलघुदृष्टः शिरसि ते ।
जगद् द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमि
त्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपुः ।।१७।।
रथः क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो
रथाङ्गे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणिः शर इति ।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिः
विधेयैः क्रीडन्त्यो न खलु परतन्त्राः प्रभुधियः।।१८।।
हरिस्ते साहस्रं कमल बलिमाधाय पदयोः
यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेकः परिणतिमसौ चक्रवपुषा
त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम् ।।१९।।
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्त्वमसि फलयोगे क्रतुमतां
क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते ।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं
श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा दृढपरिकरः कर्मसु जनः।।२०।।
क्रियादक्षो दक्षः क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतां
ऋषीणामार्त्विज्यं शरणद सदस्याः सुरगणाः ।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्तः क्रतुफलविधानव्यसनिनो
ध्रुवं कर्तुः श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखाः।।२१।।
प्रजानाथं नाथ प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं
गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा ।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं
त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभसः ।।२२।।

स्वलावण्याशं साधृतधनुषमह्नाय तृणवत्
पुरः प्लुष्टं दृष्ट्वा पुरमथन पुष्पायुधमपि ।
यदिस्त्रैणं देवी यमनिरत देहार्धघटना-
दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतयः।।२३।।
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर पिशाचाः सहचराः
चिताभस्मालेपः स्रगपि नृकरोटी परिकरः ।
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं
तथापि स्मर्तृणां वरद परमं मङ्गलमसि ।।२४।।
मनः प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुतः
प्रहृष्यद्रोमाणः प्रमद सलिलोत्सङ्गित दृशः ।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्यामृतमये
दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत् किलभवान्।।२५।।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहः
त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च ।
परिच्छिन्ना मेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं
न विद्मस्तत्तत्त्वं वयमिह तु यत्त्वं न भवसि।।२६।।
त्रयीं तिस्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरा-
नकाराद्यैर्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति ।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभिः
समस्तं व्यस्तं त्वं शरणद गृणात्योमिति पदम्।।२७।।
भवः शर्वो रुद्रः पशुपतिरथोग्रः सहमहां-
स्तथा भीमेशानाविति यदभिधानाष्टकमिदम् ।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि
प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहितनमस्योऽस्मि भवते।।२८।।
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो
नमः क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नमः ।
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो
नमः सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नमः।।२९।।
बहुलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नमः
प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नमः ।
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नमः
प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नमः।।३०।।

कृशपरिणति चेतः क्लेशवश्यं क्व चेदं
क्व च तव गुणसीमोल्लङ्घिनी शश्वदृद्धिः ।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद्
वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम् ।।३१।।
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे
सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी ।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति ।।३२।।
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेः
ग्रथितगुणमहिम्नो निर्गुणस्येश्वरस्य ।
सकलगणवरिष्ठः पुष्पदन्ताभिधानो
रुचिरमलघुवृत्तैः स्तोत्रमेतच्चकार ।।३३।।
अह-रह-रनवद्यं धूर्जटेः स्तोत्रमेतत्
पठति परमभक्त्या शुद्धचित्तः पुमान् यः ।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र
प्रचुरतर-धनायुः पुत्रवान् कीर्तिमांश्च।।३४।।
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा स्तुतिः ।
अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरोः परम् ।।३५।।
दीक्षादानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः ।
महिम्नःस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्।।३६।।
कुसुम-दशननामा सर्वगन्धर्वराजः
शिशु-शशिधर-मौलेर्देव-देवस्य दासः ।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात्
स्तवनमिद-मकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः ।।३७।।
सुरवर-मुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं
पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः
स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम् ।।३८।।
आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यं गन्धर्वभाषितम् ।
अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वर वर्णनम् ।।३९।।
इत्येषा वाङ्मयी पूजा श्रीमच्छङ्कर पादयोः ।
अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां मे सदाशिवः ।।४०।।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर ।
यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः ।।४१।।
एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः ।
सर्वपाप विनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते ।।४२।।

श्रीपुष्पदन्त-मुखपङ्कज-निर्गतेन स्तोत्रेण किल्बिष-हरेण हर-प्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः॥४३॥

।। इति श्रीशिवमहिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

शिवताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवी-गलज्जल-प्रवाहपावितस्थले
गलेवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्गतुङ्गमालिकाम् ।
डमड्-डमड्-डमड्-डमन्निनादवड्डमर्वयं
चकारचण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम् ।।१।।
जटाकटाहसम्भ्रमभ्रमन्निलिम्प निर्झरी-
विलोलवी-चिवल्लरी-विराजमान-मूर्द्धनि।
धगद्-धगद्-धगज्ज्वलल्ललाट-पट्टपावके
किशोरचन्द्रशेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम् ।।२।।
धराधरेन्द्र-नन्दिनीविलास-बन्धुबन्धुर-
स्फुरद्दिगन्त-सन्तति-प्रमोदमान-मानसे ।
कृपाकटाक्ष-धोरणीनिरुद्ध-दुर्धरापदि
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ।।३।।
जटाभुजङ्ग-पिङ्गलस्फुरत्फणा-मणिप्रभा-
कदम्ब-कुंकुमद्रव-प्रलिप्त-दिग्वधूमुखे ।
मदान्धसिन्धु-रस्फुरत्त्व-गुत्तरीयमेदुरे
मनोविनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ।।४।।
सहस्रलोचन-प्रभृत्य-शेषलेखशेखर-
प्रसूनधूलि-धोरणीविधूस-राङ्घ्रिपीठभूः ।
भुजङ्गराज-मालया-निबद्धजाट-जूटकः
श्रियै चिरायजायतां चकोरबन्धुशेखरः ।।५।।
ललाटचत्वर-ज्वलद्धनञ्जय-स्फुलिङ्गभा-
निपीतपञ्चसायकं नमन्निलिम्प-नायकम् ।

सुधामयूख-लेखया विराजमानशेखरं
महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तुनः।।६।।
करालभाल-पट्टिकाधगद्-धगद्-धगज्ज्वलद्
धनञ्जया-हुतीकृत-प्रचण्ड-पञ्चसायके ।
धराधरेन्द्र-नन्दिनी-कुचाग्र-चित्रपत्रक-
प्रकल्पनैक-शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम ।।७।।
नवीनमेघमण्डलीनिरुद्धदुर्धरस्फुरत्
कुहू-निशीथिनी-तमः प्रबन्ध-बद्धकन्धरः ।
निलिम्प-निर्झरीधर-स्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः
कलानिधानबन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ।।८।।
प्रफुल्ल-नीलपङ्कज-प्रपञ्चकालिमप्रभा-
वलम्बि-कण्ठकन्दली-रुचिप्रबद्ध-कन्धरम् ।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्ध-कच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।।९।।
अखर्व-सर्वमङ्गला-कला-कदम्बमञ्जरी-
रसप्रवाह-माधुरी-विजृम्भणा-मधुव्रतम् ।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्ध-कान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।।१०।।
ज्यत्व-दभ्र-विभ्र-मभ्र-मद्भुजङ्ग-मश्वस-
द्विनिर्गमत्-क्रमस्फुरत्-करालभाल-हव्यवाट् ।
धिमिद्-धिमिद्-धिमिद्-ध्वनन्-मृदङ्ग-तुङ्गमङ्गल-
ध्वनिक्रम-प्रवर्तित-प्रचण्ड-ताण्डवः शिवः।।११।।
दृषद्वि-चित्रतल्पयो-र्भुजङ्ग-मौक्ति-कस्रजोः
गरिष्ठ-रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्ष-पक्षयोः ।
तृणारविन्द-चक्षुषोः प्रजामही-महेन्द्रयोः
समप्रवृत्तिकःकदा सदाशिवं भजाम्यहम्।।१२।।
कदा-निलिम्प-निर्झरी-निकुञ्ज-कोटरे वसन्
विमुक्त-दुर्मतिः सदा शिरःस्थ-मञ्जलिं वहन् ।
विलोल लोल लोचनो ललाम भाललग्नकः
शिवेति मन्त्रमुच्चरन्कदा सुखी भवाम्यहम्।।१३।।

इमं हि नित्यमेव-मुक्त-मुत्तमोत्तमं स्तवं
पठन् स्मरन् ब्रुवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम् ।
हरे गुरौ सुभक्ति-माशु याति नान्यथा गतिं
विमोहनं हि देहिनां सुशङ्करस्य चिन्तनम्।।१४।।
पूजावसानसमये दशवक्त्रगीतं
यः शम्भुपूजन परं पठति प्रदोषे ।
तस्यस्थिरां रथगजेन्द्र-तुरङ्गयुक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।।१५।।

।। इति श्रीरावणकृतं शिवताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

श्रीकालभैरवाष्टकम्

देवराजसेव्यमानपावनाङ्घ्रिपङ्कजं, व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नरदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं, काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।१।।
भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं, नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
कालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं, काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।२।।
शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं, श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम्।
भीमविक्रमंप्रभुं विचित्रताण्डवप्रियं, काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।३।।
भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं, भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेमकिङ्किणीलसत्कटिं, काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।४।।
धर्मसेतुपालकं त्वधर्ममार्गनाशकं, कर्मपाशमोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्गमण्डलं, काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।५।।
रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं, नित्यमद्वितीयमिष्टदैवतं निरञ्जनम्।
मृत्युदर्पनाशनं करालदंष्ट्रमोक्षणं, काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।६।।
अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोशसन्ततिं, दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम्।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकन्धरं, काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।७।।
भूतसङ्घनायकं विशालकीर्तिदायकं काशिवासलोकपुण्यपापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्गकोविदं पुरातनं जगत्पतिं, काशिकापुराधिनाथकालभैरवं भजे।।८।।
कालभैरवाष्टकं पठन्ति ये मनोहरं, ज्ञानमुक्तिसाधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्।
शोकमोहदैन्यलोभकोपतापनाशनं, ते प्रयान्ति कालभैरवाङ्घ्रिसन्निधिं ध्रुवम्।।९।।

।। इति श्रीकालभैरवाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

बिल्वाष्टकम्

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्।
त्रिजन्मपाप संहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥१॥
त्रिशाखैर्बिल्वपत्रैश्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः।
शिवपूजां करिष्यामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥२॥
अखण्ड बिल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे।
शुद्धचन्ति सर्वपापेभ्यो बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥३॥
शालग्रामशिलामेकां विप्राणां जातु अर्पयेत्।
सोमयज्ञमहापुण्यं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥४॥
दन्तिकोटिसहस्राणि वाजपेयशतानि च।
कोटिकन्यामहादानं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥५॥
लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्।
बिल्ववृक्षं प्रयच्छामि बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥६॥
दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।
अघोर पापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥७॥
मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे।
अग्रतः शिवरूपाय बिल्वपत्रं शिवार्पणम् ॥८॥
बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकमवाप्नुयात् ॥९॥

।। इति बिल्वाष्टकं सम्पूर्णम् ।।

द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम्

सौराट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम् ।।१।।
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम् ।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ।।२।।
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यम्बकं गौतमी तटे ।
हिमालये तु केदारं घुष्मेशं च शिवालये ।।३।।
एतानिज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ।।४।।

।। इति द्वादशज्योतिर्लिङ्ग स्मरणम् सम्पूर्णम् ।।

दारिद्र्यहनशिवस्तोत्रम्

विश्वेश्वराय नरकार्णवतारणाय कर्णामृताय शशिशेखरधारणाय।।
कर्पूरकान्तिधवलाय जटाधराय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवायः।।१।।
गौरीप्रियाय रजनीशकलाधराय कालान्तकाय भुजगाधिपकङ्कणाय।।
गङ्गाधराय गजराजविमर्दनाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।२।।
भक्तिप्रियाय भवरोगभयापहाय उग्राय दुर्ग भवसागर तारणाय।।
ज्योतिर्मयाय गुणनामसुनृत्यकाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।३।।
चर्माम्बराय शवभस्मविलेपनाय भालेक्षणाय मणिकुण्डलमण्डिताय।।
मञ्जीरपाद युगलाय जटाधराय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।४।।
पञ्चाननाय फणिराज विभूषणाय हेमांशुकाय भुवनत्रयमण्डिताय।।
आनन्दभूमिवरदाय तमोमयाय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।५।।
भानुप्रियाय भवसागरतारणय कालान्तकाय कमलासनपूजिताय।
नेत्रत्रयाय शुभलक्षणलक्षिताय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।६।।
रामप्रियाय रघुनाथवरप्रदाय नागप्रियाय नरकार्णवतारणाय।।
पुण्येषु पुण्यभरिताय सुरार्चिताय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।७।।
मुक्तेश्वराय फलदाय गणेश्वराय गीतप्रियाय वृषभेश्वरवाहनाय।।
मातङ्गचर्मवसनाय महेश्वराय दारिद्र्यदुःखदहनाय नमः शिवाय।।८।।

वसिष्ठेन कृतं स्तोत्रं सर्वरोगनिवारणम्।।
सर्वसम्पत्करं शीघ्रं पुत्रपौत्रादिवर्धनम्।।
त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नित्यं स हि स्वर्गमवाप्नुयात्।।९।।

।। इति श्रीवशिष्ठविरचितं दारिद्र्यदहन-शिवस्तोत्रं सम्पूर्णम् ।।

शिव आराधनापद

शीश गङ्ग अर्धाङ्ग पार्वती, सदा विराजत कैलासी।
नन्दी भृङ्गी नृत्य करत हैं, धरत ध्यान सुर सुख राशी।।
शीतल मन्द सुगन्ध पवन बहे, जहँ बैठे हैं शिव अविनाशी।
करत गान गन्धर्व सप्तस्वर, राग रागिनी मधुराशी।।
यक्ष रक्ष भैरव जहँ डोलत, बोलत हैं वन के वासी।
कोयल शब्द सुनावत सुन्दर, भ्रमर करत हैं गुँजासी।।
कल्पद्रुम अरु पारिजात तरु, लाग रहे हैं लक्षासी।
कामधेनु कोटिन जहँ डोलत, करत दुग्ध की वर्षासी।।
सूर्यकान्त सम पर्वत सोभित, चन्द्रकान्त सम हिमरासी।
नित्य छहों ऋतु रहत सुशोभित, सेवत सदा प्रकृति वासी।।
ऋषिमुनि देव दनुज नित सेवत, करत गान श्रुति गुणरासी।
ब्रह्मा विष्णु निहारत निसदिन, कछु शिव हमको फरमासी।।
ऋद्धिसिद्धि के दाता शङ्कर, नित सत् चित् आनन्द रासी।
जिनके सुमिरन से कटजाती, कठिन काल यम की फाँसी।।
त्रिसूलधर जी को नाम निरन्तर, प्रेम सहित जो नर गासी।
दूर होय विपदा उस नर की, जन्म-जन्म शिवपद पासी।।
कैलासी काशी के वासी, अविनाशी मेरी सुधि लीजो।
सेवक जान सदा चरणन को, अपनो जान कृपा कीजो।।
आप तो प्रभु जी सदा दयामय, अवगुण मेरो सब ढकियो।
सब अपराध क्षमा कर शङ्कर, किङ्कर की बिनती सुनियो।।
अभय दान दीजै प्रभु हमको, सकल सृष्टि के हितकारी।
श्रीभोले बाबा भक्त निरञ्जन, भव भञ्जन भय सुख कारी।।
काल हरो हर कष्ट हरो हर, दुःखहरो दारिद्र्य हरो।
नमामि शङ्कर भजामि शम्भो, हरहर शङ्कर तव शरणम्।।
नमामिशङ्कर भजामि भोलेबाबा, हरहर शङ्कर तव शरणम्।

॥ ॐ तत् सत् श्रीसदाशिवार्पणमस्तु ॥

✡✡✡